प्रकाशक—
चौधरी एण्ड सन्स,
प्रकाशक तथा पुस्तक विक्रेता
बनारस सिटी।

मुद्रक—
महादेवप्रसाद,
अर्जुन प्रेस, कबीरचौरा, काशी।

प्रतापी आल्हा और ऊदल

चन्द्रवंश—करोड़ों वर्ष व्यतीत हुये। उस उज्ज्वल अतीत काल में जब कल्पारम्भ हो रहा था—ब्रह्मा मानसी-सृष्टि में लीन थे तथा वायु, सोम, सूर्यादि ऋषियों का वैदिक-तत्त्व-ज्ञान समुन्नति के उच्च शिखर पर आलोकित हो रहा था—इस पवित्र वंश का प्रवर्तक महा तेजस्वी चन्द्रमा* अपनी अपार सुन्दरता से लोक-लोकान्तरो तथा दिशाओं को प्रकाशित एवं मोहित कर रहा था।

---

* चन्द्रमा के द्वारा चन्द्रवंश की सृष्टि हुई।

—महर्षि व्यास।

उस पवित्र देवयुग (कृतयुग) का प्रथम चरण चंचल गति से चल पड़ा। महात्मा चन्द्रमा की अपार सुन्दरता ने देवताओं के गुरु महात्मा बृहस्पति की अद्वितीय सुन्दरी पत्नी को मोहित कर लिया। अन्त में महात्मा चन्द्रमा और सुन्दरी गुरु-पत्नी के संयोग से महा तेजस्वी बुध का आविर्भाव हुआ।

तेजस्वी बुध भी पिता के समान ही सुन्दर हुआ। यथा समय सूर्यवंशी महीप प्रतापी इक्ष्वाकु की त्रैलोक्य सुन्दरी बहन इला से सम्बन्ध हुआ। कुछ दिनों के बाद इला के गर्भ से एक परम तेजस्वी रूपवान बालक उत्पन्न हुआ। देवताओं ने उसका नाम पुरुरवा रक्खा।

पुरुरवा बड़ा तेजस्वी, प्रतापी तथा ऐश्वर्य्यवान हुआ। इसने अपने बल विक्रम से सम्पूर्ण पृथ्वी को आधीन कर प्रतिष्ठान* नगरी को राजधानी बनाई। उस समय समस्त भुवनों एवं लोकों की सारी सम्पत्ति प्रतिष्ठान† नगरी की समानता नहीं कर सकती थी। निःसन्देह पुरुरवा के शासन काल मे राजधानी अलका और अमरा से कम न थी।

धीरे २ वर्षों बीत गये। पुरुरवा की अपार सुन्दरता देख

---

* वर्तमान इलाहाबाद। पूर्वकाल में वही चन्द्रवंश की राजधानी थी।
—राय होल।

† पूर्वकाल में चन्द्रवंशी क्षत्रियों की राजधानी प्रतिष्ठान नगरी थी।
—राय भूषण।

देवताओं की भुवन मोहिनी अप्सरा उर्वशी आसक्त हो गई। महात्मा पुरुरवा ने उस अनिंद्य सुन्दरी को अपना लिया। दोनों पति-पत्नी रूप से रहने लगे। कुछ काल के पश्चात् उर्वशी के गर्भ से आयु, सत्यायु, रंभ, विजय और जय नामक पाँच पराक्रमी पुत्र उत्पन्न हुये। इन्हीं महाबली पुत्रों के द्वारा विश्व में चन्द्रवश की वृद्धि हुई।

प्रिय पाठकों! आज लाखों की संख्या में चन्द्रवंशी क्षत्रिय कहलाने वाले इन्हीं पुरुरवा* के वंशज हैं। हमारा इतिहास इसी पवित्र वश से सम्बन्ध रखता है। चन्द्रवंश से ही चन्देलों की उत्पत्ति हुई है।

—*—

* महाराज पुरुरवा का ज्येष्ठ कुमार आयु सिंहासन पर बैठा। स्वर्भानु की कन्या प्रभा इनकी रानी थीं। आयु के बाद उनके पुत्र नहुष राजगद्दी पर बैठे। इन्होंने चन्द्रवश का खूब विस्तार किया। इनके दो पुत्र थे, ज्येष्ठ कुमार यति हो गये। बड़े भाई के विरागी हो जाने पर ययाति को राज्यभार अपने हाथ में लेना पड़ा। ययाति के पाँच पुत्र हुये—
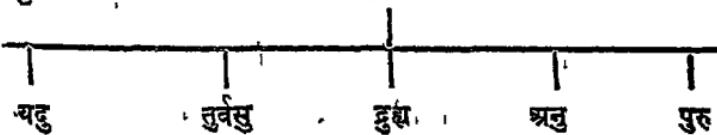
—महाभारत।

चन्देलों की उत्पत्ति—महाबली क्षत्रियों में चन्द्रवंश बड़ा पवित्र वंश माना गया है। महापुनीत सूर्यवंश ने शुद्ध हृदय से इसकी प्रतिष्ठा की है। इस पवित्र वंश में बड़े-बड़े महावीर और महात्मा उत्पन्न हुये। एक से एक बढ़कर महर्षियों के तुल्य कठिन तपस्या करने वाले राजर्षि जन्म धारण किये तथा एक नहीं लाखों शूर-वीर प्रगट हो अपने बल-विक्रम से वसुन्धरा को वशीभूत कर एक छत्र शासन किया।

चन्द्रमा के वंशजों ने अपनी अनन्त महिमा बढ़ाई। आगे चलकर इसी पवित्र वंश में—नहुष, ययाति, सुधन्वा, भरत, सार्वभौम, महाभौम अंधकभोज, वृष्णि, कृष्ण, भीमार्जुनादि बड़े २ वीर और मतिधीर उत्पन्न हुये। इसी कुल में उत्पन्न प्रतापी भरत के नाम से इस आर्यावर्त का नाम भारतवर्ष पड़ा। निःसन्देह जबतक सूर्य और चन्द्रमा लोक-लोकान्तरों को अलोकित करते रहेंगे—प्रतापी भरत का नाम स्वर्णाक्षरों में चमकता रहेगा तथा लोग इस पवित्र वंश की कीर्ति गाते रहेंगे।

राजा ययाति से यह वंश पाँच भागों में विभक्त हो गया। १ यदु वंश, २ तुर्वसु वंश, ३ भोज वंश, ४ अनुवंश, और ५ पुरुवंश। इनमें दो वंश अधिक प्रसिद्ध हुआ, यदुवंश और पुरुवंश। यदुवंश में महात्मा श्री कृष्ण ने जन्म धारण किया और पुरुवंश में कौरव पाण्डवों का आविर्भाव हुआ। तीन युगों तक इस वंश ने अपूर्व गौरव बढ़ाया। सुदूर पूर्वकाल में जब द्वापर का चतुर्थ चरण बीत चुका था—वीर भोग्या वसुन्धरा पंड-उर्वि

हो चुकी थी, बलवान भारत बलहीन तथा निर्वीर्य्य हो रहा था—चन्द्रवंश का तेज क्रमशः घटने लगा। जिस भयंकर द्वेपाग्नि से सारा विश्व महाभारत के भयंकर संग्राम में धाँय-धाँय करते हुये भस्मीभूत हो चुका था उसे न छोड़ सका।

हज़ारो वर्ष बीत गये—जब नवमी* शताब्दि का अन्त हो रहा था, सर्वत्र शक्ति का साम्राज्य तथा पशुबल ही सत्ता का कारण था—उस शक्ति के विशाल-साम्राज्य में जब धर्म रक्षा के लिये कुमारिल ने अपने को उत्सर्ग कर दिया था—शंकर का दिग्विजय दिशाओं को कम्पायमान कर चुका था तथा जिस समय राजस्थान में सूर्य-वंशीय वीर गुहिलौतो की विजय-ध्वजा फहरा रही थी—मध्य भारत में चन्देलों का प्रादुर्भाव हुआ।

---

* चन्देल राजपूत नवमी शताब्दि में बड़े शक्तिमान थे। इनका राज्य उस देश में था जिसे आजकल बुन्देलखंड कहते हैं, चदेरी इनकी राजधानी थी। राजा धग के समय चन्देल राज्य का विस्तार अधिक हो गया। उसने कन्नौज के परिहार राजा को लड़ाई में हराया और उत्तर में यमुना नदी तक अपना राज्य बढ़ा लिया।

धग का बेटा गंडा भी बड़ा प्रतापी था। जब कन्नौज के राजा राज्यपाल ने १०१८ ई० में महमूदगज़नी की अधीनता स्वीकार की, तब गंडा ने अन्य राजपूतों को भड़काया। सब ने मिलकर राज्यपाल पर चढ़ाई की और उसे मार डाला। इसी वंश में राजा परमाल हुआ।

—*History of India.*

चन्देल राजपूत जिन्होंने बुन्देलखंड में अपना राज्य स्थापित किया

चन्देलों का पूर्व पुरुष चन्द्रवंशी महीपचन्द्र वर्मा था। इतिहासकारों ने चन्द्रवर्मा के वंशजों को चन्देल क्षत्रिय कहा है।

महीप चन्द्र, वीर और साहसी योद्धा था। उसने अपने बाहुबल से बघेलखंड के अनेक राजाओं पर विजय प्राप्त कर चन्देल राज्य स्थापित किया। भारत के कोने-कोने में उसकी वीरता की धाक जम गई। बड़े-बड़े शूर सामन्त उसकी वीरता पर मुग्ध हो अनुचर बन गये—उसकी आज्ञा पर प्राणोत्सर्ग करने के लिये कटिबद्ध रहने लगे।

चन्द्रवर्मा प्रजा-पालक नरेश था। उसने प्रजा की रक्षा के लिये अनेक यज्ञ किये, स्थान २ पर धर्मशालायें बनवाईं तथा सहस्रों सदाव्रत खोले। आक्रमणकारियो से रक्षा के लिये कालिंजर का सुदृढ़ दुर्ग बनवाया और सर्वत्र वीर सैनिको का प्रबन्ध किया।

था—पूर्व में परिहारों के अधीन थे। एक समय परिहार राजे सारे भारत पर शासन करते थे। हिमालय से दक्षिण तक का सारा देश भोज परिहार के अधीन था।

क्षत्रियों के युग में राजा भोज का नाम बहुत प्रसिद्ध है—उसके मरने के बाद परिहारों का बल टूट गया, वे दिन-दिन निर्बल होने लगे। इसी बीच में चन्देलों और राठौरों ने सिर उठा लिया। इन दोनों के उठते ही अधीन राजे उठ खड़े हुये और विद्रोह करके स्वतंत्र बन बैठे। —आल्हा विरदावली।

प्राचीन पुरुषे—चन्देलों के आदि पुरुष चन्द्रवर्मा थे। उनके पूर्व पुरुषे मध्यभारत, वघेलखंड और बुन्देलखंड में रहते थे। उनका रहन-सहन, आचार-विचार तथा अहार-विहार वीर गुहिलौतों से मिलता-जुलता था। शकर दिग्विजय होने के पूर्व वे शक्तिवाद के पुजारी थे, बौद्धों का साम्राज्य रहने पर भी शक्ति की उपासना करते और वीर क्षात्र-धर्म के अनुसार जीवन निर्वाह करते थे।

चन्देलो के प्राचीन पुरुषे सैनिक जीवन व्यतीत करते थे। वर्णाश्रम-सत्कर्म ही उनका मुख्य धर्म था। वे शत्रुओं की वीरता की प्रशंसा करते थे, विपत्तियों से उन्हें बचाते थे तथा आवश्यकता पड़ने पर उनके लिये अपना रक्त भी वहा देने में संकोच नहीं करते थे। वीर चन्देल अपने शरणागतों की रक्षा के लिये अपने को उत्सर्ग कर देना परम धर्म समझते थे। राजपूत* राजा धर्म का पालन करते थे।

वे वर्णाश्रम के कट्टर पक्षपाती थे, बालविवाह का प्रचार

---

* राजपूत काल में भारत में अनेक छोटे राज्य थे। राष्ट्रीय संगठन नहीं था, राजपूत राजे धर्म का पालन करते थे। ग्रामों का प्रबन्ध पंचायतों द्वारा होता था, धर्म तथा जाति के दबाव के कारण स्वेच्छाचारी नहीं होने पाते थे, लोकमत का आदर किया जाता था। कर अधिक नहीं लिये जाते थे।

—*History of Rajasthan.*

नहीं था। पूर्ण ब्रह्मचर्य समाप्त होने पर वे गृहस्थाश्रम में प्रवेश करते थे। बालक जबतक वीर सैनिक न हो जाय, अपने बल से शत्रुओं के गर्व को चूर न कर दे—अपनी योग्यता का पूर्ण परिचय न दे-दे, तब तक उसका गृहस्थाश्रम-प्रवेश अत्यन्त दुष्कर था।

ब्रह्मचर्य की सेवा से वे बलवीर और मतिधीर होते थे, उसी के बल से उन वीरों ने पृथ्वी को वशीभूत किया था तथा लोक-लोकान्तरों—दिशाओं एवं विदिशाओं को कम्पित किया था। वही ब्रह्मचर्य की शक्ति थी जिसे सुनकर आज इस बीसवीं शताब्दि के ब्रह्मचर्य-भ्रष्ट लाखों दुराचारी नराधम असंभव मान रहे हैं।

ब्रह्मचर्य पूर्ण होने पर गृहस्थाश्रम भी बड़ा सुन्दर था। ब्रह्मचर्य-धारिणी बालायें बलवान पुत्रो को प्रसव करती थीं। रोग और दोष नही थे, आधुनिक भारत के समान बालकों एवं स्त्रियो की मृत्यु संख्या नहीं थी। लोग पराक्रमी जितेन्द्रिय तथा दृढ़-प्रतिज्ञ होते थे। सभी अपने वचन के धनी थे और धर्म-रक्षा के प्रेमी थे। पुरुष देव तुल्य थे और स्त्रियाँ देवियाँ थीं। उस समय की सामाजिक * दशा अच्छी थी।

---

* राजपूत राजे शासन प्रबन्ध में कुशल थे। परन्तु आपस की फूट से शासन संगठन पूर्ण नहीं कर सके। उनका अधिकांश समय लड़ाई-झगड़ों में व्यतीत होता था। युद्ध के लिये वे सदैव तैयार रहते थे, युद्ध

उन वीर सैनिकों में छल-कपट नहीं था। उनका हृदय शुद्ध और पवित्र था, वे दुराचार और दुर्व्यसनों से दूर थे। पुरुष पत्नीव्रतधारी थे और स्त्रियाँ पतिव्रता थीं। बालक मातृ-पितृ भक्त तथा सेवक सच्चे स्वामि-भक्त थे। उनकी सभ्यता उच्च कोटि की थी, वे कला-कौशलो के जानकार तथा प्रत्येक विद्याओं के ज्ञाता थे। नवयुवक देश और धर्म के लिये उत्सर्ग होने वाले तथा देवियाँ * सती धर्म पालन करने वाली थीं।

—:—

के समय किसानों को किसी प्रकार को हानि नहीं पहुँचाई जाती थी और प्रजा को कष्ट नहीं दिया जाता था। विश्वासघात करना पाप समझते थे, राजपूत अपनी बात के पक्के होते थे। शत्रु के साथ भी उदारता का बर्ताव रखते थे।

वीर राजपूत सत्य का पालन करते थे। वे दीन-दुखियों की सहायता के लिये सदैव कटिबद्ध रहते थे।

—भारत का इतिहास।

* राजपूत समाज में स्त्रियों का आदर था। वे भी शूर वीरता में पुरुषों से कम न थीं, उनका पतिव्रत धर्म, वीरता तथा साहस भारतीय इतिहास में प्रसिद्ध है। लड़ाई के समय अपने सतीत्व की रक्षा के लिये अग्नि में जलकर भस्म हो जाती थीं।

—*History of Rajasthan.*

चन्द्र के वंशधर—पराक्रमी महाबली चन्द्र* ने अपनी अपूर्व वीरता दिखलाई। इसके वीरता की धाक से सारा भारत दहल उठा। चन्द्रवंश प्रवर्त्तक चन्द्रमा के समान इसने लोगों को मोहित कर लिया। समकालीन वीर गुहिलौतों (सूर्यवंशियो) ने सन्धि कर ली। हिमालय से कुमारी तक एकबार विजय-दुन्दुभी बज उठी।

दिग्विजय के उपलक्ष में महाराज चन्द्रवर्मा ने एक महायज्ञ किया। बड़े-बड़े ऋत्विज ब्राह्मण एकत्र हुये और देश-देशान्तरो के राजे आये। यथा समय ऋत्विजो ने चन्द्रवर्मा को दीक्षित किया। सुन्दर सज्जित यज्ञ-मंडप में अग्नि प्रतिष्ठापन कर सुगन्धित द्रव्यों की आहुति दी गई। हजारों वर्ष बाद पुनः इस महायज्ञ से दिशायें और विदिशायें सौम्य हो उठीं। महाराज चन्द्र के यज्ञ में बड़ा महोत्सव हुआ।

आर्य्यकाल में स्त्रियों की बड़ी उन्नति थी। सभी उत्तम गुणों वाली थीं, वे प्राणों से बढ़कर सतीत्व का मूल्य समझतीं थीं, बहुधा देखा जाता है कि उस काल की वीर बालायें-सहस्रों की संख्या में आत्मोत्सर्ग कर चुकी हैं।

—लेखक।

* *Founder of Chandel Rajya. In the history of Bundelkhand chanderi is the oldest.*

—*History of Bundelkhand.*

इसी समय महीप चन्द्र ने महोत्सव* नामक नगरी की स्थापना की। कालिंजर का सुदृढ़ दुर्ग बनवाया तथा चन्देरी का जीर्णोद्धार करवाया। इस प्रकार सर्वत्र सुधार कर कालिंजर को राजधानी नियत किया।

चन्द्रवर्मा ने अपने शासन काल में अनेक यज्ञ किये। प्रजा को सन्तुष्ट रक्खा, कला-कौशलो की उन्नति की तथा विद्या का प्रचार कराया। बड़े-बड़े राजभवन बनवाये तथा धर्म-स्थानो का जीर्णोद्धार कराया। आज भी बुंदेल और बघेलखंड में उनकी कीर्तियाँ चमक रही है।

चन्द्रवर्मा† का पुत्र वीरवर्मा भी बड़ा ही यशस्वी राजा हुआ, वीर पुत्र ने अपनी योग्यता से यावज्जीवन पिता के विशाल राज्य की रक्षा की। वीर वर्मा का पुत्र वज्र वर्मा हुआ। इसके शासन काल मे चन्देलों का उन्नत-सूर्य रुक गया।

---

* वर्तमान महोवा। यह हमीरपुर जिले में स्थित है। अब भी वहाँ अतीतकाल के स्मारक विद्यमान हैं।

—लेखक।

† चन्द्रवर्मा का पुत्र वीर वर्मा, वीरवर्मा का पुत्र वज्रवर्मा। वज्र-वर्मा का वंदनवर्मा, वंदनवर्मा का जगवर्मा, जगवर्मा का सत्य वर्मा, सत्यवर्मा का सूर्य वर्मा, सूर्य वर्मा का मदन वर्मा, मदनवर्मा का कीर्ति-वर्मा और कीर्तिवर्मा का पुत्र परमर्दि देव [परमाल] हुआ।

—राय होल।

धीरे २ तीन पीढ़ी तक गिरता ही रहा—अन्त में सूर्य वर्मा के उत्पन्न होने पर गिरता हुआ उन्नत सूर्य रुक गया। पश्चात् मदन वर्मा और कीर्ति वर्मा ने पुनः चन्देलों के डूबते हुये सूर्य को प्रकाशित किया। महाराज चन्द्र के दसवीं पीढ़ी मे परिमर्दि-देव* का आविर्भाव हुआ।

—※—

---

* परिमर्दि देव ऐतिहासिक राजा था। उसके कई ताम्रपत्र कलकत्ते के म्युज़ियम में रक्खे हुये हैं।

—लेखक।

परिमर्दि देव परमाल का नाम था। वह सन् १०६५ ई० में जसिंहासन पर बैठा। माहिल उसका मन्त्री था। वह स्वयं कान का कच्चा था। महोवा उसकी पुरानी राजधानी नहीं थी—महोवा परिहारों के अधिकार में था। मालवन्त परिहार महोवा का शासक था, उसे लोग वासुदेव भी कहते थे। परमाल ने वासुदेव परिहार को हटाकर महोवा पर कब्जा किया था। उसने सन् १२०२ तक राज्य किया।

—राय भीखा

शक्ति के युग में—भारत की दशवीं ग्यारहवीं शताब्दि—शक्ति* का युग था। उस युग मे—जिसकी लाठी उसकी भैंस वाली—कहानी चरितार्थ हो रही थी। सर्वत्र शक्ति की प्रतिष्ठा थी।

भारत छोटे २ राज्यों मे विभक्त था, उस युग में कोई सार्वभौम सम्राट नहीं था, सभी परस्पर एक दूसरे से लड़ा-भिड़ा करते थे। जिसकी शक्ति अधिक रहती थी वही राजा वन वैठता था, वास्तव मे भारत के लिये वह भयंकर काल था।

इसी संकटापन्न स्थिति मे विदेशियों† का आक्रमण आरम्भ

---

* शक्ति का युग बड़ा भयकर था। मनुष्य निर्दय थे। जिसके पास बल था देश उसी का था। नित्य जनसहार हुआ करता था।

—लेखक।

† कुशान वशीय राजाओं के शक्तिहीन होने पर अफगानिस्तान पर यवनों ने आधिपत्य जमा लिया। दशवीं शताब्दि में अल्नाप्तगीन ने एक राज्य स्थापित्त किया। ९७७ ई० मे सुबुक्तगीन ने भारत पर आक्रमण किया। ९९७ ई० में वह मर गया। उसी वर्ष महमूद का आक्रमण हुआ। २६ वर्ष के भीतर उसने १६ वार आक्रमण किया। वह हिन्दुओं के मन्दिरों को तोड़कर खूब धन लूट ले गया। १०१८ में कन्नौज पर आक्रमण किया। १०२० ई० मे पंजाव को लूटा और १०२३ ई० में कालिंजर के चन्देल राजा को परास्त किया। १०२५ ई० में सोमनाथ मन्दिर पर उसका आक्रमण हुआ।

—*History of India*

हुआ। जिन आक्रमणों एवं अत्याचारों को सिसौदिया वीर बप्पारावल ने रोक दिया था—पुनः होने लगे । बार २ शक, हूण और यवन अपनी २ सेना लेकर आक्रमण करने लगे।

इस युग* मे दस्युओं और म्लेच्छो ने बड़ा उपद्रव मचाया। उनके अत्याचार से पश्चिमोत्तर भारत भयभीत हो उठा। विदेशियों के देखादेखी मेर और अन्य पहाड़ी जातियाँ भी चारों ओर लूट-पाट मचाने लगीं। धीरे २ सम्पूर्ण भारत मे अराजकता फल गई। सर्वत्र अत्याचार का विषम तांडव होने लगा। देश का कोना २ दहल उठा। वीर क्षत्रिय जाति ने इस विषमता को मिटाना चाहा, परन्तु परस्पर के द्वेष से असफल हो रहे। स्थिति दिन २ बिगड़ती ही गई।

—०—

---

* इस युग में दस्युओं और म्लेच्छों ने बड़ा उपद्रव मचाया। वे एकाएक रात मे छापा मारते, घरों में आग लगा देते, बालकों और स्त्रियों को मार डालते, और जो कुछ पाते थे लूट लेते थे। वे म्लेच्छ बड़े निर्दयी और अपने धर्म के बड़े कट्टर थे। भारत की प्राचीन पुस्तकों को जला देते थे। मन्दिरों को तोड़ देते तथा स्त्रियों का अमूल्य धन सतीत्व-लूट लेते थे। उन विदेशियों ने बड़ा अत्याचार किया। सारा भारत काँप उठा। वह शक्ति का युग साक्षात् भारत का खण्ड-प्रलय काल था।

—भारतवर्ष का इतिहास।

विशाल राज्य-स्थापन—महाराज चन्द्रवर्मा का वर्णन पूर्व ही आ चुका है। उन्होंने अपने बाहु-बल से चन्देल राज्य की स्थापना की थी। उनके प्रधान सहायक वीर चिन्तामणि थे। दोनो की आत्मा एक थी, परस्पर अभिन्न-हृदय मित्र थे। इन्हीं दो महान आत्माओं ने मिलकर उस शक्ति के युग में विशाल राज्य स्थापन किया था।

चन्द्रवर्मा के बाद वीरवर्मा राज्य का अधिकारी हुआ। उसने बड़ी योग्यता से बहुत वर्षों तक शासन किया। उस समय चन्देरी की बड़ी उन्नति हुई। नगरी सुन्दर अट्टालिकाओं तथा राजभवनों से पूर्ण हो गई। कला-कौशलों का प्रचार होने लगा तथा व्यापार की वृद्धि हो गई। सर्वत्र सुख-शान्ति का साम्राज्य फैल गया।

इसप्रकार क्रमशः वज्रवर्मा, नन्दनवर्मा, जगवर्मा, सत्यवर्मा और सूर्यवर्मा चन्देरी के राजसिंहासन पर बैठे। सूर्यवर्मा ने बड़ी उन्नति की। प्रजा का पुत्र के समान पालन किया तथा उनके सुख के लिये आवश्यक व्यवस्था की। सूर्यवर्मा का पुत्र मदन वर्मा हुआ जिसने मदन ताल बनवाया, जो अब तक उसी नाम से प्रसिद्ध है।

मदनवर्मा का पुत्र कीर्तिवर्मा हुआ जिसने अपने नाम से एक सरोवर बनवाया, जिसे लोग अबतक कीर्ति सागर के नाम से पुकारते है।

कीर्तिवर्मा का पुत्र परिमर्दि देव वर्मा* था। पिता की मृत्यु के समय उसकी अवस्था छोटी थी। महावीर कीर्तिवर्मा के राज्य के उत्तराधिकारी को निर्बल जान आसपास के अधीन राजाओं ने अपना २ सिर उठाया और स्वतंत्र हो गये। केवल चन्देरी ही चन्देलो के अधिकार मे रह गई।

धीरे २ परिमर्दि देव बड़ा हुआ, अपने राजा को वयस्क देख चन्देलों के शूर सामन्त एकत्र हुये और शत्रुओं से अपना राज्य लौटाने का उद्योग करने लगे। परमाल सन् ११६५ ई० में राज-सिंहासन पर बैठा।

वह एक बलिष्ठ और शूरवीर योद्धा था, अपनी युवावस्था में उसने सैकड़ों अभिमानी नरेशो तथा गर्विष्ट शूरो के गर्व को चूर २ कर दिया। उसकी धाक मध्यभारत में ही नही वरन देश के कोने २ में फैल गयी। दशो दिशाओं से चन्देलों के कीर्ति की दुन्दुभी बजने लगी।

कीर्तिवर्मा के मरते ही महोबा का शासक मालवन्त † स्वतंत्र हो गया था। उसे दो‡ पुत्र और पाँच + पुत्रियाँ थी। उस

---

* परिमर्दि देव का दूसरा नाम परमाल था। परमाल का चन्द्र-ब्रह्म के दसवीं पीढ़ी मे आविर्भाव हुआ। यह ऐतिहासिक राजा था।

—*History of India,*

† मालवन्त का दूसरा नाम वासुदेव था। मालवन्त परिहार क्षत्री था।

‡ माहिल और भूपति।

+ मल्हना, कमला, अगमा, देवल और तिलका।

समय मालवन्त की अद्वितीय सुन्दरी कन्या मल्हना के सुन्दरता की कीर्ति चारो दिशाओं मे फैल रही थी। वास्तव में वह अनिंद्य सुन्दरी थी—कवियों ने उसकी सुन्दरता का वर्णन पद्मिनी के समान की है।

परिमर्दिदेव ऐसे अवसरको कब हाथ से जाने दे सकता था? वह तत्काल ही पद्मिनी के समान सर्वाङ्ग सुन्दरी मल्हना के लिये महोवे पर चढ़ गया। यद्यपि मालवन्त के सैनिकों ने बड़ी वीरता से चन्देलो का सामना किया—परन्तु सफल न हो सके। मेघ के सन्मुख समुन्द्र की तरंगे क्या कर सकती थीं? विवश हो मालवन्त ने मल्हना का विवाह परमाल से कर दिया। मल्हना चन्देरी मे नही रहना चाहती थी; अतः उसकी प्रसन्नता के लिये वीर परिमर्दिदेव ने महोवे को ही अपनी राजधानी बनायी और अपने श्वसुर को उरई* में बसने की आज्ञा दी—

—*—

* उरई—महोवा के उत्तर पश्चिम दिशा में ३० कोस की दूरी पर है। अब भी यह जालौन जिला का प्रधान नगर है।

अतीत भाङ्कण—उस अतीत काल मे—भारत में भिन्न २ अनेक शक्तियाँ काम कर रही थीं। एक ओर मध्य भारत मे जहाँ चन्देलो का चन्द्र चमक रहा था—दूसरी ओर वहीं राजस्थान मे सिसौदियो का सूर्य तप रहा था। इतनाही नहीं उत्तर मे यदि चौहानो की कीर्तिध्वजा फहरा रही थी, तो पूर्व भारत मे राठौरो की तूती बोल रही थी। भारत *भिन्न २ राज्यो मे बटा था।

यह राजपूतो के उत्थान का समय था। परन्तु सुमति नहीं थी, लोग आपस मे ही लड़ा-भिड़ा करते थे। प्रत्येक सर्दार अपने को राजा समझता था।

उस युग में क्षत्रियजाति आधीन रहना पाप समझती थी। वे अपने शत्रुओं से बदला लेना जानते थे। वीरता प्रदर्शन ही

---

* कन्नौज में गहरवार, दिल्ली मे तोमर, अजमेर मे चौहान, बङ्गाल-विहार में पाल तथा सेनवंश, मेवाड़ मे गुहिलौत, गुजरात में बघेल, राहिरगढ के चालुक्य, झालौर के सोनगरा, पाटन के चावड़ा सिरोही के देवरा, जूनागढ के यादव, सीकरी के सिकरवार, अमरगढ के जेतवा, असीर के टांक, गागरौन के खीची, पाटली के झाला, नरवर के कछवाहा और कालिंजर मे चन्देल थे।

—*History of Rajasthan.*

† "राजपूतों को अपनी अगली वीरता पर अभिमान होना ठीक है, क्योंकि संसार के किसी देश के इतिहास में ऐसी वीरता और अभिमान के योग्य चरित्र नहीं मिलता, जैसे इन वीरों के कार्यों मे पाये

उनका ध्येय था। अपने मान की रक्षा के लिये प्राणों को उत्सर्ग कर देना उत्तम समझते थे। वीर धर्म ही सर्वस्व था, उस धर्म की रक्षा के लिये ही नित्य भीषण अनर्थ हुआ करता था तथा भयंकर जन-संहार होता था।

पाठको! प्रतापी अल्हा उदल इसी युग मे हुये थे। उन* वीरों ने अपनी शक्तियो को देश-बन्धुओं के ही नाश में लगा दिया। यदि उस समय भारत की सभी शक्तियां एकत्र हो शत्रुओं का सामना करतीं तो यवन किस खेत की मूली थे? सारा विश्व कांप उठता—इनका ही नहीं, उन महावीरों के सम्मुख देवताओं को भी नतमस्तक होना पड़ता।

तुम्हारा वह अतीत प्रांगण रुखड़ा था। उस भारतरूपी विशाल सिन्धु मे वीरता की बड़ी २ आँधियाँ चल रही थीं, समुद्र रौद्ररूप धारण कर हिलोरें मार रहा था। उसकी उत्ताल तरंगें दिशाओं को कम्पित कर रही थीं, तथा वह स्वयं अपने निर्घोष से आकाश को रवपूर्ण कर रहा था।

जाते हैं। जो कि इन्होंने अपने देश, प्रतिष्ठा और धार्मिक स्वतंत्रता के लिये किया।"

—कर्नल वाटलर।

* वीर चन्देलों ने अपनी शक्तियों को देश में ही खो दिया। यदि वे चाहते तो ससार को जीत लेते।

—राय भूषण।

वीर-चिन्तामणि—महाराज चन्द्रवर्मा के स्वर्गवास होने पर—महावीर चिन्तामणि अधीर हो उठे। मित्रवियोग की अपार चिन्ता ने उन्हें किंकर्त्तव्य विमूढ़ बना दिया। उन्हें राज्य-भोग से घृणा हो गई। वे एकाएक सुख-ऐश्वर्य से विरक्त हो बन में जा निकले। धीरे २ उन्होंने अपने को तपस्या मे लगा दिया।

महाराज चिन्तामणि* का पुत्र शशिपाल भी पिता के समान ही शूरवीर और पराक्रमी हुआ। उसने वीरवर्मा की बड़ी सहायता की। वीरवर्मा के शासनकाल मे शशिपाल ही प्रधान सेनापति और मंत्री था। शशिपाल के पश्चात् उसका पुत्र कृपाचन्द्र चन्देल राज्य का मंत्री और सेनापति हुआ।

कृपाचन्द्र का पुत्र मकरन्द पिता के समान शूरवीर नहीं हुआ, तथापि उसने बड़ी बुद्धिमानी से वन्दन वर्मा के राज्य को सम्हाला। मकरन्द का प्रतापी पुत्र अक्रूर जगवर्मा

---

* चिन्तामणि तोमरवंशी था। महाराज चन्द्रब्रह्म [चन्द्रवर्मा] ने उसे अपना मंत्री बनाया। उसका पुत्र शशिपाल हुआ, शशिपाल का पुत्र कृपाचन्द्र, कृपाचन्द्र का पुत्र मकरन्द, मकरन्द का पुत्र अक्रूर, अक्रूर का पुत्र टोडर, टोडर का पुत्र रहिमल और रहिमल का पुत्र सोरठ हुआ। इसी सोरठ से दच्छराज और वच्छराज हुये।

—चन्द्रावली।

By

—महाकवि रायभूषण।

प्रधान मंत्री हुआ। बुद्धिमान अक्रूर के मरने पर उसका वीर पुत्र टोडर पिता के स्थान का अधिकारी हुआ। टोडर का पुत्र रहिमल बड़ा शूरवीर योद्धा था।

रहिमल की वीरता प्रसिद्ध थी। उस समय सम्पूर्ण मध्य भारत मे उसकी धाक जमी थी, लोग उसे क्षत्रियों का सर्दार कहते थे। उसका पुत्र सोरठ भी बड़ा प्रतापी और शूरवीर हुआ।

महाबली सोरठ ने बहुत दिनों तक सुख-भोग किया। अचानक एक दिन उसे संसार से घृणा हो गई। वह अपने दो छोटे २ बच्चों को ले महर्षि गोरख के आश्रम मे जा पहुँचा। महर्षि गोरख ने सोरठ का शुद्ध अन्तःकरण और दिव्य दृढ़-संकल्प देख अपने आश्रम मे रख लिया।

महावीर सोरठ महात्मा हो गया। महात्मा गोरख की शिक्षा ने उसे पूर्ण योगी बना दिया। धीरे २ उसने अपनी इन्द्रियों को अधिकार में कर लिया। काम क्रोधादि शत्रुओं को मार भगाया तथा मन को वशीभूत कर जीवात्मा को जान लिया। इसप्रकार कुछ दिनो के बाद—अपने दोनो पुत्रो को उसी आश्रम में छोड़ योग-समाधि में लीन हो इस नश्वर लोक को त्याग दिया।

सोरठ के स्वर्ग गमन से तपोवन में शोक छा गया। पिता के निर्जीव शरीर को देख दोनों बच्चे विकल हो रोने लगे। बालकों को शोक-विह्वल देख आश्रम-वासी भी अधीर हो उठे। यह अपार करुण दृश्य देख महात्मा गोरख का हृदय द्रवित

हो गया। उन्होंने स्वयं इनके पालन पोषण का भार उठा लिया। बड़े बालक का नाम दच्छराजऔर छोटे का बच्छराज रक्खा।

दोनों बालक* ऋषि कुमारों के समान तपोवनमे रहने लगे। महर्षि ने स्वयं उन्हें क्षत्रियोचित शिक्षायें दीं, वे कुछ ही दिनों मे अस्त्र शस्त्र चलाने वाले तथा शूरवीर हो गये।

—:*:—

---

* सोरठ सुतों का तपोवन में पालन हुआ। पश्चात् परिमर्दिदेव ने उनका पालन किया। दोनों बड़े वीर और पराक्रमी हुये। रहिमल टोडर और मीरा ताल्हन इनके मित्र थे। इन पाँचो वीरो ने दिशाओं को परवस वशीभूत किया था।

—विभूति विरदावली

By

राय माणिक।

दच्छराज और बच्छराज वन में रहते थे। महात्मा गोरख ने इनका पालन पोषण किया था। इनके पूर्वज चिन्तामणि के वंशज थे। एकबार आखेट करते समय ये दोनों बालक परमाल को मिले—उन्होंने अपनी राजधानी में लाकर पालन पोषण किया।

—भीखादेव।

बनाफर तोमर वंशी थे। महात्मा सोरठ ने तपस्या भग होने के भय से दोनों बालकों को महर्षि गोरख के तपोवन में छोड़ दिया था। सोरठ के स्वर्गवासी होने पर दोनों बालक गोरख जी के आश्रम में पाले गये। कुछ दिनों के बाद परिमर्दिदेव ने अपने यहाँ ले जाकर रक्खा।

—रायभूषण।

वनाफर-वंश—प्रिय पाठकों ! आप लोग महावीर चिंतामणि को भूले न होंगे। वे तोमरवंशी क्षत्रिय थे। उन्हीं को आठवीं पीढ़ीमें महात्मा सोरठ का आविर्भाव हुआ था। महात्मा सोरठ के त्याग की कथा पूर्वही आ चुकी है। उन्होंने अपने को बनवासी वना लिया था। वे जंगल मे रहते थे और फल फूलों तथा कंद-मूलों को खाकर जीते थे।

दच्छराज और वच्छराज इन्हीं महात्मा सोरठ के पुत्र थे। वन मे रहने के कारण उन्हें लोग वनाफर* कहने लगे। तोमर-वंशीय इन्हीं दोनों वालकों के द्वारा वनाफर† वंश की उत्पत्ति हुई।

लोग वनाफर वंश को नीच समझते हैं परन्तु नहीं—वनाफर वंश शुद्ध क्षत्रिय वंश है। तोमर‡ वंशीय वीर चिंतामणि को

---

* वनाफरों के सम्बन्ध में अनेक प्रकार की किंवदन्ती कथायें सुनी जाती हैं। कोई २ कहते हैं कि दोनों वालक अहिरिन के पेट से उत्पन्न हुये थे। परन्तु नहीं, यह सब भ्रम है। वनाफर वंश के क्षत्रिय अब भी बुन्देलखण्ड और बघेलखण्ड में पाये जाते हैं।

—राय देव।

† वनाफर का अर्थ वनफल होता है।

‡ चिन्तामणि के नवमी पीढ़ी में दच्छराज और वच्छराज हुये, जिनसे वनाफर वंश चला। वनाफरों की वीरता प्रसिद्ध थी। इस वंश ने अपनी वीरता से वसुन्धरा को वशीभूत किया था।

—राय देव।

नवमी पीढ़ी में दच्छराज और बच्छराज का आविर्भाव हुआ।

लोग अनेक प्रकार से बनाफर वंश की उत्पत्ति वर्णन करते हैं—परन्तु उचित और यथार्थ नहीं जान पड़ता। वास्तव में वे तोमर वंशीय थे—रायभूषण ने ऊदल की वीरता का वर्णन करते हुये लिखा है—'तोमर-कुल-कमल-दिवाकर' इससे भी स्पष्ट सिद्ध होता है कि बनाफर तोमर-वंशीय थे। इसके अतिरिक्त बहुत से विद्वानों ने खोज ढूंढ़कर यही सार निकाला है।

बहुत से लोग उन्हें अहिरिन* के गर्भ से उत्पन्न हुआ समझ क्षत्रियों से हीन समझते हैं—परन्तु नहीं, अहीर क्षत्रिय जाति है। चन्द्रवंशी यदु के वंशज यादवगण कौन थे? भगवान श्रीकृष्ण की उत्पत्ति किस वंश मे हुई थी? ये यादव ही अहीर थे। माना जाय कि महाबीर सोरठ की स्त्री अहीर क्षत्राणी थी तोभी कुछ अनुचित नही कहा जा सकता। परन्तु ये सभी कहावतें हैं।

—:*:—

---

* अहीर क्षत्रिय जाति है, इसी पवित्र वंश मे भगवान कृष्ण का आविर्भाव हुआ था। नन्द, उपनन्द, सनन्द आदि महापराक्रमी यादव वीर इसी अहीरवंश में उत्पन्न हुये थे।

—लेखक।

दच्छराज और बच्छराज—महाबली—परिमर्दिदेव* (परमाल) ने बड़ी वीरता दिखाई। उसने अपने बाहुबल से कालिंजर के आसपास के राजाओ को जीत लिया। जिन राजाओं ने आधीनता स्वीकार करना बन्द कर दिया था—स्वतंत्र हो गये थे,—पुनः आधीन हो-कर देने लगे। मध्यभारत में पुनः चन्देलों का झण्डा फहरा उठा।

महाबली परमाल को युवावस्था मे आखेट का व्यसन था। कभी २ वह मन्त्रियों तथा शूर सामन्तों को लेकर जंगल में आखेट के लिये निकल जाया करता था। एक दिन दैवयोग से बीहड़ वन में जा पहुँचा। धीरे-धीरे भूलता-भटकता हुआ महात्मा गोरख के आश्रम की ओर जा निकला। उस भयानक वन मे दो जंगली भैंसे लड़ रहे थे—परमाल ने उन्हे छुड़ा देने के लिये अपने वीर सैनिको को आज्ञा दी।

भैंसे बड़े क्रोध मे लड़ रहे थे। उनकी लाल-लाल आखें तथा विशाल शरीर देख सैनिक डर गये, किसी का साहस नहीं हुआ कि दोनों को लड़ते हुये रोक दे। सभी भयभीत हो चुप हो रहे। भैंसे पूर्ववत लड़ते ही रहे—उनके फुफकार से दिशायें रवपूर्ण हो गईं। ओह! वनस्थली काँप उठी।

इसी समय उस निर्जन वन से दो बालक निकल आये और भैंसों की सींगें पकड़—बरबस अलग कर दिया। दोनो

* परमाल ११६५ ई० में राजगद्दी पर बैठा।

ऐसे अपनी २ ओर चले गये । वीर बालकों की वीरता तथा अद्भुत धीरता देख परमाल आश्चर्य्य-चकित हो उठा और उन्हे निकट बुलाकर पूछा—बालकों ! तुमलोग कौन हो और यहाँ कैसे आये हो ? बालकों ने उत्तर दिया—

हमलोग अपने को नहीं जानते । इसी वन में रहते हैं। एक तपोधन महात्मा के द्वारा हमलोगों का पालन हुआ है। उन्होंने कहा है कि—पुत्रों ! एक दिन इस जंगल मे वीर राजा परिमर्दिदेव आखेट के लिये आयेगा—और तुम दोनों को अपने साथ ले जायेगा । हमलोगों का नाम दच्छराज और बच्छराज है। समाधिस्थ होते समय महर्षि ने कहा था कि निःसन्देह तुम्हारे वीर्य से दिशायें गूँज उठेंगी।

महावीर परमाल ने उन दोनों वीर बालकों को अपने साथ ले लिया और महोबा में लाकर रक्खा । दोनो मे क्षत्रिय बालकों के समान गुण विद्यमान थे, दोनों धीर वीर और साहसी थे, दोनो के मुखमण्डल पर अपूर्व आभा चमक रही थी—रानी मल्हना ने बड़ी प्रीतिपूर्वक उनका पालन किया।

राजा ने यथासमय दोनों का यज्ञोपवीत संस्कार कराया और विद्या पढ़ने के लिये आचार्य्य के पास भेजा। बालकों का स्वाभाविक झुकाव अस्त्र-विद्या की ओर था । वे कुछ ही दिनों मे शास्त्र-विद्या का ज्ञान प्राप्तकर अस्त्र-विद्या का अध्ययन करने लगे। महर्षि गोरख ने इन दोनों को बहुत कुछ शिक्षा दी थी—वे शीघ्र ही पारंगत हो गये।

उन्हीं दिनों बक्सर मे रहिमल और टोडर नाम के दो वीर पुरुष रहते थे। वे युद्ध विद्या मे पूर्ण निपुण तथा शस्त्रास्त्र चलाने मे बड़े प्रवीण थे। दच्छराज और बच्छराज दोनों भाई परिमाल की आज्ञा से युद्ध विद्या सीखने के लिये उनके पास गये। टोडर और रहिमल ने दोनो बालकों को अपने समान बलवान जान मित्रता कर ली। सभी आपस में पगड़ी पलट कर मित्र हो गये। रहिमल और टोडर ने दोनों को भाई के समान रखकर युद्ध विद्या का सारा कौशल सिखला दिया। धीरे २ घनिष्टता बढ़ गई। दोनों भाई बक्सर में ही रहने लगे।

चारो वीर मिलकर बड़े पराक्रमी हो गये। आसपास के लोग इनसे डरने लगे। किसी मे साहस न था जो इनसे बोल सके। इन महात्माओ ने अपने सद्गुणो से राजा-प्रजा सबो को अनुकूल कर लिया। दैवात् एक दिन राज्य की सीमा पर चारों वीरों का बनरस (गोरखपुर प्रान्त) के मीरातान्हन से झगड़ा हो गया। सभी न्याय के लिये कन्नौज के राजा जयचन्द के पास चले। परन्तु महोबा के एक सैनिक के कहने पर कन्नौज न जाकर महोबा की ओर मुड़ चले। एक प्रहर रात्रि बीतते २ नगर के फाटक पर जा पहुँचे।

फाटक बन्द हो गया था, सभी रात्रि व्यतीत करने के लिये सो रहे। कुछ ही देर पर फाटक पर कुल्हाड़ा चलने लगा। बड़ा हल्ला हुआ। चारो वीर जाग पड़े और कारण जानने के लिये मीरातान्हन के साथ फाटक की ओर बढ़े। इन वीरों ने एक

भारी सेना को महोबा के दुर्ग पर आक्रमण करते देखा। देखते ही देखते वीरों की क्रोधाग्नि भड़क उठी, उनलोगों ने गरजते हुये कहा—खबरदार! फाटक पर कुल्हाड़ा चलाना रोक दो। परन्तु कुछ परिणाम नहीं हुआ। सैनिक पूर्ववत् कुल्हाड़ा चलाते ही रहे

सैनिकों को अवज्ञा करते देख वीरों का शरीर जल उठा। वे शीघ्र अपनी तलवारों को खींच फाटक पर जा पहुँचे और लड़ने के लिये तैयार हो गये। फिर क्या था? लड़ाई छिड़ गई—देखते ही देखते महोबा का फाटक वीर सैनिकों के शवों से पट गया। शस्त्रों की झंकार, घायलों की चीत्कार तथा वीरों की हुंकार से भयावनी रात्रि बड़ी डरावनी हो उठी।

नगर-द्वार पर महा-कोलाहल तथा भयानक जनरव सुन नगर निवासी दहल उठे। महावीर परमाल के भी शोक और भय का ठिकाना न रहा। रनिवास में हाहाकार मच गया। लोगो की आँखों से निद्रा चली गई। भावी आशंका ने व्यग्र बना दिया।

धीरे-धीरे संग्राम ने उग्ररूप धारण किया। नाती पोतों और बेटों सहित मीरा ताल्हन ने बड़ी वीरता दिखाई। उन-लोगों की वीरता से आक्रमणकारियो के दांव खट्टे हो गये। आक्रमणकारी मांड़ो का राजकुमार करिंगाराय भाग खड़ा हुआ। दच्छराज, बच्छराज, रहिमल, टोडर और ताल्हन की मार से मांड़ो के वीरो के पैर उखड़ गये।

बनाफरों की वीरता--प्रातःकाल शान्ति हो जाने पर महोबा का फाटक खुला। परमाल ने विजयी वीरों का अपूर्व स्वागत किया और राजमहल में लाकर ठहराया। बुद्धिमान परिमाल देव ने मीरा ताल्हन को बलवान समझकर रोक लिया और अपनी सेना का सेनापति बना दिया तथा रहिमल और टोडर को सेवा के द्वारा अपना सहायक बना लिया।

दच्छराज और बच्छराज बक्सर वाले वीरों के साथ महोबे में रहने लगे। इन सबो के वहाँ रहने से परमाल का बड़ा नाम हुआ। बड़े-बड़े बलवान शत्रु लड़ते हुये डरने लगे। आसपास के सभी राजाओ ने अधीनता स्वीकार कर ली।

महात्मा का आशीर्वाद सत्य हुआ। दच्छराज और बच्छ-राज की वीरता से दिशायें गूँज उठी। इन पराक्रमी महापुरुषो ने अलौकिक कार्य किया। कुछ दिन महोबा में रहकर एक विशाल सेना ले विजय के लिये निकले। उन्होने चारों दिशाओं मे घूम-घूमकर राजाओ को परास्त किया और उनसे कर लिया। एक बार बड़े-बड़े महीपों का मुकुट परमाल के चरणो पर झुक गया। परमाल दोनों बालकों के द्वारा अपार गौरव प्राप्तकर कृत्य-कृत्य हो गये। द्विग्विजय मे इन लोगों को अपार धन मिला, दच्छराज ने युद्धभूमि मे वायुवेग से चलनेवाला एक पपीहा घोड़ा और सांकर (एक प्रकार का धार-दार सीकड़) फेरने वाला पंचशावद नाम का हाथी प्राप्त किया।

विजयी वीरों का महोवा वासियों ने बड़ा स्वागत किया। परमाल के प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। उन्होने मल्हना की सम्मति के अनुसार दोनों वालकों को बसा लेने का विचार किया, क्योंकि उन्हे भय था कि बक्सर वालों की घनिष्ठता से कहीं बक्सर न चले जायँ।

इसप्रकार सम्मति ठीक कर, परिमर्दिदेव ने माहिल को लिखा कि तुम अपनी दोनो छोटी बहनों का विवाह दच्छराज और वच्छराज से कर दो। माहिल का विचार नहीं था कि किसी अज्ञात-कुल-शील के साथ उसकी बहनों का विवाह हो, परन्तु भय के विवश हो सम्मति देनी पड़ी। यथा-समय दच्छराज का देवलदेवी के साथ और बच्छराज का तिलका देवी के साथ विवाह हो गया।

महाराज परमाल* ने दोनों के सम्मान और सेवा का बड़ा ध्यान रक्खा। दच्छराज के लिये महोबा से आधकोस की दूरी पर दशहर पुरवा नामक गांव बसाकर एक दुर्ग और महल बनवा दिया तथा बच्छराज को सिरसागढ़ दे दिया। दोनों

---

* परमाल के द्वारा दोनों भाइयों का ब्याह माहिल की बहनों से हो गया। माहिल की पाँच बहनों में मल्हना का विवाह परमाल से हुआ था, कमला बौरीगढ़ के राजा से ब्याही गई थी, अगमा का सम्बन्ध पृथ्वीराज से हुआ तथा शेष दोनों बहने दच्छराज और वच्छराज से ब्याही गई।

—महाकवि जगनिक।

भाई में विशेष प्रेम होने के कारण एक ही स्थान (दशहर पुरवा) पर रहने लगे। अपने मित्रों को रुकते देख बक्सरवाले भी रुक गये। परमाल ने उनके रहने के लिये उत्तम स्थान का प्रबन्ध करा दिया।

धीरे-धीरे पाँच वर्ष बीत गये। दच्छराज की रानी देवल देवी के गर्भ से ज्येष्ठ शुक्ल दशमी के दिन मध्यान्ह में एक महा-तेजस्वी पुत्र उत्पन्न हुआ। सिंह लग्न में उत्पन्न होने के कारण ज्योतिषियों ने कहा कि यह बालक बड़ा पराक्रमी और शूरवीर होगा। इसप्रकार कहकर उसका नाम आल्हा रक्खा। राजा परमाल और रानी मल्हना ने बड़ा उत्सव मनाया। वर्षों तक लोग महोत्सव मनाते रहे।

कुछ दिनों के बाद देवल देवी के गर्भ से एक और बालक उत्पन्न हुआ। गंडांत मूल में उत्पन्न होने के कारण ज्योति-षियों ने कहा कि—इस बालक के द्वारा कुल का क्षय होगा। अमुक मूल में उत्पन्न होने के कारण इसे देखते ही इसका पिता मृत्यु के वशीभूत हो जायगा। ज्योतिषियों ने उसका नाम धांधू बताया। मल्हना ने उसे उसी समय पालने के लिये एक दासी को सौंप दिया। सभी सुखपूर्वक दशहरपुरवा में रहने लगे। इसी बीच में छोटे भाई बच्छराज को भी एक वीर पुत्र उत्पन्न हुआ। उसका नाम मलखान रक्खा गया।

—:o:—

बिठूर का घमासान—धीरे २ ज्येष्ठ का महीना आ गया इसी मास के शुक्ल दशमी को बिठूर में हर साल मेला लगा करता था। बड़ी दूर २ से लोग गंगा-स्नान के लिये आते थे। लाखों व्यापारी भारत के कोने २ से माल बेचने के लिये पहुँचते थे। पन्द्रह दिन तक मेला लगा रहता था। उस समय उत्तर भारत में बिठूर ही सब से बड़ा मेला था। इस बार महोबा-वालों ने भी मेले में जाने का विचार किया। यथासमय दच्छराज बच्छराज, ताल्हन और कुछ शूर सामन्तों के साथ रानी मल्हना देवी अपनी बहन देवल देवी को लेकर मेले मे गई। दासी भी धांधू के साथ मेले में पहुँची।

मेले में बड़े २ राजा आये थे जैसे पृथ्वीराज, जयचंद, करिंगाराय और वीरशाह आदि। देखते ही देखते अपार जन-समुद्र उमड़ पड़ा। कोसों तक बाजार लग गया। देश २ की वस्तुयें बिकने लगीं। महोबावाले भी एक ओर छावनी डाल-कर उतर पड़े। उरई का राजा माहिल भी आ पहुँचा।

पुनीत तिथि आ पहुँची। पवित्र भागीरथी मे स्नान कर सभी बाजार घूमने लगे। बाजार घूमते हुये अचानक करिंगाराय से माहिल की मुलाकात हो गई। कुशल प्रश्न के पश्चात् करिं-गाराय ने माहिल से कहा—महाराज! बाजार में कोई अनोखी चीज नहीं मिलती। बहन ने चलते हुये कहा था कि—मेले से कोई अनोखी चीज लेते आना।

करिंगा की बातें सुन माहिल हँस पड़ा और बोला—क्या तुम्हें कोई अनोखी चीज मिलती ही नहीं ? सुनो ! मैं बताता हूँ, यदि तुममे शक्ति हो तो उसे प्राप्त कर लो। मेरी बहन देवल देवी के पास एक नौलखा हार है, उससे बढ़कर और कोई अनोखी चीज न होगी। देवल देवी गंगा स्नान के लिये आई है। साथ में विशेष लश्कर भी नहीं है—यदि शरीर में कुछ दम हो तो लूट लो, नहीं तो बाजार मे जाकर पैसे दो पैसे की कोई अनोखी चीज ढूँढ़ो।

माहिल की बातों ने करिंगा को उत्तेजित कर दिया। वह एकाएक आवेश में आकर बोल उठा—उरई नरेश! मेरा दम देखना चाहते हो ? आज ही मैं अपनी शक्ति और वीरता दिखा दूँगा। मैं असल क्षत्रिय होऊँगा तो तुम्हारी बहनका हार छीन लूँगा।

इतना कहकर करिंगाराय ने अपनी सेना लेकर महोबा* की छावनी घेर ली। एकाएक आक्रमण से दच्छराज विचलित हो उठे, महोबा के सभी सिपाही थर थर काँपने लगे। रानियाँ भय विह्वल हो गयीं। उस समय प्रतापी ऊदल देवल देवी के गर्भ में था।

---

* बिठूर के मेले में मांड़ो के महाबली राजकुमार ने महोबा की छावनी घेर ली, बड़ा युद्ध हुआ।

—चन्दवरदाई।

करिंगा का अत्याचार *मीरा ताल्हन से न सहा गया। उसने अपने बेटों को ललकारते-हुये कहा—बेटों! हमलोगो ने महोबे का अन्न खाया है। आज उसका बदला चुका दो। वीरों! अपनी २ तलवारें म्यान से खींच लो और अत्याचारियों के नाश के लिये तैयार हो जाओ। इस समय महाबली दच्छराज निस्सहाय हैं। उनके लिये प्राणों को उत्सर्ग कर दो, वीर सैनिकों! मांडो वालों के टुकड़े २ कर दो।

इतना कहते-कहते क्रोध से दाँत पीसता हुआ महाबली ताल्हन बिना काठी कसे ही घोड़े की पीठ पर बैठ गया। उसके पुत्रों तथा शूर सामन्तों ने शीघ्र ही उसका अनुकरण किया। वीर ताल्हन निर्भयतापूर्वक दोनो हाथों से खड्ग चलाता हुआ मांडो की सेना में घुस पड़ा।

हाहाकार मच गया। तलवारों की चमचमाहट, कमानों की मरमराहट और तुपकों की करकराहट से रणस्थली गूँज उठीं। देखते ही देखते विठूर में भगदड़ मच गई।

---

* महोवा का सेनापति—वीर मीरा ताल्हन ने बड़ी वीरता दिखाई। इसकी मार से मांडोवालों के पैर उखड़ गये। सारी सेना हाहाकार करती हुई भाग खड़ी हुई। उसीदिन दच्छराज और मीरा ताल्हन ने पगड़ी पलट कर मित्रता कर ली। इस मुसलमान वीर ने मरते २ अपने प्रण की रक्षा की।

—राय श्रीहरि होलपुर।

बड़ी घमासान लड़ाई हुई। ताल्हन के बेटों ने बड़ी वीरता दिखाई। बात की बात मे हजारों वीर धराशायी हो गये। पृथ्वी रक्त से भींग उठी। महोबा की छावनी वीरों की लाशों से पट गई। पुत्र सहित ताल्हन को वीरतापूर्वक शत्रुओं का नाश करते देख महोवे के शूर सामन्त भी जुट पड़े। फिर क्या था? करिंगाराय (मांडो का राजकुमार) भाग खड़ा हुआ।

ताल्हन को इसप्रकार अपनी सहायता करते देख दच्छराज गद्गद् हो उठा। उसने तत्काल उस बहादुर को गले से लगा लिया और कहा—महावीर! आपने मेरी लज्जा रक्खी। आज से आप हमारे मित्र हुये। अब मैं आपकी सदा सहायता करूँगा और आप मेरी करें। बहादुर ताल्हनने कहा—बहादुर दच्छराज! मेरे हृदय मे मैल नहीं है। हमने उसी दिन हृदय को शुद्ध कर लिया था, जिस दिन महाराज परमाल ने हमलोगों के झगड़े को निपटा दिया था। इतना कहकर उसने कुरान हाथ मे लेकर तथा दच्छराज ने गंगाजल लेकर मित्रता की शपथ ली।

पाठकों! भूले न होंगे। ताल्हन के साथ राज्य की सीमा पर इन लोगो का झगड़ा हो गया था। इस पवित्र मित्रता से वह वैर विरोध जाता रहा। दोनो अभिन्न हृदय बन गये।

अत्याचारी करिंगा के भागते ही शांति स्थापित हो गई। परन्तु मेला नहीं लग सका। इसके पूर्व कार्त्तिक के मेले में

भी एक घटना घटी थी। धांधू* की धाय उसे लेकर गंगा स्नान करने गई थी कि अचानक वह बालक खो गया। अस्तु; मेला समाप्त हो जाने पर सभी अपने २ घरों को चले। दच्छराज भी रानियों शूर सामन्तों और सीरा वाल्हन के साथ सकुशल महोबा लौट आये।

---

* धांधू के विषय में यह भी कहा जाता है कि उसकी धाय मेला में एक ज्योतिषीसे उसका हाथ दिखला रही थी। ज्योतिषी ने कहा—यह बड़ा प्रतापी और शूरवीर होगा। पृथ्वीराज और उनके चचा कान्हदेव वहीं स्नान कर रहे थे। उत्तम लक्षण वाले बालक को देख कान्हदेव ने उसे बडे कौशल से उठवा लिया। कुछ दिनों के बाद कान्ह-देव ने बड़ा उत्सव मनाया और उसे गोद ले लिया। यह सुनकर महोबा वालों ने सन्तोष किया।

—लेखक।

करिंगा का अत्याचार—विठूर के पराजय से करिंगाराय बड़ा दुःखी हुआ। वह शोक सागर में डूब गया। उसे बड़ी ग्लानि हुई। रात दिन महोवा के नाश का उपाय ढूँढ़ता रहा।

धीरे २ कुछ दिन बीत गये। करिंगा ने एक षड़यंत्र* रचा। एक दिन अन्धेरी रात मे सहस्रो शूर सामन्तों के साथ महोवा के बाहर दशहरपुरवा पर आक्रमण किया। आधी रात में सभी लोग सो रहे थे। किसी को स्वप्न मे ऐसी आशा नहीं थी कि डाकुओ का आक्रमण होगा।

एकाएक मांडो के सैनिक कोट की दीवारें फाँदकर भीतर कूद पड़े। उस अन्धेरी रातमें उन सैनिकों ने बड़ा अनर्थ किया। हजारो निरपराधो को सोते हुए काट डाला। बालकों को यम-लोक भेज दिया तथा अनेक दास दासियो को वंदी कर लिया। कुछ ही देर मे अत्याचारियो का दल दच्छराज के महल में घुस पड़ा। करिंगा स्वयं तलवार निकाले आगे-आगे बढ़ा।

* करिंगा ने नौलखा हार प्राप्त करने के लिये विठूर में दच्छराज के तम्बू पर आक्रमण किया था। इसलिये उसे प्राप्त करने के लिये दशहरपुरवा पर आक्रमण करना निश्चित किया। दशहरपुरवा महोवा से कुछ दूर पर था। अतः उसने दच्छराज के महल पर आक्रमण किया। महोवा से अलग होने के कारण वीर चन्देल कुछ न कर सके और न ताल्हन ही सहायता पहुँचा सकते थे। क्योंकि वे महोवा में न थे—करिंगा के इस भीषण अनर्थ को कोई जान न सका।

—महाकवि राय जगनिक।

दच्छराज बच्छराज पास-ही-पास सो रहे थे। करिंगा की आज्ञा से सैनिकों ने दोनों को बाँध दिया। फिर क्या था? दस्युओं ने दच्छराज के महल को खूब लूटा। अपार धन के साथ नौलखा हार भी चुरा लिया। लड़ाई के मैदान में निर्भय घूमने वाला दच्छराज का पपीहा घोड़ा और सांकर फेरने वाला हाथी भी खोलवा लिया। इसप्रकार राजा रानी का सत्यानाश कर करिंगा अपने सैनिकों के साथ लौट गया।

मांडो मे पहुँचकर करिंगा ने दच्छराज और बच्छराज के शरीर को कोल्हू में पिसवा डाला और उनकी खोपड़ियों को कंगूरे में लटकवा दिया। माहिल* यह समाचर सुनकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

---

* माहिल परिहार था। नवमी और दशमी शताब्दि में परिहार बड़े शक्ति-शाली थे। एकबार सम्पूर्ण उत्तर भारत और दक्षिण देश में उन्हीं का राज्य था। चन्देलों के षड़यंत्र से ही परिहारों का पतन हुआ था। ८४० ई० में सारा भारत परिहारों के अधीन था। भोज की मृत्यु के बाद यद्यपि परिहार राज्य छिन्न-भिन्न हो गया था तथापि उनके वंशज बहुत दिनों तक शासन करते रहे। परिहारों का चन्देलों से बड़ा वैर था। चन्देलों ने परिहार राजा राज्यपाल को १०१८ ई० में मरवाया था। माहिल इसी कारण चन्देलों से जलता था। सब से बड़ी तो यह बात थी कि परमाल ने बलपूर्वक उसकी बहन को ब्याहा था तथा उसे उरई में बसने के लिये विवश किया था।

सवेरा होते ही दशहरपुरवा में कोहराम मच गया। दच्छ-राज और बच्छराज का महल स्त्रियों और बालकों के आर्तनाद से गूँज उठा। यह हृदयविदारक शोक समाचार सुन महोबा मे शोक छा गया। सभी रोते हुए दशहरपुरवा की ओर दौड़ पड़े। इस दुःखदायी समाचार ने परमाल को व्यग्र कर दिया। वह तत्काल अपनी रानी को लेकर दशहरपुरवा में पहुँचे। राजा और रानो ने दच्छराज और बच्छाज की स्त्री को बहुत कुछ समझा बुझाकर शान्त किया।

दच्छराज (देस-राज) के मारे जाने की खबर सुन ताल्हन की क्रोधाग्नि भड़क उठी। वह सच्चा मित्र था। अपने मित्र का बदला लेने के लिये तैयार हो गया। महाबली ताल्हन क्रोध मे आखें लाल-लाल किये हुये देवल देवी के पास पहुँच कर बोला—आप धीरज रक्खें, मैं उस दुराचारी से अपने मित्र का बदला लूँ गा। अत्याचारी करिंगा मेरे हाथ से नहीं बच सकता।

देवल देवी ने कहा—वीर शिरोमणि! आप कुछ दिन और रुकें। मेरे छोटे बच्चे जब बड़े हो जायेंगे तब आप ही अपने

इसके अतिरिक्त एक और कारण था—वह दच्छराज और बच्छराज का विवाह। उसी के द्वारा करिंगा ने इस षड्यंत्र को रचा था।

—History of Chandel Bansh,

by

Rai Suraj.

पिता के शत्रुओं से बदला लेगें । देवल की बातें सुन ताल्हन लौट आये ।

कुछ दिनों के उपरान्त देवल के गर्भ से प्रतापी ऊदल का जन्म हुआ । उसी समय मल्हना रानी के गर्भ से ब्रह्मानन्द और बच्छराज की रानी के गर्भ से सुलखान भी उत्पन्न हुआ । कुछ दिनो के उपरान्त परमाल को रणजीव नाम का एक और पुत्र हुआ । धीरे-धीरे दच्छराज और बच्छराज का शोक लोग भूल गये ।

आल्हा ऊदल का बाल्यकाल—धीरे-धीरे बालक बढ़ने लगे । यथासमय सबो का उपनयन संस्कार कराया गया । महाराज परमाल ने शिक्षा के लिये सबों को अमर राय के हाथ मे सौंप दिया । अमर राय उस समय मध्यभारत के प्रसिद्ध महात्मा थे ।

महात्मा अमर राय ने* सोचा-कलि का युग है, चारो ओर

---

* उस समय अमर राय बड़े प्रसिद्ध महात्मा थे, चारों दिशाओं में उनके सिद्धी की धूम मची थी । देश देशान्तरों के क्षत्रिय वीर और राजकुमार उनसे आकर अस्त्र शिक्षा प्राप्त करते थे । राजा परमाल ने अपने बालकों को महात्मा अमर राय के पास ही विद्याध्ययन के लिये भेजा । महात्मा अमर राय ने समयानुसार उन्हें शिक्षा दी ।

—चितामणि ।

युद्ध के बादल मंडराते रहते हैं, क्षत्रियों का जीवन हथेली पर रखा रहता है, ऐसी स्थिति में इन बालकों को वेदान्त की शिक्षा देना मूर्खता है । उन्होंने अस्त्र-शस्त्र संचालन की शिक्षा देना आरम्भ किया ।

बालक स्वाभाविक तेजस्वी थे । उन्होंने सहज ही में सभी विद्याओं को जान लिया । ऊदल बड़ा रणकुशल हुआ । वह शस्त्र चलाने में बड़ा चतुर निकला । मलखान बड़ा शक्तिशाली था । उसने खूब तलवार चलाना सीखा । आल्हा, रणजीत, सुलखान और ब्रह्मानन्द ने भी कम योग्यता प्राप्त न की ।

उसी समय महात्मा अमर राय के पास राजपुरोहित चिन्तामणिका पुत्र देवकर्ण* भी शिक्षा प्राप्त करता था । राजकवि का पुत्र जगनिक† उसी आश्रम में रहता था । सबों में बड़ी मित्रता थी, महर्षि अमरराय ने इन दोनों ब्राह्मणों को भी क्षत्रि-योचित शिक्षायें दी, सभी अस्त्र-शस्त्र में निपुण हो गये ।

---

* देवकर्ण को लोग देवा कहते थे । वह ऊदल का सहचारी और गुरु भाई था ।

—महाकवि जगनिक ।

† जगनिक महोबा के राजकवि का पुत्र था, वह आल्हा का गुरु भाई था । अमर राय ने उसे युद्धविद्या की शिक्षा दी थी ।

—रायभूषण ।

राजा परमाल ने बालकों की सेवा के लिये दासी पुत्र रूपन* को भेजा था। वह भी रहते-रहते बहुत-सी युद्ध सम्बन्धी बातों को जान गया। इसप्रकार कुछ ही दिनों में सभी योग्य हो राजधानी मे लौट आये। महोबा निवासियों ने वीर बालकों का अपूर्व स्वागत किया।

---

* रूपण दासी पुत्र था, उसने क्षत्रियों की लड़ाई में बड़ी वीरता दिखलाई। बनाफर उसे भाई के समान मानते थे। वह महोबा का वीर योद्धा था।

—रायचंद।

वैर का बदला—महात्मा अमर राय ने वास्तव में राजकुमारों को अमर कर दिया। कुछ ही दिनों में वे अस्त्र-शस्त्र में बड़े प्रवीण हो गये। ब्रह्मानन्द धनुर्विद्या में निपुण हुआ, ऊदल अस्त्र-शस्त्र चलाने में सिद्धहस्त हुये, मलखान का शरीर बड़ा पुष्ट हुआ तथा आल्हा ने सभी गुणों को प्राप्त किया।

धीरे-धीरे कुछ काल बीत गया। सभी राजपुत्र* ब्रह्मानन्द के साथ शिकार खेलने जाने लगे। एक दिन वे उरई की तरफ जा निकले और एक सघन जंगल में पहुँचकर शिकार खेलने लगे।

वीर बालकों को जंगल में शिकार खेलते देख वन के रक्षकों ने मना किया—परन्तु बालकों ने न माना। उनलोगों ने रक्षकों को खूब पीटा। सभी मारे डर के भाग खड़े हुए और राजधानी

---

* बड़े होने पर महारानी मल्हना की अनुमति से सभी राजकुमार शिकार खेलने—जाने लगे। रानी ने सवारी के लिये सबको अच्छे २ घोड़े दिये। आल्हा को करिलिया नाम की घोड़ी दी गई, मलखान की घोड़ी का नाम कबुतरी था। ब्रह्मानन्द का घोड़ा हरनागर था। ऊदल बेंदुला नामक घोड़े पर चढ़ता था और महाबली देवा मनुरथा पर सवार होता था। मीरा ताल्हन की घोड़ी का नाम सिंहनी था। हिरौंजिन पर मलखान का भाई सुलखान चढ़ता था।

सभी घोड़े बड़े चचल और स्वामि-भक्त थे। युद्ध में बड़ा कौशल दिखलाते थे—शत्रुओं को दाँतों से काटते तथा लातों से मारते थे। वे इतने द्रुतगामी थे कि कहा जाता है—युद्ध में उड़ते फिरते थे।

में पहुँचकर सारा हाल कह सुनाया। उरई का राजा दुरात्मा माहिल जल उठा और शीघ्र शूरवीरों को ले बालकों को दंड देने के लिये चल पड़ा। परन्तु जंगल में पहुँचते ही ब्रह्मानन्द और आल्हा-ऊदल को देख कुछ शान्त हो रहा। फिर भी अपनी नीचता का परिचय दिये बिना न रहा। उसने डपटकर दच्छराज के लड़कों से कहा—

वाह! बड़े वीर बनते हो। बन-रक्षकों को पीटकर बहादुर बन गये। तुमलोगों में इतना ही बल होता तो अपने बाप का बदला ही न ले लेते; आज भी जिनकी खोपड़ियाँ कंगूरे पर लटक रही हैं।

माहिल की बातों ने आल्हा ऊदल को चिन्ता में डाल दिया। वे अपार शोक-सागर में डूबते हुए माता के पास पहुँचे और बोले—मां हमारे पिता की मृत्यु किसप्रकार हुई थी?

बालकों के प्रश्न ने माता के हृदय में करुणारस का संचार कर दिया। देवल देवी ने दोनों पुत्रों को पास में बैठाकर अश्रुपूर्ण नेत्रों से उनकी मृत्यु की सारी कथा कह सुनाया। इसप्रकार कहते कहते उसका हृदय उमड़ आया, गला रुंध गया, अत्यन्त शोक विह्वल हो पृथ्वी पर गिर पड़ीं। कुछ देर के बाद होश आने पर पुनः कहने लगीं—बेटा! मांडो के करिंगाराय ने चुपके से आधीरात में आक्रमण कर तुम्हारे पिता और चाचा को बंदी कर लिया। हाय! उसी दुराचारी ने उन्हें पिसवा डाला और उनकी खोपड़ियों को मांडो दुर्ग के

कंगूरे पर लटका दिया। उसी अत्याचारी ने मुझे विधवा और तुम्हें अनाथ बना दिया। बेटा इतना ही नहीं उस नराधम ने सोये हुए सहस्रों वीरों को काट डाला, तुम्हारे पिता का पपीहा घोड़ा—युद्धभूमि में साँकर फेरने वाला हाथी और मेरा नौलखा हार भी ले गया।

बेटा! मैं तुम्हीं लोगों को देखकर अबतक जीती रही हूँ। मुझे आशा थी कि मेरे बेटे बड़े होंगे तो शत्रु से अपने पिता का बदला लेंगे। तुमलोग बच्चे थे, इसीलिये अबतक यह बात नहीं कही—क्योंकि लड़कपन में क्रोध कर मांडो पर जा चढ़ोगे तो जीत न सकोगे, क्योंकि करिंगा बड़ा वीर और लड़ाका है।

माता की बातें सुनते ही ऊदल के शरीर में आग लग गई। वह मारे क्रोध के व्याकुल हो उठा, उसकी आँखें लाल हो उठीं तथा भुजायें फड़कने लगी। वह दाँत पीसता हुआ बोला—माँ मुझे शीघ्र मांडो जाने की आज्ञा दो, पितृहन्ता से बिना बदला लिये—महोबा का पानी भी न पीऊँगा। मैं उस दुरात्मा का वंश नाश किये बिना शान्त नही रह सकता। इतना कहते हुए ऊदल महल से चल पड़ा।

ऊदल के क्रोध का समाचार सुन परिमर्द देव अत्यन्त चिन्तित हो उठे और शीघ्र ही दोनों भाइयो को बुलाकर बोले—

बेटा! अभी कुछ दिन और धीरज धरो, अभी बालक हो, महा पराक्रमी शत्रु से कैसे लड़ोगे? यद्यपि मैं तुम्हारे वीरोचित विचारों से सहमत हूँ—परन्तु तुम्हारी सुकुमारता देख आज्ञा

देते डरता हूँ। इसी समय दोनो बालकों को समझाते हुये मल्हना ने भी कहा—माँड़ो जीतना बहुत कठिन है, उसके चारो ओर बारह कोस तक बबूलों का वन है। उसे पार कर सेना सहित वहाँ पहुँच जाना साधारण काम नहीं है। बेटा! अभी कुछ दिन और ठहरो।

राजा-रानी की बातें सुन ऊदल ने हाथ जोड़कर कहा—अब हमलोग बालक नहीं हैं, क्षत्रिय बालक-बारह वर्ष की अवस्था ही से सेनानायक हो सकता है—आप लोग चिन्ता न करें। मुझे सहर्ष आज्ञा और आशीर्वाद दें।

ऊदल अपने हठ पर तुल गया। परमाल और मल्हना ने बहुत समझाया। परन्तु महाबली बालक अपने संकल्प पर डटा रहा। उसे इसप्रकार दृढ़ देख मल्हना ने हृदय से लगाकर कहा—अच्छा, बेटा! जाओ, दुरात्मा करिंगा से अपने पिता का पूरा बदला लो, परन्तु देखना—वीर चन्देलों की कीर्ति डूबने न पाये। सिंह शिशु! अपनी वीर माता की लज्जा रखना, मातृभूमि को कलंकित न करना।

मल्हना की बातों ने उसके हृदय में विद्युत का संचार किया। महाशान्त प्रकृति आल्हा भी क्रोधित हो उठा। उसने गरज कर कहा—माँ! महोबे का नाम डूबने के पहले मेरा प्राण जायगा। हमलोग युद्ध से भयभीत हो पूर्वजो की कीर्ति को कलंकित नहीं कर सकते। शत्रुओं से पूरा बदला लेगें।

आल्हा की बातें सुन मलखान भी जोश मे आ गया। उसने

दांत कटकटाते हुये कहा—भाई ऊदल ! घबड़ाओ मत, कठिन मोर्चे पर मुझे कर देना। मैं अकेला शत्रुओं के व्यूह में रुधिर की नदी बहा दूंगा। रिपुओं के रक्त की प्यासी मेरी तलवार रणभूमि मे अवश्य तृप्त होगी। मेरी बातों को अनर्गल न समझना। मैं मांडो को खुदवा कर नदी में डलवा दूंगा।

आल्हा ऊदल और महाबली मलखान तैयार हो गये। मित्र के पुत्रों को शत्रुओ के विरुद्ध तैयार होने का समाचार सुन सेनापति मीरा ताल्हन भी आ पहुँचे और बोले—पुत्रों ! ठीक है, मैं तुम्हारी सहायता के लिये तैयार हूँ—मैं तुमलोगों की ही राह देख रहा था। मित्र-हंता दुरात्मा करिंगा से बदला लिये अब मैं नहीं रह सकता। महोबा की सारी सेना तैयार है। आल्हा-ऊदल और मलखान उसे पिता के समान ही मानते थे। ताल्हन ही की सम्मति से सबने मांडो पर चढ़ाई करने का निश्चय किया।

+ + + +

देखते ही देखते युद्ध का धौंसा बज उठा। मातृभूमि पर प्राणोत्सर्ग करने वाले महोबा के बाँके वीर शस्त्रास्त्र से सज्जित होने लगे। बड़े २ मदमत्त कुंजर और द्रुतगामी अश्व तैयार हो गये। सारी नगरी वीरों की हुँकार तथा शस्त्रों की झंकार से गूंज उठी। सेनापति महाबली ताल्हन की आज्ञा से वीरों की तलवारें म्यान से बाहर हो गईं। उनके गंभीर नाद

से दिशायें कम्पायमान हो उठीं तथा आकाश और पृथ्वी एक हो गईं।

सभी अपने २ घोड़ों पर कूदकर चढ़ गये, गजारोही गजों पर डट गये और महारथी रथों पर आरूढ़ हो गये। महाबली क्षत्रियों की अजेय सेना तैयार हो गई। सेनापति की आज्ञा से कूच का डंका बज गया।

देवल देवी वीर जाया थी। अपने पुत्रों को युद्ध में जाते देख वह भी तैयार हो गई और साथ हो ली। माता को भगवती चण्डी के समान उद्यत देख वीर बालकों का उत्साह सौ गुणा बढ़ गया। सारी सेना सहित धावा मारते हुये सभी सत्रह दिन में मांडो की सीमा पर पहुँचे। सीमा पर बारह कोस मे बबूरों का वन था। महोबे की सेना उसी बबूरों के वन में पहुँच कर रुक गई। आगे बढ़कर मीरा ताल्हन ने सीमा पर निशान गाड़ दिया। सारी सेना उतरने लगी। कोसों में शिविर ही शिविर दिखायी देने लगे।

शिविर स्थापित हो जाने पर सभी आक्रमण का विचार करने लगे। मीरा ताल्हन ने कहा—पुत्रों! बड़ी सावधानी से काम लो। मांडो का लौह दुर्ग वज्र से बढ़कर अभेद्य है—इसका तोड़ना साधारण काम नहीं है। यहाँ अगणित सेना है, मांडो वाले बड़े वीर और लड़ाके हैं—उन्हें विजय करने के लिये पहले किले का भेद ले लेना आवश्यक है। शत्रु का भेद जाने बिना एकाएक आक्रमण करना नितान्त मूर्खता है।

सबों ने ताल्हन की बातो का स्वागत किया। ढेवा और ताल्हन की सम्मति के अनुसार—किले का भेद जानने के लिये योगी का वेष धारण कर मांडो मे जाना निश्चित हुआ। तत्काल मीरा ताल्हन, आल्हा, ऊदल, ढेवा और मलखान योगियों का वेष धारण कर गाते-बजाते मांडो की ओर चले। मार्ग में मांडो के कर्मचारियो ने बहुत प्रकार की शंकायें की—परन्तु इन बुद्धिमानों ने अपनी वाक्‌चातुरी से सबो को सन्तुष्ट कर दिया। किसी को सन्देह न रहा। दिन भर योगियों ने घूम-घूमकर नगर का भेद लिया—पश्चात् कोट की ओर बढ़े। कुछ ही दूर जाने पर वह कोल्हू दिखलाई पड़ा जिसमे दच्छराज और वच्छराज पेरे गये थे।

सामने ही कंगूरे पर उनकी खोपड़ियाँ लटक रही थीं—देखते ही योगियों की आँखों ने रक्तवर्ण धारण कर लिया। मारे क्रोध के ऊदल का चेहरा तमतमा उठा। वे कुछ बोलना ही चाहते थे कि ताल्हन ने आगे बढ़ने का संकेत किया। अब वे चारो ओर घूम-घूमकर दुर्ग को देखने लगे। सभी भेद प्राप्त कर पाँचो ने यह निश्चय किया कि विना सुरंग लगाये यह सुदृढ़ दुर्ग नही टूट सकता। इसप्रकार गुप्त मार्ग, शत्रु बल, ऐश्वर्य, सेना और वैभवादि का भेद लेकर पाँचो योगी शिविर की ओर लौटे।

बबुरी तक बबूलों का भयानक वन था, दो एक पगडंडी के अतिरिक्त और उसमें कहीं मार्ग न था। सारी सेना सहित उसे

४

धारकर-मांडो पर आक्रमण करना कठिन ही नहीं वरन् पूर्ण असंभव था। अब क्या करना होगा? सभी देर तक इसी विषय पर विचार करते रहे, अन्त में निश्चय हुआ कि बारह कोस का बबुरी बन काट डाला जाय। देखते ही देखते बड़ी २ कुठारें निकल पड़ीं। एक प्रहर दिन चढ़ते २ सारा जंगल साफ हो गया। सघन बबुरी वन साफ मैदान हो गया। सारी कठिनाइयाँ जाती रहीं।

दोपहर होते २ रण-दुन्दुभी बज उठी। इधर बबुरी वन के रक्षक मांडो में पहुँचे और सब हाल कह सुनाया! बबुरी वन विध्वंस की बात सुनते ही जम्बे के शरीर में आग लग गई। उसने अपने पुत्र अनूपी और टोडर को बुलाकर कहा—बेटों! बन-रक्षकों ने कहा है कि महोबा की सेना मांडो पर आक्रमण करने के लिये आ रही है। महोबा वालों ने बबुरी बन विध्वंस कर डाला है—तुम दोनो शीघ्र अपनी सेना लेकर सीमा पर जाओ और उन मतिमंदों को दण्ड दो।

पिता की बातें सुन दोनों पुत्र चल पड़े। मांडो में युद्धके बाजे बजने लगे। देखते ही देखते किले से अपार चतुरंगिणी सना निकल पड़ी, वीरों के सिंहनाद तथा रथों के निर्घोष से दिशायें रवपूर्ण हो उठीं। उस चतुरंगिणी सेना से इतनी धूल उड़ी कि दिवाकर छिप गया। इस प्रकार उस रजाच्छन्न अंधकार में बढ़ती हुई वह मांडो की विशाल वाहिनी बड़े वेग से बबुरी वन की ओर बढ़ी।

कुछ ही देर में दोनो सेनायें निकट आ पहुँची। महोबली अनूपी ने गरजते हुये कहा—मांडो के इस बबुरी वन को किसने कटवाया है? आज वह मेरे हाथ से नहीं बच सकेगा? अनूपी की अभिमान भरी बातें सुन ऊदल आगे आ पहुँचे और बोले—यह सघन बबुरी वन मेरी आज्ञा से विध्वंस किया गया है। मैं दुरात्मा करिंगा से अपने पिता का बदला लूंगा। आज महोबियो की मार से मांडो की सुदृढ़ दीवारें चूर २ हो उठेंगी। कल सवेरे बाप और भाइयों सहित दुरात्मा करिंगा की खोपड़ी उसी कंगूरे पर लटकती हुई दिखायी पड़ेगी जहाँ—दच्छराज और बच्छराज की खोपड़ियां लटक रही हैं।

ऊदल की बात सुनते ही अनूपी के देह मे आग लग गई। उसने तत्काल ही सैनिकों को आज्ञा दी कि भुशुंडियों को सामने करो-मारो, मारो, महोबियो को मार भगाओ।

आज्ञा पाते ही वीर सैनिक झुक पड़े। उनकी तलवारें चमक उठीं। देखते ही देखते भुशुंडियों से अग्नि स्फुलिंग निकलने लगी। सर्वत्र मारो! काटो! धरो पकड़ो, की ध्वनि निकलने लगी।

महोबिये बड़े बुद्धिमान थे। उनलोगों ने साधारण चतुराई से मांडोवालों के भुशुंडियों और तुपकों को व्यर्थ कर दिया। सांगें, भालो और बर्छी की मार होने लगी। एक प्रहर तक बड़ी भयानक लड़ाई हुई। हजारो योद्धा धराशायी हो गये। वीर बालकों ने अभूतपूर्व पराक्रम दिखलाया। उनकी मार से

मांडो की सेना घबड़ा उठी। ऊदल ने लड़ते २ अनूपी को घोड़े की पीठ से गिरा दिया और टोडर को पकड़ कर बाँध लिया। सेनापति के बँधते ही सेना भाग खड़ी हुई।

महाबली अनूपी के मरने और टोडर के बँधने का हाल सुन जम्बे जल उठा और तत्काल अपने पुत्र सूरजमल को एक विशाल सेना के साथ भेजा—परन्तु महोबियों ने उसे भी मार भगाया। सूरज ऊदल के हाथ से मारा गया।

भाइयों और सेना की दुर्दशा सुन करिंगा क्रोधोन्मत्त हो उठा। उसने शूर सामन्तों के सामने दर्बारमें गरजते हुये कहा—वीरों! कोई चिन्ता नहीं, आपलोग अधीर न हों, मेरे रहते महोबिये आगे नही बढ़ सकते। आज मैं महोबे की भूमि को वीरों से रिक्त कर दूँगा—उन बालकों का जिन्होंने मांडो के कायरों पर विजय प्राप्त कर वीरता दिखाई है—छक्के छुड़ा दूँगा। महोबा में ऐसा कौन वीर है जो मेरा सामना कर सके।

इतना कहते २ वह गरज उठा। वीर सामन्तो ने भी उसका अनुकरण किया। दरबार महाराज जम्बे के जय निनाद से गूँज उठा। बड़े २ अश्वारोही और गजारोही शस्त्रास्त्र सज्जित हो गये। सहस्रों धनुष-धारी दृढ़ वर्म धारण कर चल पड़े। महाबली दच्छराज का पंचशावद हाथी और पपीहा घोड़ा करिंगा के लिये सज गया। लुटेरा* रंगा और बंगा का दल भी साथ ही साथ

* उस समय रंगा और बंगा प्रसिद्ध लुटेरे थे। गावों को लूटना, घरों को फूँक देना और ढोरों को हाँक लेना ही इनका काम था। दोनों

चल पड़ा। करिंगा पंचशावद पर बैठकर देवेन्द्र के समान रणभूमि की ओर बढ़ा। एक पहर बीतते बीतते सारी सेना बबुरी वन मे जा पहुँची। उधर महोबिये भी तैयार थे। घनघोर युद्ध आरम्भ हो गया।

बड़ा भयंकर समर हुआ। वीरों ने बड़ी वीरता दिखायी। पृथ्वी रुण्ड मुंडों से पट गई। असंख्य धड़ कट-कटकर गिरने लगे। सर्वत्र रक्त की धारा बह चली। वीर महोबियों की मार से मांडो की सेना मे खलबली मच गई। रंगा और बंगा के होश उड़ गये। बड़े २ शूर सामन्तों के छक्के छूट गये। सभी हाहाकार करते हुये भाग खड़े हुये।

महोबा के महाबली बालको से अपनी सेना को विचलित देख—करिंगा ने पंचशावद को साँकड़ पकड़ा दी। भीमकाय पंचशावद अपने सूँड़ से चक्र के समान साँकड़ फेरने लगा। देखते ही देखते महोबा की सुदृढ़ सेना को चीरता हुआ वह अन्दर पिल पड़ा। उसकी मार से सारी सेना में खलबली मच गई। अब करिंगा राय को अच्छा अवसर मिला। उसने हाथी के उपर से ही महोबा के बड़े बड़े सैनिकों को विद्ध करना आरम्भ किया। महाबली ऊदल से यह न देखा गया। उनका द्रुतगामी बेंदुला पचशावद के मस्तक पर दो पैर रखकर खड़ा हो गया। इतने में प्रतापी ऊदल ने बड़े जोर से भाला चलाया।

भाई क्रूर हृदय थे। इन दोनों ने हज़ारों निरपराधों का वध किया था। इनके दल में बहुत से लुटेरे रहते थे-जिन्हें ये लूट का भाग देते थे।

तीक्ष्ण भाला हौदे को चीरता हुआ करिंगा की छाती में जा लगा—क्षणमात्र में वह बेहोश हो गया। इधर पंचशावद ने ऊदल को बेंदुला से गिरा दिया। साँकड़ की चोट से ऊदल भी मूर्च्छित हो गये।

अपने पंचशावद को भीषण कर्म करते देख देवल देवी शीघ्र उसके पास जा पहुंची। अपनी स्वामिनी को देखते ही पंचशावद पहचान गया। देवल देवी के प्यार करने और पुचकारने से पंचशावद ने साँकड़ फेरना बंद कर दिया।

इसी समय करिंगा की मूर्च्छा भंग हुई। इतने मे मलखान आ पहुँचे और युद्ध करने लगे। मलखान की घोड़ी पंचशावद के मस्तक पर जा खड़ी हुई। इस समय मलखान ने अपूर्व वीरता दिखायी। लड़ते २ उसने महावत को मार डाला और ढाल की औझड़ से करिंगा को पृथ्वी पर गिरा दिया। यह स्वर्ण-संयोग देख देवल देवी ने आल्हा को पंचशावद पर चढ़ा दिया। उधर करिंगा उस पपीहा पर जा चढ़ा जिसे पंचशावद हाथी के साथ सजा लाया था। इधर ऊदल भी स्वस्थ्य हो बेंदुला पर चढ़कर आ डटे।

महाबली ऊदल ने करिंगाराय के बहुत से सैनिकों को मार डाला। रंगा और बंगा ने बड़ी वीरता दिखायी परन्तु ऊदल के हाथ से नहीं बच सके। मलखान ने मत्त-केशरी के समान घूम-घूमकर मांडो के सैनिकों का संहार किया। उसने अपनी तलवार से खून की धारा बहा दी। मांडो की सेना में कोई ऐसा वीर न था

जो मलखान का सामना करता। इस प्रकार शत्रुदल में निर्भय दहाड़ता हुआ मलखान आगे बढ़ा और पुनः करिंगा के पास जा पहुँचा। करिंगा ने मलखान का सामना किया परन्तु वह ठहर न सका। मलखान ने तलवार का एक ऐसा वार किया कि उसका सिर कटकर पृथ्वी पर लोटने लगा। करिंगा के मरते ही मांडो वालों की हिम्मत टूट गई। सभी हाय २ करते हुये भाग चले। ऊदल ने पपीहा को पकड़ लिया।

इसी समय आल्हा और मलखान ने नगर पर धावा कर दिया। जम्बे अपनी बची बचाई सेना लेकर लड़ने आया, परन्तु थोड़ी ही देर मे मारा गया। महोबिये वीरों ने मांडो को लूट लिया। आल्हा ने बड़े प्रेम से पिता और चाचा की खोपड़ियों को उतारा। परिवार सहित करिंगा का शरीर उसी कोल्हू मे पेरा गया जिसमे भाई सहित दच्छराज पेरे गये थे। आल्हा ऊदल ने उनकी खोपड़ियो को उन्हीं कंगूरो में लटकवा दिया जिनपर उनके पिता और चाचा की खोपड़ियां टँगी थी। आज वैर का बदला पूरा हो गया।

—※—

बनाफरों की बहादुरी—मांडो का दुर्भेद्य लौह-कोट चूर-चूर हो गया। विश्व विजयिनी सेना मूली के समान काट डाली गयी—करिंगा भाइयों, सहायकों और शूर सामन्तों सहित पशुओं की मौत मारा गया। दच्छराज के पुत्रों ने नौलखा हार छीन लिया। अपने पिता का पंचशावद और पपीहा भी मिल गया। सुयोग्य पुत्रों ने शत्रुओं से पूरा-पूरा बदला लिया।

पाठकों माहिल को भूले न होंगे। वह करिंगा के पराजय का हाल सुनते ही जल उठा। उसकी आशा फलवती नही हुई। वह परिहार चन्देलों का नाश देखना चाहता था। इस समाचार ने उसे चिन्ता सागर में डाल दिया। वह बड़े उधेड़बुन में पड़ा। सोचते २ एक युक्ति निकल आई। वह तत्काल अपनी लीली घोड़ी पर चढ़ा और महोबा की ओर चल पड़ा। कुछ ही देर मे महाकूटनीतिज्ञ दुरात्मा माहिल अपने बहनोई के दर्बार में पहुँच गया।

एकाएक माहिल को आते देख परमाल ने उत्सुक हो मांडो का हाल चाल पूछा—माहिल ने रोते हुये कहा—हाय! सर्वनाश हो गया। सारी सेना मारी गई। मांडो वालो ने तुम्हारे बालकों को मार डाला। भागो, भागो, महोबा छोड़कर भागो—मांडो की सेना नगर लूटने के लिये आ रही है। इतना कहते कहते माहिल उठ खड़ा हुआ और घोड़ी पर चढ़कर उरई की ओर चल पड़ा।

महोबा में कोहराम मच गया। सभी हाय हाय करते हुये छाती पीटने और रोने लगे। राजा परमाल व्यग्र हो उठे। यह समाचार सुनते ही रानी मल्हना धड़ाम से धरती पर गिर पड़ीं और बेहोश हो गईं। दास-दासियों के शोक का ठिकाना न रहा। एकाएक भगदड़ मच गई। सभी जान माल की रक्षा मे लग गये। स्वयं परमाल कालिंजर भागने की तैयारी कर रहे थे कि आल्हा का भेजा हुआ मांडो का राजकोष लेकर शूर सामन्तों के साथ वीर रूपन आ पहुँचा। मांडो विजय की बात सुन सभी अत्यन्त प्रसन्न हुये। अपार शोक जाता रहा। लोगों के जी मे जी आया। सभी दुरात्मा माहिल को गालियाँ दे देकर कोसने लगे।

इस भाँति शत्रुओं का नाश कर आल्हा,* ऊदल और मलखान आदि पिता की खोपड़ी लेकर सेना सहित महोबे पहुँचे।

---

* आल्हा और ऊदल शूरवीर थे। बाल्यकाल में ही इन्होंने मांडो नामक सुदृढ़ दुर्ग पर चढ़ाई की थी। वहां का राजा जम्बे बड़ा शूर वीर और योद्धा था। जम्बे के पुत्र करिंगा ने आल्हा ऊदल के बाप को मार डाला था। इस युद्ध में बड़े २ क्षत्रिय वीर काम आये। मीरा ताल्हन सैयद ने मित्र-हताओं से पूरा २ बदला लिया। ताल्हन यद्यपि यवन था परन्तु बचन का धनी था। वह दच्छराज के पुत्रों को पुत्र के समान मानता था। आल्हा-ऊदल की रक्षा के लिये सदैव कटिबद्ध रहता था। आल्हा-ऊदल भी उसे पिता के समान मानते थे।

महोबा वासियों ने विजयी वीरों का अपूर्व स्वागत किया। सारी नगरी में आनन्द का समुद्र उमड़ पड़ा, घर-घर मंगलाचार होने लगे। सुन्दर नगरी मंगल गानों से गूंज उठी। आल्हा और मलखान ने पिता की खोपड़ी का विधिपूर्वक अग्नि-संस्कार किया।

परमाल बालकों की वीरता पर मुग्ध हो गये। रानी मल्हना की प्रसन्नता का ठिकाना न रहा। तिलका भी अपने विजयी पुत्रों को देख फूल उठी। माहिल की बातों का भय जाता रहा।

मालखान बड़ा साहसी योद्धा था; उसने बड़ी वीरता से करिंगा का सामना किया। करिंगा भी बड़ा शूर वीर था। वह बड़ी देर तक मलखान का सामना करता रहा—परन्तु अंत में महारथी मलखान के हाथ से मारा गया। माड़ों के राजा जम्बे और अत्याचारी करिंगा को मारकर अल्हा, ऊदल और मलखान आदि महोबा लौट आये।

—राय श्रीहरि

आल्हा ऊदल और मलखान ने बाल्यकाल्य में ही अपने पिता के शत्रु करिंगा राय को मारा। करिंगा राय मशहूरपुरवा (महोबा) से पपीहा घोड़ा और पचशावद हाथी भी लूट लाया था। आल्हा ने उन्हें भी छीन कर अपनी फौज में भेजवा दिया। फिर अपने पिता की खोपड़ी को महल के कंगूरे पर से उतारकर वह उसे बड़े आदर से लेकर वापस आया।

—आल्हा विरदावली

इस *विजय से वनाफर वंश की धाक जम गई। शत्रुलोग-आल्हा ऊदल और मलखान की वीरता का सिक्का मान गये। बड़े २ शूर सामन्त उनके रणकौशल पर मुग्ध हो उठे और

मांड़ो विजय से महोवा का नाम अधिक प्रसिद्ध हुआ। देश देशान्तरों में इसकी ख्याति फैल गई। लोग इसे वीरभूमि कहकर पुकारने लगे। चन्देलों के पूर्वजों ने चन्देरी से अपनी ख्याति फैलाई थी-वहुत काल तक चन्देरी ही उनकी राजधानी रही। राजा परिमर्दिदेव ने वासुदेव परिहार को परास्त कर महोवा पर अधिकार किया। यद्यपि अपने युवापन में परिमर्दि देव ने वड़ी वीरता दिखाई परन्तु इतनी ख्याति नहीं हो सकी।

परिमर्दिदेव के अन्तिम शासन काल में महोवा संकटापन्न स्थिति में था। स्वयं राजा ने शस्त्र न ग्रहण करने की प्रतिज्ञा कर ली थी, दच्छराज और वच्छराज का अन्त हो चुका था। सेनापति ताल्हन वनरस जा चुके थे, चारो ओर भय की आशंका थी—आधीन राजे सिर उठा लिये। महावली पृथ्वीराज चौहान ने वच्छराज का सिरसा गढ़ छीन लिया था। इसी समय माँड़ो-विजय ने अपूर्व चमत्कार दिखलाया। सभी राजे भयभीत हो उठे। माँडो जीतना वड़ा कठिन काम था। वड़े २ शूरवीर हो चुके थे। वहाँ जम्बे का तेज मध्यान्ह सूर्य के समान तप-रहा था। वीर-वनाफरों ने कल्पान्त सूर्य के समान प्रगट हो मध्यान्ह रवि के तेज को नष्ट कर दिया।

—लेखक

उन्हें सर्दार मानने में अपना गौरव समझने लगे। बड़े-बड़े महोबिये शूर इनकी आज्ञा पर प्राणोत्सर्ग करने के लिये कटिबद्ध रहने लगे। राव-रंक सभी इन्हें प्यार की दृष्टि से देखते थे—वास्तव मे बनाफरों ने अपने सद्गुणों से लोगों को मोहित कर लिया था।

बनाफरों के बल को बढ़ते देख माहिल का हृदय दुखी था, वह दिनरात जला करता था। उसकी एकमात्र धारणा थी कि चन्देलों का नाश हो जाय। महोबा के दुर्ग पर परिहारों का शासन हो,—वह परमाल से बदला लेना चाहता था। चन्देल वीरों से युद्ध में लड़कर विजय पाना कठिन काम था। परिहारों की शक्ति क्षीण हो गई थी—माहिल कूटनीति के द्वारा नाश करना चाहता था। माहिल का इतना कलुषित हृदय होने पर भी चन्देले वीर उसकी ओर ध्यान नहीं देते थे। परमाल मल्हना का भाई समझकर उसके अपराधों को क्षमा कर दिया करता था। आल्हा और ऊदल उसे मामा जानकर कुछ नहीं कहते थे। इसी कारण उसका साहस बढ़ता गया।

चन्देल राज्य सुदृढ़ हो गया। आधीन राजा कर लेकर यथासमय आने लगे और दरबार की शोभा बढ़ाने लगे। महोबा की श्री बढ़ गई। चारो ओर बड़े-बड़े राज भवन और धर्म मन्दिर बन गये। कलाकौशलों की बड़ी उन्नति हुई। एकबार फिर व्यापार चमक उठा। देश देशान्तरों के व्यापारी आने लगे।

राजा परमालने वीर वालकों को प्रसन्न रखने के लिये यथोचित प्रवन्ध किया। उन्हें अपने दर्वार का प्रधान सर्दार और नायक वनाया। उन्हीं की मंत्रणा के अनुसार राज्य-संचालन होने लगा। आल्हा वड़ा बुद्धिमान, धीर और गम्भीर था। महात्मा अमर राय ने उसे यथोचित शिक्षाओं के साथ ही धार्मिक और नीति सम्बन्धी शिक्षायें भी दी थीं। वह राज-काज मे निपुण तथा नीति विशारद पण्डित था। राजा परिमाल कठिन कार्यों मे आल्हा से परामर्श लिया करते थे।

ऊदल और मलखान वड़े ओजस्वी थे। दोनो बुद्धिमान अवश्य थे—परन्तु उतने गम्भीर और शान्तिप्रिय नहीं थे। ये वीरता के प्रेमी थे, वल-वीर्य के पुजारी थे तथा पुरुषार्थ के पक्षपाती थे। रात-दिन शत्रुओं से वदला लेने पर तुले रहते थे। वास्तव मे वे शक्ति के उपासक थे।

बुद्धिमान आल्हा * भाइयो के व्यवहार से कुछ चिन्तित रहा करते थे। वे वीर होते हुये भी शान्ति के पुजारी थे। व्यर्थ रक्तपात से उनको मनोवृत्ति दूर रहती थी—वे रार वढ़ाना अच्छा नही समझते थे। उनका आदर्श वड़ा उच्च था। प्रजा उन्हे प्राणों से वढ़कर मानती थी—लोग उनके आदेशों

---

* आल्हा किसी से वैर विरोध करना नहीं चाहते थे, वे शान्ति-प्रिय थे। अपने वीर भाइयों को सदैव शान्त रखने की चेष्टा रखते थे।

—महाकवि जगनिक

को धर्मवाक्य समझते थे। ऊदल और मलखान भी उनकी आज्ञा पालन के लिये सदैव प्रस्तुत रहते थे।

ऊदल* और मलखान ने बड़ी वीरता दिखलाई। चारो दिशाओं में घूम २ कर दोनों वीरों ने परमाल की कीर्त्ति का विस्तार किया। कोई इनका सामना करने वाला न रहा। अवज्ञा करने वालों को यथोचित दण्ड दिया। प्राचीन नगरी धन-धान्य तथा सुख-शान्ति से पूर्ण हो गई।

—:—

---

* ऊदल और मलखान स्वाभाविक उग्र थे, उनमें क्षत्रियोचित भावनाएँ कूट २ कर भरी थीं। वे शत्रुओं का नाश करना ही अपना मुख्य कर्तव्य समझते थे। वीरता ही उनका बाना था। बाल्यपन में वे शक्ति-पूजा में [illegible] थे।

—लेखक

सिरसा का समर—धीरे-धीरे वर्षों वीत गये। महोवा शूर वीरों का निवासस्थान हो गया। घर-घर युद्ध विद्याकी शिक्षा दी जाने लगी। वच्चा वच्चा सैनिक वनने लगा। स्त्रियाँ भी वीर रस मे सन गईं। देश देशान्तरों के मल्ल आकर ठहरने लगे। राजा परमाल का दर्वार वीरो से खचाखच भर गया। आल्हा, ऊदल और महावली मलखान का प्रताप दिन २ वढ़ता ही गया।

कुछ दिन इसी प्रकार आनन्द के वीते—एक दिन मलखान ने आल्हा के पास जाकर शिकार खेलने की आज्ञा माँगी। आल्हा सभी भाइयों मे वुद्धिमान और योग्य थे। सभी भाई उन्हें पिता के समान मानते थे। उन्हें देशकाल और दशा का ज्ञान था उन्होने कहा—मलखान! मैं कहीं अकेले नहीं जाने दे सकता। तुम वात-वात मे रार वढ़ाते हो। तुम्हे परिस्थिति और परिणाम का ज्ञान नहीं है—तुम वीरता को ही सव कुछ समझते हो, परन्तु नहीं—वीरता विग्रह के लिये नहीं है—वीरता अधर्मी और अत्याचारियो के नाश के लिये है। ऊदल और तुमसे मैं सदैव डरा करता हूँ—कहीं ऐसा न हो कि तुमलोग वीरता के आवेश मे आकर अनर्थ कर डालो।

मलखान ने कहा—भाई! मै ऐसा न करूँगा।।मैं विग्रह के दुष्परिणाम को भलीभाँति जानता हूँ—व्यर्थ वैर-विरोध का फल अच्छा नहीं होता। आप मेरी ओर से निर्भय और निश्चिन्त

रहें, मैं दूसरों की दो बात सह लूँगा—आप विश्वास रक्खें। भाई के इसप्रकार कहने पर आल्हा ने आज्ञा दे दी।

प्रातःकाल होते ही मलखान आखेट के लिये निकल पड़ा। कबुतरी घोड़ी द्रुतवेग से चल पड़ी। कुछ ही देर मे यह सिरसा के भयानक वन में जा पहुंची। प्रतापी मलखान उस सघन वन में निर्भय घूमने लगा।

पाठकों! सिरसागढ़ बच्छराज के अधिकार में था। बच्छराज की मृत्यु के पश्चात् पृथ्वीराज ने उसे अपने अधिकार में कर लिया था। दिल्लीपति चौहान का पुत्र पारथ उस गढ़ का शासक था। दैवात् वह भी उसी वन में आखेट करता हुआ आ पहुँचा। इतने मे एक हरिण दिखाई पड़ा—पारथ ने उसे आगे बढ़कर घेरा।

बीहड़ वन में अचानक एक हरिण को देख मलखान अत्यन्त प्रसन्न हुआ। उसने शीघ्र ही एक बाण निकाल कर उस पर चला दिया। पैना बाण सनसनाता हुआ चल पड़ा और जंगल को चीरता हुआ हिरण के शरीर में घुस गया। मलखान के एक ही बाण मे हरिण लोट-पोट हो गया।

अपने शिकार को पृथ्वी पर गिरते देख पारथ की दृष्टि मलखान पर पड़ी। वह एकाएक आग बबूला हो उठा। उसकी आँखें लाल-लाल हो गईं। उसने गरजते हुए कहा—तुम कौन हो? मेरे राज्य के अन्दर तुम्हें शिकार खेलने का क्या अधिकार है? सीधे चले जाओ—नहीं तो अभी यमलोक भेज दूँगा—

पारथ की बातें सुन मलखान तड़प उठा—उसने गरजते हुए कहा—कभी नहीं—यह महोबा राज्य की सीमा है। तुम्हारा कौन राज्य है ? बताओ।

पारथ ने कहा—तुम नही जानते मैं महावली पृथ्वीराज का पुत्र हूँ—मुझे लोग पारथ कहते हैं। यह सिरसागढ़ पहले बच्छ-राज के अधिकार मे था। अब महोबा के राज्य में नहीं है—इस धोखे में नहीं रहना।

पारथ की बातें सुन मलखान हंस पड़ा। उसने कहा—तुमने भली बताई। मैं ही बच्छराज का पुत्र हूँ। यह सिरसागढ़ हमारा है। तुम शीघ्र खाली कर दो अन्यथा तलवार के वल से ले लूँगा। मैं तुम्हारे पिता से नहीं डरता।

मलखान के उत्तर से पारथ क्षुब्ध हो उठा। उसने तलवार म्यान से खींच ली। मलखान भी सतर्क था—दोनो महावली उस निर्जन बन मे भिड़ गये। दोनों की तलवारें धूप मे विद्युत के समान चमकने लगीं। देखते ही देखते निर्जन बन की कठोर भूमि कॉप उठी। पारथ ने बार २ चेष्टा की परन्तु बच्छराज के महावली पुत्र को नही हटा सका। महावली मलखान की मार से भग खड़ा हुआ।

वहाँ से सिरसा तीन कोस की दूरी पर था। पारथ भागता २ गढ़ में पहुँचा। उसे रात्रि भर नींद नहीं आई—महावली मल-खान की वीर मूर्ति उसके नेत्रों के सामने नाचने लगी। उसने

अपनी पराजय पर पश्चात्ताप करते हुए बड़ी कठिनता से वह रात बिताई।

इधर मलखान हरिण को लेकर महोबा पहुंचा। उसने पारथ की बातें भाइयों से कह सुनायीं। आल्हा ने कहा—मुझे पूर्व ही ज्ञात था—तुम और ऊदल दोनों बैर बढ़ाने वाले हो—व्यर्थ झगड़ा मोल लेना कौन सी बुद्धिमानी का काम है? महा प्रतापी पृथ्वीराज चौहान के विरुद्ध शस्त्र ग्रहण करना साधारण काम नहीं है। बुद्धिमानों को देशकाल का विचार कर कार्य करना चाहिये। पृथ्वीराज से बैर करना उचित नहीं। परन्तु आल्हा के सदुपदेश का प्रभाव नहीं पड़ा। मलखान अपनी टेक पर डटा रहा। उसने कड़कते हुए कहा—कदापि नहीं—मैं अकेला पृथ्वीराज का सामना करूंगा और बारबर अपनी पैत्रिक सम्पत्ति को छीनता रहूँगा।

ऊदल मलखान के पक्ष में हो गया। उसने आल्हा को सम्बोधन करते हुए कहा—दादा! शोक की बात है कि हम-लोगो के रहते हुए हमारी सम्पत्ति का भोग दूसरा कोई करे। मै मांडो के समान ही पृथ्वीराज से बदला लूँगा। सिरसा के गढ़ पर महोबा का झंडा फहरायेगा। हम कायर और कपूत नहीं है। पृथ्वीराज ने अत्याचार किया है—हमारे पिता और चाचा की कीर्ति का नाश किया है—मै उसके अत्याचार का अन्त कर दूँगा। इतना कहते-कहते ऊदल की क्रोधाग्नि भड़क उठी। देखते ही देखते उसका शरीर थरथर काँपने लगा—

ऊदल को इसप्रकार उग्र होते देख आल्हा ने बड़ी सावधानी से काम लिया। उन्होने कहा—ऊदल! शान्त हो। यह काम बड़ा कठिन है—इसके लिये महाराज परिमर्दिदेव से सम्मति लो—पश्चात् उचित उपाय करो। सभी आल्हा की बात मानकर महाराज परमाल के पास पहुंचे। मलखान की बातें सुन परमाल अत्यन्त चिन्तित और व्यग्र हो उठे। उन्होंने मलखान को बहुत समझाया परन्तु वह अपने हठ पर तुला रहा। अन्त में विवश हो सबो को युद्ध करना पड़ा।

भयंकर युद्ध आरम्भ हो गया। इस युद्ध में मलखान ने बड़ी वीरता दिखलाई—वह बिजली के समान चारो दिशाओं में घूम २ कर शत्रुओं का नाश करता हुआ दीपक के समान दिखाई देने लगा। ऊदल, ढेवा और आल्हा ने भी बड़ा पराक्रम दिखलाया। सिरसा की सेना भाग चली। सिरसा पहुंचकर पारथ ने किले का दरवाजा बन्द करा दिया। महोबियों ने उस सुदृढ़ दुर्ग को घेर लिया।

अपनी पराजय से पारथ बड़ा दुःखी हुआ और सहायता के लिये पृथ्वीराज को लिख भेजा। यह दुखदायी समाचार सुनते ही पृथ्वीराज के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने शीघ्र ही चौड़ा धाँधू और चन्दन को बुलाकर कहा—वीरो! सिरसागढ़ मे भयंकर युद्ध हुआ है—बनाफरो ने पारथ की सेना को नष्ट कर दिया है—शीघ्र जाओ और महोबा को गर्द में मिला दो।

राजाज्ञा पाते ही चौंड़ा तैयार हो गया। बात की बात में दिल्ली की चतुरंगिणी वाहिनी सज गई—सेनापति चौंड़ा की अधीनता में विशाल वाहिनी आकाश और पृथ्वी को एक करती हुई सिरसा आ पहुंची। पीछे से पृथ्वीराज ने धीरसिंह को भी पारथ की सहायता के लिये लिख भेजा। दोनों सेनाओं के आ जाने से पारथ अत्यन्त प्रसन्न हुआ।

दूसरे ही दिन युद्ध का बाजा बज उठा। शूरवीरों की तलवारें रणभूमि में चमकने लगीं। दिल्लीवालों ने बड़ा पराक्रम दिखलाया। पारथ मलखान से भिड़ गया। चन्दन ऊदल से लड़ने लगा। धीरज और ताल्हन, आल्हा और चौड़ा तथा धांधू और ढेबा का घनघोर युद्ध होने लगा। वीरों की हुंकार से दिशायें काँप उठीं। पराक्रमी रणधीरों ने प्रलय मचा दी। सर्वत्र शोणित की धारा बह चली।

एक प्रहर तक वीरों की भयंकर लड़ाई होती रही। पारथ मलखान से हार गया, चन्दन ऊदल की मार से घबड़ा उठा, चौड़ा आल्हा से, धीरज ताल्हन से और धाँधू ढेबा से हारकर भाग खड़े हुये।

देखते ही देखते महोबियों ने किले पर आक्रमण कर दिया। गढ़ का वज्र फाटक तोड़ डाला गया। पारथ दिल्ली भाग गया। महोबिये वीर निर्भय किले में घुस गये। सिरसा के दुर्ग पर महोवा का झंडा फहरा उठा।

आज मलखान ने अपनी पैत्रिक सम्पत्ति प्राप्त कर ली—चौहान की चतुरंगिणी काम नहीं दे सकी। पारथ भागता हुआ दिल्ली पहुँचा और हाथ जोड़कर पिता से पुनः आक्रमण करने के लिये कहा—परन्तु पृथ्वीराज ने कुसमय जान आक्रमण करना स्थगित कर दिया।

सिरसा विजय की बात सुन महोबावाले अत्यन्त प्रसन्न हुये। मलखान ने सिरसा को नये सिरे में बसाया।

कुछ ही दिनो मे कोट सुदृढ़ और स्वरक्षित बन गया। यथा-समय मलखान का राज्याभिषेक हुआ।

नैनागढ़ का युद्ध—उत्तर भारत में नैनागढ़* बड़ा सुदृढ़ दुर्ग था, उस समय राजा नैपाली वहाँ का शासक था। उसकी वीरता की धाक चारो दिशाओं मे फैली थी। लोग

---

* वर्तमान चुनारगढ़ का नाम नैनागढ़ था, अब भी किले में आल्हा के विवाह का चिन्ह दिखलायी पड़ता है। सहस्रों यात्री आल्हा का विवाह-मंडप देखने के लिये आते हैं।

नैनागढ़ का नाम सुनते ही कांप उठते थे। राजा के जोगा, भोगा और विजयी नामक तीन पुत्र तथा सोनवाँ नाम की एक सुन्दरी कन्या थी।

धीरे २ सोनवाँ बारह वर्ष की हुई। उसकी सुन्दरता की कीर्ति चारो दिशाओं में फैलने लगी। बड़े २ राजकुमार उससे विवाह करने की इच्छा प्रकट करने लगे।

सोनवाँ जैसी सुन्दरी थी वैसी ही बुद्धिमती भी थी। राजा ने अपनी गुणवती सुन्दरी पुत्री को विवाह योग्य देख चारो* नेगियों को बुलाकर कहा—मेरे पुत्र विजयी के साथ तीन लाख का टीका लेकर वर ढूँढ़ने के लिये जाओ। उत्तम कुल देखकर वर ठीक करना—महोबा कभी न जाना—क्योंकि बनाफरों की जाति ओछी है। टीका चढ़ाते समय हमारा सन्देश सुनाना—कि पहले युद्ध में विजय प्राप्त करने पर विवाह होगा।

चारो नेगी विजयी के साथ चल पड़े। कुछ दिनों में दिल्ली पहुँचे। राजा नैपाली का सन्देश सुन पृथ्वीराज ने टीका लौटा दिया। इसके बाद वे कन्नौज गये। जयचंद ने भी टीका स्वीकार नहीं किया। चारो नेगी महोबा को छोड़

---

* नाऊ, वारी, भांट, पुरोहित। उस समय में ये चारों नेगी कहलाते थे। क्षत्रियों में यह प्रथा थी कि या तो स्वयंवर के द्वारा विवाह करते थे अथवा नेगियों को ढूँढ़ने के लिये भेजते थे। चारो नेगी उत्तम वर ढूंढ़कर टीका चढ़ा आते थे।

और सभी राजाओं के यहाँ गये। परन्तु किसी ने स्वीकार नहीं किया। अन्त मे सभी हताश हो लौट आये।

अपने नेगियों को विमुख लौटते देख राजा ने स्वयंवर* का विचार किया। राजा नैपाली ने राज्य के सीमा पर धौंसा रखवा कर उसकी रक्षा के लिये दश सहस्र शूरों को नियुक्त कर दिया। उसने प्रतिज्ञा की कि जो वीर दश सहस्र शूरों को परास्त कर धौंसा बजा देगा उसी के साथ पुत्री का विवाह करूँगा।

उस समय आल्हा की वीरता और बुद्धिमानी की चर्चा चारो ओर फैल रही थी—किसी प्रकार सोनवाँ के कानो मे भी पहुँची। उसने निश्चय कर लिया कि मैं आल्हा से ही विवाह करूँगी। परन्तु नैपाली बनाफरो को नीच समझते थे।

---

*उस समय क्षत्रियों में स्वयंवर की प्रथा थी, देश २ के राजा एकत्र होते थे, कन्या का पिता कुछ प्रतिज्ञा करता था—उसे पूर्ण करने वाले वीर के गले में जयमाल डाली जाती थी अथवा कन्या जिसे चाहती थी उसे पति बनाती थीं।

उस शक्ति के युग में स्वयंवर की प्रथा दूषित हो चली थी। उद्दण्ड राजे बरबस कन्या को प्राप्त करने की चेष्टा करते थे। बहुधा स्वयंवर में लड़ाइयाँ हुआ करती थी, इसीलिये पुत्री उत्पन्न होना अशुभ माना जाता था। पानी वाले क्षत्रिय दूसरे को पुत्री देना अपना घोर अपमान समझते थे। उस समय स्वयंवर और विवाह के कारण बड़ी बड़ी लड़ाइयाँ हुईं जिनमें लाखों वीर काम आये।

—चन्द बरदाई।

पिता को प्रतिकूल देख सोनवाँ ने अपना समाचार आल्हा के पास लिख भेजा—मैं आपको अपना पति मान चुकी हूँ। आपसे विवाह न होने पर मैं शरीर त्याग दूँगी। मेरी रक्षा कीजिये। बुद्धिमान सोनवाँ की सुन्दरता की कीर्ति चारों ओर फैल ही चुकी थी। बनाफर* वीर उसका उद्धार करने के लिये तैयार हो गये।

दूसरे ही दिन महोबा की शत्रु-संहारिनी सेना सज गई। शूर सामन्त नैनागढ़ जाने के लिये तैयार हो गये। कूँच का डंका बज गया। वैवाहिक विधि से निवृत्त हो आल्हा अपने घोड़े पर जा बैठे। ऊदल, मलखान, ढेवा, ब्रह्मा, रणजीत,

---

* बनाफरों ने सोनवाँ की प्रार्थना स्वीकार कर ली। आल्हा में लिखा है कि सोनवाँ ने तोता के द्वारा अपना समाचार भेजा था परन्तु यह बात नहीं है—जगनिक कहता है कि नैनागढ की राजकुमारी का एक गुप्त दूत ऊदल के पास आया और एक पत्र दिया—उसमें सभी बातें लिखी थीं। पत्र में शपथ दिया गया था।

—ऊदल ! तुम महाबली हो। सती धर्म का विचार कर मेरी लज्जा रक्खो। अब मैं दूसरे की पत्नी नहीं हो सकती। हमारे पिता बनाफरों को नीच समझते हैं—वे राजी से कभी विवाह न करेंगे। मुझे तुम्हारा बड़ा भरोसा है—अपने क्षत्रियत्व की रक्षा करो, अपने अस्त्र धारण की लज्जा करो।

—जगनिक।

अगनिक आदि महाबली पीछे २ चलने लगे। इस प्रकार सात दिन चलकर सभी नैनागढ़ की सीमा पर पहुँच गये। कोसों में सेना का पड़ाव पड़ गया। शूर सामन्त अपने २ हथियार खोल विश्राम करने लगे।

परन्तु महाबली ऊदल अकेले आगे चल पड़े। द्रुतगामी बेंदुला—नालों, गढ़ो और पगारो को पार करता हुआ उस स्थान में पहुँचा जहाँ धौंसा रक्खा था और जिसकी रक्षा दश सहस्र शूरवीर कर रहे थे। किसी को स्वप्न मे भी यह ध्यान नही था कि कोई शत्रु आ रहा है। ऊदल का बेंदुला शूरवीरों के दल को चीरता हुआ एकाएक वहाँ पहुँच गया। तीव्रगामी अश्व पर देवताओं के समान एक तेजस्वी पुरुष को निःशंक बैठे आते देख सभी भयभीत हो उठे। पराक्रमी ऊदल ने धौंसा बजा दिया। देखते ही देखते दश सहस्र शत्रुओं ने घेर लिया। वीरो के गगन भेदी नाद से दिशायें काँप उठीं।

ऊदल ने अपूर्व रण-कौशल दिखलाया। उस वीर ने घोड़े की लगाम दाँतों से पकड़ ली। दोनों हाथों से खड्ग चलाने लगा, बेंदुला ने सैकड़ों शूरों को घायल कर दिया, पश्चात् शत्रुओं को चीरता हुआ बड़े वेग से निकल गया। ऊदल के निकल जाने पर कुछ शूर सामन्त नैनागढ़ पहुँचे और धौंसा बज जाने का हाल कह सुनाया। राजा नैपाली ने अपने पुत्र जोगा को खबर लाने के लिये भेजा। उसने आकर महोबियो का हाल कह सुनाया।

बनाफरों की ढिठाई देख राजा नैपाली जल उठा। उसने शीघ्र आज्ञा दी कि नीच महोबियों को मार भगाओ। राजाज्ञा पाते ही जोगा-भोगा एक बड़ी सेना लेकर चल पड़े। उधर बनाफर वीर भी तैयार ही थे। वे भी रौद्ररूप धारण कर शत्रुओं पर टूट पड़े—

महाभयंकर युद्ध हुआ। सहस्रों शूरवीर सदा के लिये परलोकगामी हुये। जोगा, भोगा और विजयी ने बड़ी वीरता दिखलाई प्रतापी ऊदल और मलखान के सन्मुख एक न चली। पाटली-पुत्र का राजा पूर्ण भी नैपाली की सहायता के लिये आ पहुंचा था। लड़ते २ ऊदल ने जोगा को, मलखान ने भोगा को और ढेबा ने विजयी को बन्दी कर लिया। जगनिक ने पूर्ण को पराजित किया। चारो सेनापतियों के बन्दी होते ही नैनागढ़ की सेना भाग खड़ी हुई। नैनागढ़ में हाहाकार मच गया—

बनाफरों के नैनागढ़ जाने का समाचार सुन माहिल जल उठा। वह तत्काल उस ओर चल पड़ा। माहिल को देखते ही नैपाली ने बड़ा आदर किया और पूछा—वीर परिहार, अब मैं क्या करूँ ? मुझे उपाय बताइये।

माहिल ने कहा—राजन ! महोबिये बड़े वीर हैं। तुम्हारे तीनों पुत्र और पराक्रमी पूर्ण बन्दी हो गये। तुम इनसे पार नहीं पा सकते। एक युक्ति है। तुम विश्वास दिलाकर ब्याह के बहाने उन्हें घर में लिवा लाओ, और घेरकर सबों को मार

डालो। याद रहे, बनाफरों से सम्बन्ध करने पर तुम्हें भी लोग नीच समझेंगे। राजा के मन में बात आ गई। वह शीघ्र ही माहिल को विदा कर आल्हा के पास पहुँचा और मीठी २ बातें करते हुये बोला—आप लोग शूरवीर हैं। आपकी वीरता से हम अत्यन्त प्रसन्न हैं, पुत्रों को मुक्त कर दीजिये। हम पुत्री का विवाह करने के लिये तैयार हैं।

नैपाली की बातें सुन मलखान ने कहा—शूरवीरों! तैयार हो जाओ। नैनागढ़ के कैदियों का बंधन खोल दो। मलखान की बात समाप्त होने पर राजा ने कहा—वीर मलखान! वहाँ शूरवीरों की आवश्यकता नहीं है। अकेले आल्हा को भेजो। मैं शपथपूर्वक कहता हूँ—किसी प्रकार का अनिष्ट न होगा।

वीर महोबिये राजा की बातों में आ गये। उन्हे माहिल का कुचक्र नहीं मालूम था। आल्हा—ऊदल, मलखान, सुलखान, ढेबा, सन्ना, ताल्हन, रूपन और चारों तेगियों के साथ चल पड़े। किले में मंडप गड़ने लगा और सखियाँ मंगलाचार गाने लगीं। इधर नैपाली ने सलाह कर दो हजार वीरों को कोठरियों में छिपा दिया। आल्हा बुलाये गये। किले का दरवाजा बन्द कर दिया गया। विवाह कार्य्य होने लगा। थोड़ी देर में भाँवर का समय आया। प्रत्येक भाँवर के समय जोगा-भोगा और विजयी ने आल्हा पर खड्ग प्रहार किया जिसे ऊदल, मलखान और ढेबा ने बचा लिया।

विवाह कार्य समाप्त होते २ कोठरियों के छिपे हुये वीर

निकल पड़े और तलवार खींचकर उनकी ओर बढ़े। राजाके इस आचरण पर ऊदल और मलखानको बड़ा क्रोध आया। वाल्हन और ढेबा ने अपनी २ तलवारें खींच लीं, रूपन और मन्ना ने वीरता दिखलाई, देखते ही देखते विवाह मंडप वीरों की लाशों से पट गया। इस प्रकार लड़ते हुये महोबियों ने पुनः जोगा, भोगा और विजयी को बन्दी कर लिया।

इधर किले में कोलाहल सुन महोबा की सेना दौड़ पड़ी, द्वार रक्षकों ने रोकना चाहा—परन्तु कुछ न कर सके। विजयोन्मत्त सैनिक फाटक तोड़ किले में घुस पड़े। अब क्या था ? महो-बियों ने दो सहस्र वीरों का अन्त कर दिया। उसी बीच सोनवाँ को पालकी पर बिठा लिया और ले चले। किले से बाहर निकलकर बनाफरों ने नैपाली के पुत्रों को छोड़ दिया।

इस अन्तिम पराजय से नैपाली लज्जित हो गया और लोकनिन्दा के भय से पुनः आल्हा-ऊदल को निमन्त्रित किया। इसबार उसने बड़े प्रेम से लोगोको ठहराया। उनका बड़ा आदर सत्कार किया। जोगा, भोगा और विजयी ने बनाफरों की बड़ी प्रतिष्ठा की। चलते समय राजा ने अपार धनराशि, गज, अश्व रथ, तथा दास दासियाँ दहेज में दीं। सभी कुशलपूर्वक महोबा पहुँचे। बड़ा महोत्सव हुआ। सोनवाँ को देखकर देवल देवी, तिलका और मल्हना बड़ी प्रसन्न हुईं। सभी उसके रूप और गुण की सराहना करने लगीं।

पथरीगढ़ की लड़ाई—महोबा मे सभी सुख से रहने लगे। एक दिन आखेट से लौटते समय मार्ग में ऊदल को पाँच आदमी मिले। उनमे चार नेगी थे और एक राजपुत्र के समान सुन्दर युवा पुरुष था। ऊदल ने उनका परिचय पूछा। पहले तो उनलोगो ने बताने मे आनाकानी की परन्तु विशेष आग्रह करने पर कहना ही पड़ा। उस सुन्दर युवा ने कहा—हम पथरीगढ़ के राजकुमार हैं—मेरा नाम सूरजमल है। अपनी बहन का टीका चढ़ानेके लिये नेगियोके साथ आये हैं। सभी राजाओ के पास गये—परन्तु किसी ने स्वीकार नहीं किया, अब अपने देश को लौटे जा रहे हैं।

ऊदल ने कहा तुमलोग महोबा चलो—वहाँ एक योग्य और शूरवीर वर है—उसे ही टीका चढ़ा दो। पिता की आज्ञानुसार सूरजमल महोबा जाना नहीं चाहता था परन्तु ऊदल के विवश करने पर उसे जाना पड़ा। मलखान को टीका चढ़ा दिया गया। राजा परमाल ने सबो का बड़ा आदर सत्कार किया।

टीका चढ़ने की बात सुनते ही माहिल व्यग्र हो उठा। वह शीघ्र पथरीगढ़ पहुँचा और राजा गजराज से मिला, राजा गजराज ने परिहार का बड़ा मान किया। कूटनीतिज्ञ माहिल ने कहा—महाराज! महाअनर्थ हो गया। टीका महोबा में चढ़ गया। बनाफरों की जाति ओछी है—वहाँ सम्बन्ध हो जाने पर आपको लोग नीची दृष्टि से देखेंगे—क्षत्रियों मे आपका

बड़ा ही उच्च स्थान है। किसी प्रकार यह विवाह होने न पावे। माहिल की इसप्रकार की बातें हो ही रही थीं कि सूरजमल नेगियों के साथ आ पहुँचा।

महोबा से टीका चढ़ने की बात सुन राजा अत्यन्त दुःखी हुआ। पिता को अधीर एवं व्यग्र देख सूरजमल ने कहा—पिता जी आप धैर्य रखें, महोबा वालों को आने दें। हम सबों का सिर कटवा लेंगे। सूरज की बातें सुन माहिल अत्यन्त प्रसन्न हुआ और गजराज को प्रणाम कर लौट गया।

यथासमय बरात की तैयारियाँ होने लगीं। दिल्ली, कन्नौज, राजस्थान तथा मध्यप्रान्त के राजाओं को निमंत्रण भेजा गया। सभी शूर सामन्तों के साथ महोबा पहुंच गये। माहिल भी आ डटा। बारात सज गई। मांगलिक कार्य्य समाप्त होते ही सभी चल पड़े। पथरीगढ़ से आठ कोश की दूरी पर वीरों ने पाड़व डाल दिया। सवेरा होते ही माहिल उठा और शिकार का बहाना कर पथरीगढ़ पहुंचा।

गजराज माहिल को देख अत्यन्त प्रसन्न हुए—उन्होंने कुशल समाचार पूछा। उसने बरात का हाल कहते हुए कहा—राजन्! महोबिये बड़े वीर हैं—इनसे लड़कर विजय नहीं पा सकते। तुम स्वयं जाओ और उन्हें विश्वास दिलाकर राज्य में ले आओ। जब यहाँ आकर जनवाँसा में ठहर जाँय तब वर को घर लाकर मार डालना और जनवाँसा वालो को जहर खिला देना—

ऐसा ही हुआ। गजराज ने सूरज और कान्ता को भेजा। महोबा की सारी सेना पड़ाव पर ही रह गई। प्रधान २ शूर-वीर—वर और नेगी सहित पथरीगढ़ आ पहुँचे। जनवाँसे में ठहर गये। शीघ्र ही राजा ने विवाह के लिये मलखान को बुलवाया। महोबियों ने विश्वास मे आकर अकेले मलखान को गढ़ में भेज दिया।

मलखान के जाते ही बहुत से नौकर गढ़ से जनवाँसा वालों के लिये शर्बत और मिठाइयाँ ले आये। महोबियों को ऐसी आशा न थी। वे फूलकर कुप्पा हो उठे—सभी भोजन करने के लिये बैठे। माहिल तो जानता ही था—पहले ही नौ-दो ग्यारह हो चुका था। तत्काल छींक हुई—ढेबा ने रोककर कहा—ठहरो मुझे सन्देह मालूम होता है ? मिठाइयो की परीक्षा किये बिना मैं किसी को खाने न दूँगा।

शूर-सामन्त एकाएक चौंक पड़े—यह क्या ? अरे! मिठाइयो के भीतर तो जहर है। फेंको-फेंको, मारो, मारो की ध्वनि से दिशायें गुँज गईं। यह हाल देख पथरीगढ़ के नौकर-चाकर भाग खड़े हुए। भयंकर विश्वासघात से सर्दारों की आँखें लाल हो उठीं—सभी बदला लेने के लिये तैयार हो गये।

इधर माहिल पथरीगढ़ में जाकर राजा को समझा-बुझाकर मलखान को कैद करवा लिया। कुछ देर पश्चात् जनवाँसे में आ पहुंचा और आल्हा-ऊदल को गजराज पर बिगड़ते देख बोला—बेटा! इसमे राजा का दोष नहीं है—चिन्ता न करो, भगवान

हमलोगों के रक्षक हैं, मलखान का विवाह हो जाने दो—हम गजराज से बदला लेंगे। तुमलोग निर्भय और निश्चिन्त रहो। तुमलोगो के लिये हमारा शिर तैयार है। इसप्रकार इधर-उधर की बातें कर माहिल ने सबों को शान्त किया।

मलखान ने गढ़ में बड़ी वीरता दिखलाई। परन्तु अकेला कर ही क्या सकता था? शत्रुओं ने उसे बन्दी कर लिया। महाबली मलखान अन्धकूप मे डाल दिया गया।

राजा गजराज की पुत्री गजमती, सोनियाँ के समान ही सुन्दरी और बुद्धिमती थी। मलखान के साथ टीका चढ़ने की बात सुनते ही उसने उनको अपना पति मान लिया था। वास्तव मे वह सती कन्या थी। मलखान के अन्धकूप में डालने की बात सुनते ही वह व्यग्र हो उठी। वह मलखान पर अपना सर्वस्व न्योछावर कर चुकी थी। मलखान की मुक्ति के लिये अर्धरात्रि में उस अन्धकूप के पास पहुँची और कूयें मे रस्सी डालकर बोली। आर्यपुत्र! बाहर निकल आइये, हमारा विश्वास कीजिये, मैं आपकी अर्धाङ्गिणी हूँ।

गजमती की बात सुन मलखान ने कहा—गजराज नन्दिनी! मैं वीरता को कलंकित नहीं कर सकता, मैं तुम्हारे विचार से प्रसन्न हूँ—परन्तु तुम्हारी सहायता से मुक्त होना नहीं चाहता। यदि तुम प्रेम करती हो—मुझे अपना समझती हो तो यह समाचार जनवाँसा में पहुँचा दो। मेरा वीर भाई ऊदल आकर मुझे मुक्त कर लेगा।

गजमती ने मलखान की बात मान ली,—सवेरा होते ही वह अपनी मालिन को बुलाकर बोली—मालिन! मैंने तुमको बहुत कुछ दिया है-इस समय तुम हमारी सहायता करो। इस पत्र को किसी प्रकार महोबा के शिविर मे आल्हा के पास पहुँचा दो। मालिन ने कहा—बेटी! बड़ा कठिन काम है, गढ़ का द्वार बन्द रहता है, बिना तलाशी दिये कोई बाहर भीतर नहीं आ-जा सकता। गजमती की सलाह से मालिन पत्र को जूड़ा में रखकर चली। द्वारपालों ने उसकी तलाशी ली परन्तु कुछ न मिलने के कारण छोड़ दी गई।

मालिन लोगो की दृष्टि से अपने को बचाती हुई शीघ्र शिविरमें जा पहुँची। माहिलने उसे घबड़ाते हुए आते देख अपने पास बुलाकर समाचार पूछा। मालिन ने कहा मैं आल्हा-ऊदल के पास गजराज नन्दिनी का समाचार लेकर आयी हूँ। माहिल ने कहा—मैं ही आल्हा हूँ, कहो—क्या बात है? मालिन ने पत्र दिया—पत्र पढ़ते ही परिहार बड़ा क्रोधित हुआ और मालिन को मारने लगा।

मालिन रोती हुई भाग चली—इतने मे ऊदल आ पहुँचे और उससे रोने का कारण पूछने लगे—मालिन आद्योपान्त घटना कह सुनाई। रोते-रोते उसने यह भी कह दिया कि आल्हा ने पत्र पढ़कर मुझे मारा है।

ऊदल ने कहा—बता, किस तम्बू मे तू गई थी—मालिन ने बता दिया। ऊदल माहिल की करतूत समझ गये। मामा के

इस दुर्व्यवहार से उन्हें अपार दुःख हुआ। वे माहिल से क्रोध-पूर्वक बोले—मामा ! क्या यही सज्जन पुरुषों का कर्तव्य है। तुम्हे ऐसा करना उचित न था। ऊदल को इसप्रकार क्रोध करते देख माहिल बोला—बेटा ! तुम नहीं जानते, वह जोर २ से बोलती हुई आ रही थी—कहीं शत्रु सुन लेते तो यह पकड़ ली जाती, उसके पकड़ जाने पर यह समाचार कैसे मिलता। मैंने इसीलिये दण्ड दिया है। बेटा ! अब शीघ्र मलखान को छुड़ाओ। हम तैयार हैं।

मारे क्रोध के वीरों की भुजायें फड़क उठीं। सहस्रों शूर एक साथ गरज उठे। चारो ओर पैनी नंगी तलवारें चमकने लगीं। वीरों की हुँकार से दिशायें भर गईं—देखते ही देखते महोबियों की विशाल वाहिनी ने पथरीगढ़ को घेर लिया, पथरीगढ़ के सैनिक भी बुर्जों पर आ डटे।

सैकड़ो भुशुण्डियाँ अग्नि उगलने लगीं, तुपकों की मार से सहस्रों सैनिक बात की बात में गिरने लगे, गजराज के सैनिकों ने किले के छिद्रों से खूब अग्निवर्षा की। महोबिये घबड़ा उठे। भगदड़ मच गई।

शत्रु का विकट विक्रम देख प्रतापी ऊदल की भृकुटि बन गयी—उन्होंने गोलन्दाजों को बुलाकर कहा—शीघ्र गढ्ढा खोदकर बारूद भरो और किले की दीवार उड़ा दो। गोलन्दाजों ने वैसा ही किया—देखते ही देखते किले की बीसों हाथ सुदृढ़ दीवार उड़ गई। अब क्या था—महोबिये पिल पड़े।

गढ़ के सैनिकों ने डटकर सामना किया परन्तु महोवियों के विकट आक्रमण के सन्मुख उनके होश उड़ गये। प्रतापी ऊदल ने पुत्रो सहित गजराज को वन्दी कर लिया। उसी समय मलखान अन्धकूप से निकाल लिया गया।

राजा गजराज ने मलखान के साथ पुत्री का विवाह करना स्वीकार किया। वीर ऊदल ने पुत्रों सहित राजा को वन्धन-मुक्त कर कहा—देखो अब कभी विश्वासघात न करना। विवाह की तैयारियाँ होने लगी।

इसी समय अवसर पाकर माहिल गजराज के पास पहुँचा। उसने कहा-अफसोस! क्या करूँ विवश हूँ—नाम डूब जायगा। महाराज एक और युक्ति है– विवाह के पूर्व ही घरो मे शूरों को छिपा दीजिये—जब लोग मंडप के नीचे बैठ जॉय तब इन दुष्टों को दण्ड दीजिये—इनसे लड़कर विजय पाना कठिन ही नहीं वरन् पूर्ण असम्भव है। मैं आपका हितैपी हूँ, मे नही चाहता कि पथरीगढ़ का नाम डूब जाय। राजा को माहिल की बात भा गई। उसने वैसा ही किया।

यथासमय महोविये वुलाये गये। पुरोहितो ने विधिपूर्वक विवाह कराया। भॉवर के समय सूरज और कान्ता ने मलखान पर प्रहार किया। ऊदल और सुलखान ने उनके प्रहार को ढाल पर रोक लिया। इतने मे छिपे हुये वीर निकलकर उनपर टूट पड़े। महोविये भी उठ खड़े हुये और वैरियो से लड़ने लगे।

प्रतापी ऊदल ने सांगों को गाड़ कर तलवारों से छा दिया। वीर मलखान के अन्तिम भाँवरे इसी मंडप में पड़े।

इसप्रकार बनाफरों ने तलवार के बल से मलखान का विवाह किया। माहिल चुगली करता ही रहा परन्तु इन प्रतापी वीरों का अनिष्ट न हो सका। गजमती को विदा कराकर साथ ही ले आये—महोबा मे घर-घर मंगलाचार होने लगा। कुछ ही दिनो के बाद सुलखान का विवाह भी कमायूँ के राजा रत्नसिंह की पुत्री रत्नावली से हो गया।

—o—

चन्द्रावली की चौथ——धीरे-धीरे श्रावण का महीना आ गया। काले काले बादल आकाश में छा गये, कभी पानी बरसने लगा और कभी बिजुलियाँ चमकने लगीं। वायु सन् सन् शब्द करते हुये बह चली, पृथ्वी की गर्मी शान्त हो गई, वृक्षों के पत्ते लहलहा उठे। लहरें पर लहरें आने लगीं। समय बड़ा मनोहर हो गया।

नगर की कन्यायें ससुराल से आने लगीं। वर्षा ऋतु में ही उनके त्योहार होते हैं। सभी ने रंग-विरंगे कपड़े पहनकर त्योहार मनाया और सखियों के साथ झूले झूलने लगीं। यह दृश्य देख रानी मल्हना का हृदय टूक २ हो उठा—वह जोर २ से रो पड़ीं।

मल्हना को रोते देख ऊदल का हृदय द्रवित हो उठा। उस महावली ने रानी से रोने का कारण पूछा। मल्हना बुद्धिमान स्त्री थी। वह यथार्थ कारण न बताकर टल गयी। मल्हना के इस व्यवहार से ऊदल और भी दुखित हुआ। उसने कहा—माँ मुझे अपने रोने का कारण बताओ अन्यथा मैं प्राण त्याग दूँगा। अन्त में रानी को बताना ही पड़ा। वह बोली—बेटा! श्रावण का महीना है—सभी कन्यायें ससुराल से मैके आ रही हैं—कन्याओं को रंग-विरंगे कपड़े पह कर त्योहार करते देख मेरा हृदय टूक २ हो रहा है—तुम्हारी वहन चन्द्रावली* के गये १२ वर्ष बीत गये। आजतक उसकी चौथ नहीं हुई।

ऊदल ने कहा—माँ! चिन्ता न करो, हम बौरीगढ़ जाकर विदा करा लावेंगे। तुम सामग्रियों का प्रवन्ध करा दो। यदि मैं पहले जानता तो अवश्य ही वहन को विदा करा लाता।

ऊदल तैयार हो राजा के पास पहुँचे और अपना अभिप्राय कह सुनाया। ऊदल की बात सुन परमाल ने कहा—नहीं बौरीगढ़ जाने की कोई आवश्यकता नहीं। चन्द्रावली से मुझे कुछ काम नहीं है।

राजा को बिगड़ते देख ऊदल ने नम्रता से कहा—महाराज!

---

* चन्द्रावली परमाल की पुत्री थी। वह बौरीगढ़ के राजकुमार इन्द्रसेन से ब्याही गई थी।

—भीखादेव

आप चिन्ता न करें। किसी प्रकार का वैर विरोध नहीं होगा। हम शान्तिपूर्वक विदा करा लावेंगे। मल्हना की सम्मति से राजा परमाल राजी हो गये। उन्होंने ऊदल को जाने की आज्ञा दे दी। राजा ने चलते समय ऊदल से कहा—पहले तुम महाराज पृथ्वीराज के पास जाओ—जैसे वे कहें वैसा ही करना। महाबली ऊदल भेंट की बहुमूल्य सामग्रियों को लेकर चल पड़े।

ऊदल की यात्रा का वृतान्त सुन माहिल चिन्वित हो उठा। वह तत्काल घोड़ी पर चढ़ा और ऊदल का अनिष्ट करने के लिये दिल्ली पहुँचा। दिल्लीश्वर ने बड़े प्रेम से उनका सत्कार किया और कुशल समाचार पूछा। माहिल ने कहा—महाराज आप चुपचाप बैठे हैं। चन्देलों ने दिल्ली लूट लेने का विचार किया है। पहले उनलोगों ने ऊदल को भेजा है—पीछे मलखान आवेगा। ऊदल बौरीगढ़ जाने का बहाना करेगा आप समझ जाइयेगा।

माहिल की बे सिर पैर की बातें सुन पृथ्वीराज ने कहा—हमने चन्देलो का क्या बिगाड़ा है? सिरसा की लड़ाई हमारे कारण हुई थी। हमने वास्तव मे अत्याचार किया था—उनलोगो ने अपनी पैत्रिक सम्पत्ति प्राप्त कर ली यह देखकर मैं प्रसन्न हूँ। माहिल तुम बड़े झूठे हो। व्यर्थ एक दूसरे से झगड़ा लगाया करते हो—पथरीगढ़ में हजारों शूरों की आहुतियाँ तुम्हारे ही कारण हुईं। तुम्हीं ने अपनी बहनों को वैधव्य का दण्ड दिया है। तुम्हारे जैसे मनुष्य के लिये संसार में रहना उचित नहीं।

पृथ्वीराज की खरी बातें सुन माहिल लज्जित हो चल दिया।

महाबली ऊदल दिल्ली पहुँचा। पृथ्वीराज ने हृदय से लगाकर उसके आने का कारण पूछा। ऊदल ने बौरीगढ़ की कथा कह सुनायी। उन्होंने ऊदल को बहुत समझाया। ऊदल की मौसी आज्ञा देवी (पृथ्वीराज की स्त्री) ने भी बहुत कुछ कहा,परन्तु ऊदल—कर्मवीर ऊदल अपने संकल्प पर डटा रहा। अन्त मे महाराज पृथ्वीराज ने बीरशाह को भेंट के लिये बहु-मूल्य रत्न और आभूषण देकर विदा किया।

बौरीगढ़ की सीमा पर पहुँचकर ऊदल ने बीरशाह को अपने आने की सूचना दी। ऊदल का आगमन सुन बीरशाह अत्यन्त प्रसन्न हुये। उन्होने शीघ्र नगर सजाने की आज्ञा दी! पश्चात् अगवानी के लिये अपने पुत्रो को भेजा। सभी हाथों हाथ ऊदल को ले आये। बौरीगढ़वालों ने ऊदल का अभूतपूर्व स्वागत किया। राजा ने पुत्रो सहित ऊदल को हृदय से लगाया। इस प्रकार अहार के अनन्तर ऊदल ने भेंट की बहुमूल्य सामग्रियाँ राजा के सामने रखवा दीं तथा राजा परमाल का पत्र हाथ में दिया। बीर शाह उन बहुमूल्य रत्नों को देख तथा पत्र को पढ़ अत्यन्त प्रसन्न हो बोले—आज बारह वर्ष बीत गये। तुमलोगों ने सुधि तक न ली। प्यारे ऊदल! हम चौथ से सन्तुष्ट हैं। दो एक दिन रहकर बहन को विदा करा ले जाओ। इसी बीच मैं विदाई का प्रबन्ध कर लेता हूँ।

राजा से मिलकर ऊदल रंग महल में गये। उन्होंने बीर-

शाह की स्त्री के सामने भेंट रख दी। वह उत्तम रत्नों को देख प्रसन्न हो उठी। चन्द्रावली भी आकर भाई से मिली।

इधर दुरात्मा माहिल भी घोड़ी दौड़ाता हुआ बौरीगढ़ पहुँचा और वीरशाह से मिलकर बोला—महाराज! मैं विशेष कार्य्य से आपके पास आया हूँ। सुनिये—महाराज परमाल ने आल्हा-ऊदल को निकाल दिया है। ऊदल चन्द्रावली को विदा कराने आया है। वह उसे ले जाकर दासी बनावेगा। इसमे आप की और राजा परमाला दोनो की इज्जत घटेगी। सब से बड़ी हानि तो हमारी होगी। चन्द्रावली हमारी सगी भांजी है। हाय! मेरी नाक कट जायगी। आप ऊदल के साथ उसे न भेजिये। जिसप्रकार हो सके ऊदल को पकड़कर कैद कर लीजिये।

माहिल की बातों से वीरशाह को बड़ा क्रोध हुआ। उन्होंने पुत्रों को बुलाकर कहा—ऊदल को विष देकर मार डालो। ऊदल के भोजन मे विष डाल दिया गया। यथासमय वीरशाह के पुत्र, ऊदल को लिवा ले गये। चन्द्रावली का पति इन्द्रसेन साथ ही चौके मे बैठा। सामने ही खिड़की पर चन्द्रा· वली बैठी थी। ऊदल ने उसके इशारे को समझकर अपना थाल बदल लिया। उसके इस आचरण पर क्रुद्ध हो इन्द्रसेन ने पूछा—यह क्या किया? ऊदल ने नम्रतापूर्वक उत्तर दिया—यही हमारे देश की चाल है।

वीरशाह के सातो पुत्र उठ खड़े हुये और ऊदल पर प्रहार

करने लगे। ऊदल उस समय निशस्त्र था। निशस्त्र रहने पर भी उस वीर ने दो चार भाइयों को पृथ्वी पर दे ही मारा। परन्तु चोट अधिक लग जाने के कारण वह शक्तिहीन होगया। अन्ततः वीरशाह के पुत्रों ने उन्हे बन्दी कर अन्धकूप मे डाल दिया।

ऊदल के विश्वस्त अनुचरो को यह भेद मालूम हो गया। वे शीघ्र महोबा पहुँचे और सारा हाल कह सुनाया। रानी मल्हना अत्यन्त व्यग्र हो उठीं और शीघ्र मलखान को बुलाकर बोली—बेटा! शीघ्र जाओ और ऊदल को छुड़ा लाओ।

महोवा की सेना बात की बात मे सज गई। बड़े २ शूर सामन्त चल पड़े। पहले दिल्ली पहुँचकर मलखान पृथ्वीराज के पास पहुँचा। पृथ्वीराज ने वीर मलखान का आदर किया। मलखान ने अपने आने का कारण बताते हुए कहा—दिल्लीश्वर! ऊदल को वीरशाह ने कैद कर लिया है—आपकी क्या आज्ञा होती है? पृथ्वीराज ने अपने पुत्र सूर्य और सेनापति महाबली चामुण्डराय को बुलाकर कहा—तुमलोग सेना के साथ वौरीगढ़ जाओ और मेरा यह सन्देश कहो कि ऊदल को छोड़ दें और चन्द्रावली को विदा कर दें।

पृथ्वीराज की सेना के सहित महोविये वौरीगढ़ की सीमा पर पहुँच गये। पहले बनाफरों ने योगी का वेष धारण कर ऊदल का पता लगाया। सब समाचार जानकर शिविर मे आये और सुरंग खोदने लगे—बात की बात मे ऊदल अन्धकूप से निकाल लिये गये।

भगवान भानु के क्षितिज से उठते ही अपार चतुरंगिणी आकाश और पृथ्वी को एक करती हुई चल पड़ी। महोबियो ने काले बादलों के समान बौरीगढ़ को घेर लिया। वीरशाह ने अपने पुत्रों को सेना सहित भेजा। चौड़ा ने आगे बढ़कर पृथ्वी-राज का सन्देश सुनाया परन्तु उन्होंने न माना—लड़ाई छिड़ गई। प्रतापी मलखान और महाबली चौड़ा ने विकट संग्राम के पश्चात् सबों को बन्दी कर लिया।

पुत्रों को शत्रुओं के आधीन हो जाने पर स्वयं वीरशाह रणभूमि में पहुँचा। चौड़ा ने उसे भी चौहान का सन्देश कह सुनाया। परन्तु वह आल्हा के साथ चन्द्रावली को विदा करने के लिये तैयार नहीं हुआ। पुनः युद्ध आरम्भ हो गया। वीर-शाह ने बड़ी वीरता दिखलाई—परन्तु बनाफरों के आगे उसे नतमस्तक होना पड़ा। आल्हा ने उन्हें भी पकड़ कर कैद कर लिया।

उस प्रकार पुत्रो सहित राजा को जंजीरों से जकड़कर आल्हा ने गरजते हुये कहा—ब्रह्मा! बौरीगढ़ को धूल मे मिला दो, दुर्ग की सुदृढ़ दीवारें चूर २ कर डालो, जाओ शूर सामन्तो के साथ बौरीगढ़ को लूट लो और बहन चन्द्रावली को लिवा आओ।

आल्हा के मुँह से ब्रह्मा का नाम सुनकर वीरशाह चौंक पड़ा—उसने काँपते हुये आल्हा से पूछा—यह कौन ब्रह्मा है?

आल्हा ने पुनः गरजते हुए कहा—परमाल का पुत्र। चन्द्रावली का भाई। इस वार इसे ही रानी मल्हना ने भेजा है।

इतना सुनते ही वीरशाह के मुँह से एक हल्की चीख निकल पड़ी और वे धड़ाम से धरती पर गिर पड़े। आल्हा शंकित हो उठे। उन्हें उठाकर वैठाया। कुछ शान्त होनेपर वीरशाहने कहा—माहिल तेरा नाश हो जाय। तूने लाखो की हत्या कराई। तेरे ही षड्यंत्र द्वारा यह महाअनर्थ हुआ। इसप्रकार कहते हुए वे-आल्हा से बोले—वेटा! इसमे हमारा कोई दोष नहीं—चलो गढ़ मे चलो—प्रसन्नतापूर्वक अपनी वहन को ले जाओ।

आल्हा ने तुरंत सवकी मुश्कें खोल दीं। सभी आनन्दपूर्वक एक दूसरे से मिलते हुये गढ़ मे पहुँचे। वीरशाह ने महोवा और दिल्लीवालो का खूब सत्कार किया—पश्चात् वहुमूल्य भेंट दे चन्द्रावली को विदा किया—

सभी यथासमय महोवा पहुंचे। अन्तःपुर मे महा हर्ष छा गया। चारो ओर आनन्द का श्रोत उमड़ पड़ा। चन्द्रावली ने सखियो के साथ त्योहार मनाया। घर घर मे आल्हा-ऊदल और मलखान की चर्चा होने लगी।

—०—

इन्द्रप्रस्थ का संग्राम—कुछ दिनों तक शान्ति रही। युद्ध के भय जाते रहे। महोबिये वीर निर्द्वन्द सुख की नींद सो रहे थे—एकाएक उन्हें दिल्ली वालो से लड़ना पड़ा। आल्हा के रचयिताओं ने उसे बेला के विवाह की लड़ाई कही है। परमाल के पुत्र ब्रह्मा* के साथ बेला का विवाह हुआ था।

बेला† रानी आज्ञा की पुत्री थी। विवाह के योग्य हो जाने

---

*आल्हा खण्ड के रचयिताओं ने यह लिखा है कि बेला पृथ्वीराज की पुत्री थी। कवियों ने उसे लक्ष्मी के समान सुन्दर और शारदा के समान बुद्धिमती माना है। उसके रूप और गुणकी चर्चा चारों दिशाओं में फैल चुकी थी, विवाह योग्य हो जाने पर पृथ्वीराज ने सेनापति चौड़ा और पुत्र ताहिर के साथ चारों नेगियों को यह सन्देश देकर टीका चढाने के लिये भेजा कि पहले फाटक पर लड़ाई होगी। उससे विजय पाने पर वर मंडप में जायगा। दूसरी लड़ाई मंडप में होगी। उससे बचने वर भांवर के समय भी तलवारें चलेंगीं। मारे डर के किसी ने टीका नहीं चढ़वाया। अन्त में मलखान के द्वारा विवश होकर ताहिर ने महोबा में टीका चढ़ा दिया—इसी सिद्धान्त पर लड़ाई हुई। जगनिक ने इस प्रकार लिखा है—परन्तु चन्द बरदाई ने बेला के विवाह का कहीं वर्णन नहीं किया है।

—महाकवि जगनिक।

† बेला के विवाह के सम्बन्ध में मत भेद पाया जाता है। राय भीखादेव और जगनिक ने लिखा है, परन्तु समकालीन महाकवि चन्द

पर पृथ्वीराज ने पुत्र ताहर और सेनापति चौंड़ा को चारो नेगियों के साथ टीका लेकर भेजा। चलते समय इन्हें समझा दिया कि महोबा के अतिरिक्त और सब कहीं जाना। वे चारो घूम आये परन्तु किसी ने टीका नहीं चढ़ाया, सभी पृथ्वीराज का सन्देश सुन भयभीत हो उठे।

मार्ग में लौटते समय मलखान से भेंट हो गई—उसने समझा बुझाकर ताहिर और चामुण्डराय को मना लिया—दिल्ली का टीका ब्रह्मानन्द को चढ़ा दिया गया। ताहिर और चौंड़ा परमाल का ऐश्वर्य देख प्रसन्न हो उठे। राजा ने दिल्ली वालों का बड़ा सत्कार किया। इसप्रकार कुछ दिन रहकर सभी लौटे।

टीका की बात सुन माहिल अत्यन्त दुखी हुआ मानो उसका सर्वस्व नाश हो गया। वह बिना कुछ कहे सुने दिल्ली पहुँच कर पृथ्वीराज से बोला—बेला का टीका महोबा में चढ़ गया। यदि बेला का विवाह ब्रह्मा से हो गया तो चौहानों की नाक जड़

ने इसका वर्णन नहीं किया है। महाकवि चन्द्र पृथ्वीराज का मित्र और सहायक था। सम्भव है इस कारण उसने उल्लेख न किया हो। राय होल और राय भूषण ने भी इसका वर्णन नहीं किया है। वर्तमान आल्हा की पुस्तकों में बेला का विवाह आया है। बेला के कारण ही दोनो पक्ष के वीरों का नाश हुआ।

—लेखक

से कट जायगी। पृथ्वीराज ने माहिल को पुनः उसकी इस द्वेष बुद्धि के लिये फटकारा परन्तु इस जातिद्रोही और विश्वास-घातक नरपशु पर उनकी बातों का कुछ असर न पड़ा। इतने में ताहिर और चामुण्डराय भी आ पहुँचे। पृथ्वीराज ने पुत्र और सेनापति से टीका चढ़ाने का कारण पूछा। उनलोगों ने सारी बातें कह सुनाईं। ताहिर ने कहा—पिताजी महोबिये यहाँ से जीवित नहीं लौट सकते। ताहिर की बातों से प्रसन्न हो माहिल चला गया, परन्तु पृथ्वीराज को अनिष्ट की चिन्ता ने व्यग्र कर दिया।

यथासमय महोबा मे विवाह की तैयारियां होने लगीं। उरई में बैठा बैठा दुरात्मा बनाफरो के नाश का उपाय सोचने लगा। अन्त मे एक युक्ति निकल ही आई। वह मारे प्रसन्नता के नाच उठा और पृथ्वीराज के नाम की एक नकली चिट्ठी लेकर महोबा चल पड़ा। वह चुपके से अन्तःपुर में पहुँचकर अपनी बहन से मिलकर बोला—

बहन! बड़ा सुयोग है, मैं दिल्ली से आ रहा हूँ। दिल्ली-श्वर ने यह पत्र देकर कहा है कि माहिल परिहार हमारे और तुम्हारे दोनों के सम्बन्धी हैं। केवल लड़का उनके साथ भेज दो हम विवाह कर देगें। यदि बारात मे बनाफर आवेंगे तो हम सबका सर कटवा लेंगे। इतना कहकर माहिल ने वह चिट्ठी मल्हना के हाथ मे दे दी। मल्हना उसे पढ़कर अत्यन्त प्रसन्न हुई।

माहिल की कूटनीति काम कर गई। माहिल ने कहा—बहन! मुझपर विश्वास करो, मैं ब्रह्मा को प्राणों से बढ़कर मानता हूँ। ब्रह्मा हमारा भांजा है। मेरे रहते उसका किसी प्रकार अनिष्ट नहीं हो सकता। मैं उसे ऊदल से बढ़कर समझता हूँ। मल्हना भाई की बातों में आ गई। उसने तुरंत ब्रह्मा को साथ कर दिया। माहिल भांजे को पालकी पर बैठाकर ले चला।

ब्रह्मा के अकेले जाने की बात सुन ऊदल माहिल की चालें समझ गया। उसने अन्तःपुर में आकर मल्हना को खूब फटकारा और तत्काल एक द्रुतगामी अश्व के द्वारा एक सैनिक को पत्र देकर मलखान के पास सिरसा भेजा कि माहिल अकेले ब्रह्मा को लेकर दिल्ली जा रहा है। उसे पकड़ लो। पत्र पढ़ते ही मलखान ने सुलखान को आज्ञा दी कि माहिल को शीघ्र बन्दी कर मेरे पास लाओ। वह दुरात्मा ब्रह्मा को लिये जा रहा है। सुलखान शूर सामन्तों के साथ चल पड़ा। सिरसावाले राह पर पहुँचकर उनके आने की प्रतीक्षा कर रहे थे। थोड़ा ही देरमें माहिल की घोड़ी और ब्रह्मा को पालकी दिखलाई पड़ी। माहिल को स्वप्न में भी ऐसी आशा नहीं थी कि बनाफर वीर हमारा सामना करेंगे। वह इसी बार सारा कसर निकालना चाहता था। परन्तु ऐसा नहीं हो सका। सुलखान* ने उसे

---

* माहिल चन्देलों का नाश कराना चाहता था। उसने धोखा देकर परमाल के पुत्र को साथ लिवा लिया और दिल्ली ले चला।

तुरंत पकड़ लिया और मुश्कें बाँध दीं। सिरसा के शूर सामन्तों ने ब्रह्मा को लौटा लिया। मलखान ने माहिल को लाकर सिरसा दुर्ग के फाटक पर टांग दिया। माहिल अपने कुकृत्य पर पछताने और रोने लगा।

इधर ऊदल ने सारी सेना सजा ली। आल्हा, ढेबा, जगनिक आदि महावीर तैयार हो गये। सेनापति की आज्ञा पाते ही शूर सामन्त चल पड़े। महाबली मलखान महोवा के वीरों की प्रतीक्षा कर रहे थे। ऊदल के पहुंचते ही सभी चल पड़े। कहारों ने ब्रह्मानन्द की पालकी उठा ली। फाटक पार करते समय आल्हा ने माहिल को टंगा देखा। उन्होंने मलखान को कहा—भाई! मामा को छोड़ दो। मलखान बोले—भैया! यह हमलोगों का मामा नहीं बल्कि शत्रु है। इसी के कारण इतनी विपत्तियाँ झेलनी पड़ी हैं। माहिल ने रोते हुये कहा—भैय्या! अब मैं कभी ऐसा न करूँगा। मुझे क्षमा करो, आल्हा ने दयाकर छुड़वा दिया।

माहिल मुक्त हो बारात के साथ चला। सभी हर्ष मनाते हुए—चौथे दिन दिल्ली के निकट पहुँच गये। उत्तम स्थान देखकर आल्हा ने सभों को वहीं ठहरने की आज्ञा दी। वीरों के पड़ाव पड़ गये। सबों ने हथियार खोलकर रख दिये और विश्राम करने लगे।

मार्ग में मलखान के बहादुर भाई ने राजा के पुत्र को छुड़ा लिया और माहिल को बांधकर कंगूरे में टांग दिया।

महाबली ऊदल ने रूपन वारी के द्वारा अपने आने की सूचना पृथ्वीराज को दी। इतने में माहिल भी पृथ्वीराज के पास पहुँचा और बोला—महाराज! महोवियों से सन्मुख समर में लड़ना बड़ा कठिन है। ऐसी युक्ति करिये जिसमें वे अनायास ही नष्ट हो जायँ। पृथ्वीराज ने द्वार की तैय्यारी कर दी। द्वार पर जौंरा और भौंरा नाम के दो पागल हाथी खड़े कर दिये गये। उसीके पास खम्भ गाड़कर उसपर स्वर्ण-कलश रख दिया। पहली लड़ाई यहीं पर थी। दोनों हाथियों को हटाकर स्वर्ण-कलश उतार लेने पर ही द्वार का उपचार होगा।

इसप्रकार प्रबन्ध हो जानेपर पृथ्वीराजने बरातियों को आने की सूचना दी—आल्हा-ऊदल, मलखान और ढेवा महाबली सामन्तों के साथ चल पड़े। राजमहल का द्वार वीरोंसे खचाखच भर गया। महोविये आगे बढ़े परन्तु हाथी के सांकल की मार से आगे नहीं बढ़ सके। मलखान और ऊदल आगे बढ़ गये—दोनों ने अनवरत परिश्रम के पश्चात् हाथी को गिरा दिया—बनाफरों का पराक्रम देख दिल्लीश्वर स्तम्भित हो उठे।

अब कलश उतारने की बारी आई। मलखान ने जगनिक को कहा—आगे बढ़ो और कलश उतार लो। जगनिक आगे बढ़ा। इसी समय ताहिर ने कमलशाह से कहा—शीघ्र जगनिक पर आक्रमण करो। खबरदार! कोई कलश उतारने न पावे। कमलशाह ने बड़े वेग से जगनिक पर आक्रमण किया। परन्तु जगनिक सतर्क था, उसने कमलशाह के प्रहार को रोक

कर एक ऐसा हाथ चलाया कि कमलशाह हाथी से लुढ़क कर पृथ्वी पर आ गिरा। देखते ही देखते दिल्ली के सहस्रो शूर सामन्त महोबियो पर टूट पड़े। वीर चन्देलों ने अपनी २ तलवारें खींच लीं। दिल्ली के द्वार पर रक्त की धारा वह चली। इसी समय ऊदल आगे बढ़े और खंभे पर से स्वर्णकलश को उतार लिया। पृथ्वीराज ऊदल की बहादुरी देख अत्यन्त प्रसन्न हुये और द्वारोपचार करा दिया।

द्वारोपचार हो जाने पर मँड़वे की लड़ाई हुई—पराक्रमी आल्हा-ऊदल ने वहाँ भी विजय पाई। ऊदल ने पृथ्वीराज के पुत्रो को बन्दी कर लिया। ब्रह्मा का विवाह हो गया। माहिल ने बहुतेरा चाहा कि बनाफर वीर मार डाले जाँय—परन्तु उसकी आशा पर पानी फिर गया।

विवाह कार्य्य सानन्द समाप्त हो जाने पर ऊदल पृथ्वीराज के पास पहुँचकर बोले—महाराज आपकी प्रतिज्ञा पूरी हो गई। ब्रह्मा का विवाह हो गया—अब पुत्री को विदा कर दीजिये।

पृथ्वीराज बोले—बेटा! मै तुम्हारी वीरता से सन्तुष्ट हूँ। तुमने मुझे प्रसन्न कर दिया है। आज से महोबा और दिल्ली का दृढ़ सम्बन्ध स्थापित हो गया। पुत्री को विवाह के समय ही विदा कर देने की प्रथा हमारे कुल मे नही है—एक वर्ष बाद गौना देंगे।

ऊदल पृथ्वीराज से मिलकर शिविर मे लौटे। आल्हा और मलखान ने समाचार जानकर कूच करने की आज्ञा दी। सभी

लोग तैयार हो गये। पृथ्वीराज के सहस्रों शूर सामन्त वहुत दूर तक महोवियो को पहुँचाने के लिये आये। आल्हा ऊदल ने बहुत समझा बुझाकर सबो को लौटाया।

बारात के सकुशल लौटने का समाचार सुन महोवावालो के हर्ष का पारावार न रहा। अन्तःपुरमे हर्ष छा गया। मंगलाचार होने लगा। अपूर्व साज-बाज तथा तोरण पताकाओं से सुशोभित महोवा नगरी देवताओ की नगरी के समान सुन्दर हो उठी। यथासमय ब्रह्मा की पालकी आ पहुंची। नगर-निवासियों ने अपूर्व स्वागत किया। मल्हना ने आरती उतारी; पुरोहित और ब्राह्मणोने आकर विधिपूर्वक लोकोपचार कराया। इस अवसर पर राजा परमाल ने खूब दान पुण्य किया।

दिल्ली से लौटने के उपरान्त आल्हा-ऊदल ने राज्य प्रवन्ध अपने हाथों मे ले लिया। सवसे पहले उन्होंने राज्य की सीमा निर्धारित की। चारो दिशाओं मे स्तम्भ खड़े किये और धूरे वनवाये। प्रत्येक धूरे पर वड़ी २ सेनाओ की योजना की। स्थान २ पर दुर्ग वनवाये और उनकी रक्षा के लिये वीर सैनिकों का प्रवन्ध किया। इसी समय चरखारी, कालिंजर और छतरगढ़ के दुर्गों का निर्माण कराया।

प्रतापी आल्हा ने राज्य भर मे सुशासन का प्रवन्ध किया। राज्य के एक ओर से दूसरे छोर तक लम्बी-लम्बी पक्की सड़कें बनवाईं। उसके किनारे ठौर २ पर कूयें खुदवाये। स्थान २ पर

रक्षकों का प्रबन्ध किया। यात्रियों की सुविधा के लिये धर्म-शालायें बनवायीं तथा सदाव्रत खोले गये।

राज्य के चारों दिशाओं को स्वरक्षित कर आल्हा ने मंत्रि-मण्डल की स्थापना की। बड़े-बड़े बुद्धिमान मंत्री तथा अनेकों प्रतिनिधि नियुक्त किये। प्राचीन पूर्वजो के समान आर्य धर्म और नीति-नियम का प्रचार किया गया। सत्या-सत्य धर्माधर्म तथा न्यायान्याय के निर्णय के लिये प्रत्येक गाँव में पंचायतों की स्थापना हुई। चोरी, व्यभिचार, असत्याचरण, दुराग्रह और अनीति नाश के लिये कानून बनाये गये।

उस युग मे स्त्रियों की शिक्षा का खूब प्रचार हुआ। उसी शिक्षा के प्रभाव से आर्य-ललनायें अपूर्व धर्मधारिणी तथा त्या-गिनी हुईं। शिक्षा ने उन्हे जननी बना दिया—आर्य संस्कृति की धार्मिक शिक्षा ने उन्हे भी वीर और धर्मपरायण बना दिया। यही कारण था कि वे कठोर सती-व्रत का पालन कर सकीं।

वास्तव मे बनाफरों ने युग को पलट दिया। राजा परमाल चन्द्रमा के समान नर-रत्नों से घिरे हुये शासन करने लगे।

नरवरगढ़ का घेरा—परमाल का धर्म-राज्य चल रहा था। ऊदल की दिगन्त-व्यापिनी कीर्त्ति दिशाओं में फैल चुकी थी। उस महाबली के वीरता की कीर्त्ति बच्चों २ की जिह्वा पर थी। सर्वत्र उनके बल वीर्य और ओज की प्रशंसा हो रही थी। शत्रु भी गुण-गान किये बिना नहीं रहते थे। आज भी मध्यप्रान्त उत्तर भारत और दक्षिण देश के ग्रामीणो मे ऊदल के वीरता का वर्णन रोमांचकारी वीर छन्दो मे गाया जाता है।

सुशासन* से प्रजायें सन्तुष्ट थीं, मंत्रीगण रात दिन प्रजा की भलाई मे लगे रहते थे। प्रजा भी राज्य-सेवा के लिये सदा तत्पर रहती थी। देश विद्वानो से पूर्ण हो गया। दिन २ व्यापार की वृद्धि होने लगी। बड़े २ व्यापारी देश देशान्तरों से आकर बस गये। एक बार कला कौशलों का खूब प्रचार हुआ।

आल्हा, मलखान और ब्रह्मा का विवाह हो गया था। ऊदल अभी अविवाहित थे। उनकी वीरता का एक कारण यह

---

* बनाफरों के प्रबन्ध से सुशासन हो गया। इस युग में बड़े २ मातृभूमि भक्त सपूत हुये। जन्मभूमि के प्रेमियों ने महोबा की रक्षा के लिये अपने को उत्सर्ग कर दिया। महोबा के पुनरुत्थान का श्रेय प्रतापी आल्हा-ऊदल को ही है। इन्हीं वीरों के प्रताप से परमाल की कीर्ति का विस्तार हुआ।

—राय भूषण

भी था कि वे ब्रह्मचारी थे। वीर्य की शक्तियां उनमें कूट २ कर भरी थीं, ओज ने उन्हें तेजवान् और पराक्रमी बनाया था। वीर्य रक्षा ने ही उन्हे विजयी और विनम्र किया था।

उन्हीं दिनो में नरवरगढ़ के राजा नरपति की पुत्री फूलनदेवी के सुन्दरता की कीर्ति चारो ओर फैल रही थी। भांट और कवि उसके सुन्दरता का गुणगान प्रत्येक राजधानी में करते फिरते थे। फूलनदेवी ऊदलकी कीर्ति बहुत दिनोंसे सुन रही थी। उसने निश्चय किया था कि मैं ऊदल से ही विवाह करूंगी। इधर उसके रूप गुण की प्रशंसा सुन ऊदल भी मुग्ध हो गये।

इसी बीच में युद्ध के घोड़ों के लिये ऊदल को काबुल जाना पड़ा। महाबली ढेबा साथ में था। मार्ग में नरवरगढ़ पड़ा। दोनो वहीं ठहरे। एक दिन राज महल के नीचे घूमते हुये ऊदल की दृष्टि फूलनदेवी पर पड़ गई। महाबली का वज्र हृदय मधुप के समान कोमल हो उठा।

फूलनदेवी की मनोहर मूर्ति हृदयमें बस गई। उस मृगनयनी ने वास्तव में ऊदल को वशीभूत कर लिया। प्रेम ने दोनो को विह्वल कर दिया। एक दूसरे के ध्यान में तन्मय हो गये। ढेबा किसी प्रकार समझा कर ऊदल को डेरे पर ले आया। इधर फूलन-देवी की विचित्र दशा हो गयी। सखियो ने माँ को यह समा-चार बताया। ऊदल का नाम सुनकर नरपति की पत्नी अत्यन्त प्रसन्न हुई और राजा को बुलाकर बोली—

नाथ! पुत्री विवाह योग्य हो गई है। महोबा के महावीर

ऊदल अभी अविवाहित हैं। आप अपनी पुत्री के लिये इन्हीं को ठीक कीजिये। जहाँ तक हो सके शीघ्र टीका भेजिये। मैं पुत्री की सम्मति के अनुसार ही कह रही हूँ। वर कन्या का परस्पर मन-मिलन ही विवाह का मन्तव्य है।

स्त्री की बात सुन नरपति अत्यन्त प्रसन्न हुये। इसी समय फूलनदेवी का भाई मकरंद आया और माता की बातें सुन क्रोध में बोला—कदापि नहीं। महोबिये नीच हैं। मैं बनाफरों को अपनी बहन नहीं दे सकता। ओह! कितने अपमान की बात है। मर जाना ठीक है किन्तु बनाफरों से सम्बन्ध कर जीना ठीक नहीं। पुत्र की बात सुन नरपति चुप हो रहे—वे और अधिक कुछ नहीं कह सके।

वर और कन्या एक दूसरे के प्रेम में तन्मय थे। ऊदल ने व्याह करने की सौगन्ध खायी थी, अतः महोबियों को नरवर-गढ़ पर आक्रमण करना पड़ा। बौरीगढ़, दिल्लीगढ़, नैनागढ़, पथरीगढ़ और झूनागढ़ में निमंत्रण भेज दिया गया। सिरसा गढ़ से मलखान बुला लिये गये। बात की बात में सेना तैयार हो गई। यथा समय सभी नरवर गढ़ के धुरे पर पहुँच गये। प्रतापी आल्हा ने रूपन को राजा के पास भेजा।

ऊदल को व्याहने के लिये बनाफरों के आने का समाचार सुन मकरंद जल उठा। उसने तत्काल नरवर गढ़ के वीरों को सज्जित होने की आज्ञा दी। बड़े २ शूर सामन्त शस्त्रास्त्र से सज्जित हो दुर्ग से निकल पड़े। स्वयं मकरंद द्रुतगामी

अश्व पर बैठ कर वीरों को उत्साह दिलाते हुये आगे बढ़ा। देखते ही देखते काले बादलों के समान मँडराती हुई वह विशाल वाहिनी महोबियों के निकट आ पहुँची।

महोबिये भी बात की बात में तैयार हो गये। महासमर आरम्भ हो गया। शूरों ने पहले तुपकों और भुशुंडियों से काम लिया। विषैला धुआँ सर्वत्र छा गया। उस महाभयंकर शब्द से सहस्रों वीरों के कानों के पर्दे फट गये। कोदंड से छोड़े हुये बाण वायु को चीरते हुये वीरों का नाश करने लगे। कुछ ही देर में दोनों सेनायें भिड़ गईं। चारों ओर से मारो काटो की आवाजें आने लगीं। सहस्रों शूर कट २ कर गिरने लगे। पृथ्वी रक्त से गीली हो गई।

दोनों ओर की कठिन मार थी। मकरन्द कम बलवान न था। उसने इतने बाण बरसाये कि बनाफरों की सेना छिप गई। मकरन्द के साथियों ने भी अद्भुत रणकौशल दिखलाया। महोबियों के होश उड़ गये। अपने सैना की दुर्दशा देख मलखान आगे बढ़े। बौरीगढ़, दिल्ली, पथरीगढ़ और नैनागढ़ के वीर झुक पड़े। कठिन तलवार चली। युद्धभूमि वीरों की लाशों से पट गई। सर्वत्र हाहाकार मच गया। नरवरगढ़ के वीर बाँकुड़े घबड़ा उठे। प्रतापी मलखान ने बात की बात में मकरन्द को बन्दी कर लिया।

नरवर गढ़ की सेना भाग खड़ी हुई। पुत्र के बन्दी होने की बात सुन स्वयं राजा नरपति आये और आल्हा से मिले। ब्याह

की तैयारियां होने लगीं। माहिल ने इस बार भी कूट नीति की। नरपतिको महोबियों के विरूद्ध भड़काया परन्तु फल कुछ न हुआ यथासमय शुभ मुहूर्त में ऊदल का विवाह फूलनदेवीसे हो गया। दोनो परस्पर मिलकर अत्यन्त प्रसन्न हुये। राजा ने अपार धन देकर सबों को विदा किया। इसप्रकार ऊदल का विवाह कर सभी आनन्दपूवक महोबा पहुँचे।

महोबा मे सर्वत्र शान्ति थी, यद्यपि युद्ध के भय दूर हो चुके थे परन्तु उसी समय महोबावालों को बलख-बुखारा पर आक्रमण करना पड़ा। आल्हा खण्ड के रचयिताओं ने लिखा है कि धाँधू के ब्याह के कारण यह युद्ध हुआ।

उस समय भारत मे बुखारा का नाम बहुत प्रसिद्ध था। यह विशाल राज्य दो भागो मे विभक्त था। पूर्व बुखारा पर महाराज रणधीर का शासन था और पच्छिम बुखारा पर महाराज अभिनन्दन सिंह राज्य करते थे। महाराज रणधीरसिंह को केशर नाम की एक रूपवती कन्या थी। केशर के विवाह योग्य होने पर अपने पुत्र मोती को टीका देकर भेजा। मोती कई राजाओ के यहाँ भटकता हुआ दिल्ली पहुँचा। ताहिर ने टीका धाधूँ को चढ़वा दिया।

यथासमय बारात बुखारा पहुंची। दिल्लीवालो से बड़ी लड़ाई हुई। धांधू पकड़ लिया गया। चौहान की फौज भाग खड़ी हुई। केशर के शोक का ठिकाना न रहा। आधीरात की अँधेरी रात मे वह स्वयं गुप्तद्वार से कारागार मे पहुँची और

धाँधू से बोली—चलिये मैं आपको कारागार से निकाल ले चलूँ। धाँधू ने कहा—नहीं ! मैं तोमरवंशी होकर क्षत्रित्व को कलंकित नहीं कर सकता।

अपने मनोनीत पति को हठ पर दृढ़ देख केशर बोली—प्राणनाथ ! दिल्ली की फौज भाग गई—अब कोई उपाय नहीं है—आप हमारा कहना मानिये। धाँधू ने उत्तर दिया—कदापि नहीं। यदि तुम मुझसे प्रेम करती हो तो मेरा समाचार महोवा भेज दो। मेरा छोटा भाई ऊदल बड़ा वीर है—वह मुझे अवश्य छुड़ा लेगा। केशर ने तदनुसार किया। उसने दूसरे ही दिन गुप्त दूत के द्वारा समाचार भेज दिया।

धाँधू के पकड़ जाने का तथा दिल्ली की सेना के भाग जाने का समाचार सुन प्रतापी ऊदल तैयार हो गये। इस अवसर पर आल्हा और परमाल ने रोकना चाहा परन्तु मलखान की मंत्रणा से ऊदल अपने संकल्प पर डटा रहा। अन्त मे विवश हो महोवियो को तैयार होना पड़ा।

युद्ध का डंका बज गया। सेनायें तैय्यार हो गईं। पहले दिल्ली पहुँचकर सभी पृथ्वीराज से मिले—पश्चात् दिल्ली की सेना ले आगे बढ़े। बलखबुखारा वाले बड़े वीर थे। सबों ने बड़ी वीरता से सामना किया। भयंकर युद्ध होता रहा। परन्तु विजय-श्री बनाफरों के आधीन थी। ऊदल और मलखान ने मोती और रणधीर को वन्दी कर लिया। धाँधू का विवाह हो गया।

सभी दिल्ली लौटे। ऊदल ने पृथ्वीराज से कहा—धाँधू को

डोला सहित महोवा भेज दीजिये। पृथ्वीराज ने ऊदल की बात मान ली। धाँधू अपनी माता और रानी तिलका से मिलकर अत्यन्त प्रसन्न हुये। देवल देवी के हर्ष का ठिकाना न रहा। महोवा मे महोत्सव होने लगा। इस प्रकार एक सप्ताह रहकर ऊदल धाँधू को दिल्ली पहुंचा आये। ऊदल के व्यवहार से दिल्लीश्वर अत्यन्त प्रसन्न हुए। उन्होंने हृदय से लगाकर कहा—पुत्र तुम बड़े बलवान हो। तुमने अपने बाहुबल से वंश का नाम उज्वल किया है।

इसप्रकार ऊदल कुछ दिन दिल्ली में रहकर महोवा लौट आये।

—※—

इन्दल हरण—आल्हा का पुत्र इन्दल बड़ा पराक्रमी हुआ। उसकी वीरता और सुन्दरता की चर्चा चारो ओर फैल गई। धाँधू के व्याह मे इन्दल भी बलखबुखारा गया था। वह इतना सुन्दर था कि पच्छिम बुखारा के राजा अभिनन्दन की सर्वांङ्ग सुन्दरी पुत्री चित्ररेखा उसे देखकर मोहित हो गई थी। वह रात दिन यही चाहती थी कि इन्दल ही मेरे पति हों।

धीरे २ कुछ दिन बीत गये। गंगा दशहरा का समय आ गया। देश-देश के लोग बिठूर की तैयारी करने लगे। ऊदल ढेवा और इन्दल भी स्नान करने के लिये आये। चित्ररेखा

सी प्रियतम के मिलने की अभिलाषा से चल पड़ी। गंगा के किनारे सबकी छावनियाँ पड़ गईं। विश्वमोहिनी चित्ररेखा ने बड़ी युक्ति से दूतियों के द्वारा इन्दल को सोते हुए उठवा मंगवाया। इन्दल से मिलकर वह बड़ी प्रसन्न हुई। इन्दल भी उसके रूपजाल में फँस गया। चित्ररेखा शीघ्र बुखारा लौट गई और नगर के बाहर वाली अपने फुलवाड़ी में रहने लगी।

इधर इन्दल को न देख ऊदल अत्यन्त चिन्तित हो उठे। उन्होंने भतीजे को समूचे मेले मे ढूँढ़ा परन्तु कहीं पता न मिला। वे अपार शोक से विह्वल हो उठे। उत्तरोत्तर उनका शोक बढ़ता ही गया।

इसी समय माहिल आ पहुँचा। उसने कहा—बेटा! चिन्ता मत करो। इन्दल को कोई चुरा ले गया है। तुम महोबा चलो—मैं आल्हा को समझा दूँगा। तुम कुछ दिनों की मोहलत लेकर उसे ढूँढ़ निकालना। माहिल की बात मान ऊदल महोबा के लिये चल पड़े। इधर माहिल पहले ही आल्हा के पास पहुँचा और जोर २ से रोने लगा।

माहिल मामा को इसप्रकार रोते देख सभी चौंक पड़े। आल्हा ने आग्रह पूर्वक राने का कारण पूछा। उत्तरोत्तर उसका करुण विलाप बढ़ता ही गया। उसके इस आचरण से आल्हा द्रवित हो उठे। शान्तिप्रिय आल्हा का चित्त दुःख से विह्वल हो गया। उन्होने आश्वासन देते हुए कहा—मामा भय न करो, कहो—तुम क्यों रो रहे हो।

माहिल ने पूर्ववत रोते हुए कहा—बेटा ! मत पूछो—सर्वनाश हो गया। हाय! मुझे यही दुःख देखना बदा था। इतना कहते २ वह धूर्तात्मा बनावटी ढोंग कर पृथ्वी पर लुढ़क गया। लोगों ने समझ लिया कि मूर्च्छा आ गयी—परन्तु वह उसकी एक चाल थी। सभी ने हाथोहाथ उठाकर बैठाया! उसने पुनः कहा—हाय! इन्दल को ऊदल ने मार डाला।

इतना कहकर वह पुनः फूट २ कर रोने लगा। अन्तःपुर में कुहराम मच गया। आल्हा भी विलाप करने लगे। देखते ही देखते दशहरपुरवा आर्त्तनाद से गूँज उठा। सभी सिर और छाती पीट-पीटकर रोने लगे—इसी बीच मे अवसर पा माहिल निकल पड़ा और उरई जा पहुँचा।

पुत्र शोक ने आल्हा को पागल कर दिया। उनकी अन्तरात्मा जल उठी। ऊदल के न आने से सबों को निश्चय हो गया कि इन्दल मारा गया, परन्तु सोनवां की आत्मा ने इस बात को स्वीकार नही किया। वह सबों से बार २ यही कहती रही कि ऊदल ऐसा नहीं कर सकते। उनसे स्वप्न मे भी मैं ऐसी आशा नहीं कर सकती।

पीछे से ऊदल भी आये। उन्हे देखते ही आल्हा की क्रोधाग्नि भड़क उठी। उन्होंने बिना विचारे जल्लादों को आज्ञा दी कि ऊदल की आँखें निकाल लाओ। ऊदलने बहुत कुछ कहा—परन्तु क्रोधोन्मत्त आल्हापर उसका कुछ भी प्रभाव न पड़ा। राजा परमाल भी कुछ न बोल सके। जल्लाद ऊदल को ले चले। फूलन-

देवी फूट २ कर रोने लगी। ऊदल इस विचित्र व्यापार को देख आश्चर्य मे पड़ गये—वे भातृ-भक्त थे। भाई की आज्ञा शिरोधार्य कर जल्लादों के साथ चल दिये—अन्यथा एक नहीं सहस्रों जल्लाद उस महाबली का कुछ नहीं कर सकते थे।

सोनिवाँदेवी से यह न देखा गया। वह शीघ्र महल के नीचे पहुंची और जल्लादों के नायक को बुलाकर बोली—इस समय महाराज क्रोध से पागल हो रहे हैं। ऊदल भाई को पिता तुल्य मानते हैं, वे उनकी आज्ञा से शिर अर्पण कर देंगे—इस समय तुमलोग बुद्धिमानी से काम लो। क्या तुमलोग ऊदल की आँखें निकाल सकते हो? मुझे जान पड़ता है इन्दल को कोई मेले से हर ले गया है। ऊदल को मेरे सामने लाओ।

जल्लादो ने राजरानी की आज्ञा मान ली। ऊदल से सच्चा वृतान्त सुन सोनवांदेवी बोली—वीरश्रेष्ठ! चिन्ता न करो,तुम शीघ्र नैनागढ़ चले जाओ और हमारे भाइयों की सहायता से इन्दल की खोज करो। इतना कहकर वह जल्लादोसे बोली—लो यह मैं तुम्हें पुरस्कार देती हूँ—ऊदल को छोड़ दो, बन में जाकर हरिन की आख लाकर राजा को दिखा दो। उनलोगो ने ऐसा ही किया। ऊदल बध की बात बिजली के समान फैल गई। राजा परमाल मूर्च्छित हो गये—मल्हना फूट २ कर रोने लगी। महोबा नगरी शोक से व्यग्र हो उठी। राजा परमाल से यह दुःख न सहा गया। वे तत्काल दशहरपुरवा पहुंचे। आल्हा को देखते ही वे काल रूप हो उठे। उन्होंने गरजते हुए कहा—

नीच हत्यारे! वीर बनता है। पुत्र के लिये भाई की हत्या करा दी धिक्कार है ऐसे भ्रातृ-हन्ता पर इतना कहकर वे लौट आये।

अब आल्हा की बुद्धि ठिकाने आई। उन्हें अपार शोक हुआ। वे ऊदल के लिये रोने लगे। उन्हे बड़ी लज्जा मालूम होने लगी, ग्लानि और क्षोभ से बचने के लिये वे एक अन्धकूपमें जा छिपे।

उधर ऊदल सिरसा पहुंचे। मलखान को खबर लग चुकी थी। माहिल ने वहाँ भी अनर्थ मचा रखा था। ऊदल का समाचार सुन उन्होने फाटक बन्द करा दिया। बेचारा ऊदल अत्यन्त दुखी हुआ, इसी समय उसे खोजता हुआ ढेवा आ पहुंचा। ऊदल रोने लगे। ढेवा ने समझाकर कहा—भाई! रोओ मत, मैं तुम्हारा मित्र हूँ, विपत्ति का साथी हूँ—मैं तुम्हारे साथ रहूँगा। वास्तव में ढेवा सच्चा मित्र था। दोनों मित्र बहुत देरतक परस्पर विचार विनिमय करते रहे—कहाँ जाँय, क्या करें? इस विपत्ति में कौन सहायक होगा? भैया मलखान का आसरा था परन्तु उन्होंने भी फाटक बन्द करा दिया। ढेवा बोला—भैय्या! चलो मकरंद के यहाँ चलें। यही उचित समझ दोनो नरवरगढ़ चल पड़े।

मकरंद बड़े प्रेम से मिला। ऊदल की दुर्दशा देख उसे बड़ा क्षुब्ध हुआ। उसने कहा—भाई! तुम इसप्रकार नंगे पैर और नगे सिर कैसे आये? तुम इसप्रकार दुःखित और उदास क्यों हो? ऊदल ने पूर्व घटित सब सच्ची बातें कह सुनाईं।

मकरन्द दूसरे ही दिन ढेवा और ऊदल को लेकर इन्दल

को ढूँढ़ने के लिये निकल पड़ा। कुछ ही दिन में सभी नैनागढ़ पहुँचे। कान्तामल भी ऊदल के साथ हो लिया—चारो आदमी योगी का वेश बना इन्दल को खोजते हुये पश्चिम बलखबुखारा पहुँचे। सबों ने इन्दल का पता लगा लिया। चित्ररेखा इन्दल को छोड़ना नहीं चाहती थी। वीरों के प्रतिज्ञा करने पर—कि बुखारा विजयकर हम तुम्हारा विवाह इन्दल से करावेंगे, उसने इन्दल को सौंप दिया। सभी उसे लेकर आगे बढ़े।

मार्ग मे ऊदल ने ढेबा के संग इन्दल को, मलखान के पास भेज दिया और आप मकरन्द के साथ नरवरगढ़ चले। उन्होंने ढेबा और इन्दल से कह दिया कि—मेरा हाल किसोसे न कहेंगें। हम बलखबुखारा में मिलेंगे। इन्दल और ढेबा सिरसा पहुँचे। मलखान दोनो को लेकर राजा परमाल के पास आये। इन्दल को देखते ही वे आल्हा को फटकारने लगे। आल्हा भी ऊदल के लिये रो पड़े। आल्हा को इतना शोक हुआ कि वे आत्म-हत्या करने के लिये तैयार हो गये—मलखान ने उनकी भुजाली पकड़ ली।

ढेबा के कथनानुसार सभी बलखबुखारा के लिये तैय्यार हुये। चारो ओर के सभी सम्बन्धी आ गये। बारात बलखबु-खारा में पहुंच गई। आल्हा ने अपने आने की सूचना दी—राजा अभिनन्दन मारे अपमान के जल उठा। वह शीघ्र शूर सामन्तों को लेकर युद्धभूमि में आ डटा।

महीप अभिनन्दन बड़ा शूरवीर योद्धा था। उसने बात की बात मे प्रलय मचा दी। उसके सातो बेटे बड़े लड़ाके थे। उनकी मार से महोबियो के पैर उखड़ गये। महोबा शिविरमे हाहाकार मच गया। सभी भाग खड़े हुये। बारात की ऐसी दुर्दशा देख मलखान ने रूपन से कहा—तुम शीघ्र मकरन्द और ऊदल को बुला लाओ—उनसे कहना कि तुम्हारा प्यारा भाई मलखान शत्रुओं के चक्र मे घिर गया है।

रूपन के द्वारा यह समाचार सुन ऊदल का हृदय द्रवित हो उठा। वे शीघ्र कान्तामल और मकरन्द को लेकर चल पड़े। तीनों वीरो ने बड़ा पराक्रम दिखलाया। बलखबुखारा की सेना भाग खड़ी हुई। महाबली ऊदल ने राजाके सातो पुत्रों को वन्दी कर लिया। इसप्रकार विवश हो अभिनन्दन ने अपनी बेटी का विवाह कर दिया। सभी प्रसन्नतापूर्वक महोबा लौट आये। आल्हा ने ऊदल को हृदय से लगा लिया और बार २ क्षमा मांगी। भातृभक्त ऊदल भाई के चरणों में लिपट गये। परमाल, मल्हना तथा सारी प्रजा ऊदल को देखकर आनन्दित हो उठी।

माहिल की कूटनीति—वीर बनाफरों की असीम उन्नति ने माहिल को बेचैन कर दिया। प्रतिहिंसा की अग्नि उसके अन्तस्थल में धधकने लगी। वह स्वयं परिहारों को लेकर चंदे-लों का नाश करने में असमर्थ था। दुरात्मा कूटनीति से बदला लेना चाहता था। वह रात दिन यही सोचता रहता था कि किसप्रकार बनाफरों और चन्देलों का नाश हो। कुछ ही दिनों में उसने एक मार्ग ढूँढ़ निकाला। अब उसके प्रसन्नता का ठिकाना न रहा—वह शीघ्र ही अपनी घोड़ी पर चढ़ दिल्ली की ओर चल पड़ा।

दिल्ली पहुँचने पर महाराज पृथ्वीराज ने उसका स्वागत किया। कुशल प्रश्न के उपरान्त दिल्लीश्वर ने महोबा और सिरसा का हाल-चाल पूछा। माहिल तो यही चाहता ही था। वह बोला—

महाराज! उनलोगों का हाल क्या पूछते हैं? आज दैव उन्हीं के पक्ष में है। उन महोबियों ने पृथ्वी के क्षत्रियों को बनियाँ बना दिया है। क्या मलखान की तलवार आप भूल गये? जबतक बनाफर महोबा के रक्षक रहेंगे तबतक कौन ऐसा महावीर है जो—चन्देलों को नीचा दिखा सके। महाराज! चन्देलों के अत्याचार से मैं जल रहा हूँ। उन्हीं लोगों ने सर्व-स्व नाश किया है। इतना ही नहीं—मेरे पवित्र परिहार वंश को भी भ्रष्ट कर दिया है। हाय! मेरी बहनें हठात् बनाफरों के साथ ब्याही गईं।

वीर चौहान! मेरी दुर्दशा को देख आप द्रवित हो उठेंगे। परन्तु मुझे अपनी चिन्ता उतनी नहीं है जितनी आपकी विपत्ति को देख कर हो सकती है। उनके बढ़ते हुए प्रताप को देख मैं रात दिन जला करता हूँ। देखिये मलखान ने सबकी सीमा दबाकर किला बना लिया है। वह दिन-रात अपनी शक्ति बढ़ा रहा है। संभव है शीघ्र उत्तर दिशा की ओर भी बढ़े। उत्तर में दिल्ली का ही राज्य है। उस समय उन कालरूप बनाफरों का सामना कौन करेगा?

माहिल की बातें सुन पृथ्वीराज ने कहा—उरई-नरेन्द्र! आप ठीक कहते हैं। वास्तव में बनाफर बड़े वीर है। परन्तु उनकी शक्ति को इसप्रकार बढ़ने देना नहीं चाहिये। सीमा के राज्यों को निर्बल रखने पर ही राज्य का कल्याण होगा। अतः क्या करना उचित होगा?

माहिल के मन की हुई। उसने कहा—महाराज! शत्रु को बलवान न होने देना चाहिये। शत्रु को लघु समझना भ्रम है—फिर महोबियो का क्या कहना? मेरी राय में उन्हें आधीन करने की चेष्टा करनी चाहिये। जिसप्रकार हो सके उनकी स्वतंत्रता छीन ली जाय।

पृथ्वीराज बोले—राजन्! स्वतंत्रता प्राणों से प्यारी वस्तु है—क्या महोबिये उसे आसानी से छोड़ देंगे? लाखों सैनिकों को धूल में मिला देने वाला पंचशावद उनके पास तैयार है। मैं उस हाथी के गुण को जानता हूँ—समरांगण में

वह अकेला ही प्रलय मचा देता है। प्राण रहते बनाफर वीर परतंत्र न होंगे। मैंने मलखान की तलवार देखी है। सन्मुख समर से परास्त कर उन्हें आधीन करना टेढ़ी खीर है।

माहिल दुःख प्रकट करता हुआ बोला—हिन्दूपति! आपके मुँह से ऐसी बातें शोभा नहीं देतीं। दिल्लीश्वर होकर चन्देलों से भयभीत होते हैं। चन्देल वीर हैं—परन्तु चौहानो की समता नहीं कर सकते। क्या आप शब्दवेधी बाण चलाना भूल गये? क्या ताहिर, चामुण्ड, संयम राय, चन्द आदि योद्धाओं की वीरता का स्मरण नहीं है? आप अपने उच्च स्थान का ध्यान कीजिये। आप ही भारत के सम्राट हैं, राजाओ के सिरताज है। हम परिहार आपको उच्च दृष्टि से देखते है। आप एकबार विचार कीजिये।

पृथ्वीराज महोबियों से बैर करना नहीं चाहते थे। वे इन वीरों का स्वागत करते थे, उनका हृदय बड़ा विशाल था। वे मलखान और ऊदल की वीरता पर मुग्ध हो चुके थे। उन्होंने स्वयं महाबली मलखान को निर्भयपूर्वक सिरसागढ़ में रहकर दिल्ली और महोबाराज्य की रक्षा करने का आदेश दिया था। यद्यपि इन बनाफरों ने बरबस पृथ्वीराज की पुत्री बेला का विवाह ब्रह्मा से करा दिया था तथापि पृथ्वीराज बनाफरों से असन्तुष्ट नहीं थे। बराबर उनकी वीरता की प्रशंसा करते थे। माहिल के समान उनका हृदय छल-कपटपूर्ण नहीं था। वे वीर थे और वीरता ही उन्हें प्यारी थी।

अत्यन्त रगड़ से चन्दन भी अग्नि देता है। दुरात्मा माहिल ने ऐसी पट्टी पढ़ाई कि पृथ्वीराज उसकी बातों में आ गये। उन्होंने बड़े आग्रह से पूछा—ऐ उरई के सर्दार ! बतलाओ किस प्रकार महोवियों का नाश हो सकता है ?

*माहिल अत्यन्त प्रसन्न हो बोला—महाराज ! आप निर्भय रहें—मैं ऐसी युक्ति बताऊँगा जिससे आप अनायास महोबा पर अधिकार कर लेंगे। 'बलवान शत्रु के साथ सोच समझकर सामना करना चाहिये। नीति ने कहा है—शत्रु का बल नष्ट कर सामना करना उचित है। पहिले आप महोबा के वीरो को पंगु बना डालिये पश्चात् आक्रमण कर जीत लीजिये।

बनाफरो की उन्नति के कारण उनके घोड़े हैं। बेंदुला, कबूतरी, करिलिया, पपीहा, सिंहिन, हरनागर हिरौंजिन आदि घोड़े और पंचशावद हाथी के बल से उन्होंने भारत के भिन्न २ राजाओं को जीता है। यदि किसीप्रकार ये घोड़े उनसे ले लिये

---

* माहिल चन्देलों के विरुद्ध दिल्लीश्वर के पास गया और बोला—क्या आप महोबा को अधिकार में करना चाहते हैं—तो आइये मैं आपको युक्ति बताऊँ। इसप्रकार बहुत सी प्रलोभन की बातें कह उन घोड़ों को मगाने के लिये कहा,—जो बनाफर वीरों के पास थे। माहिल जानता था कि घोड़ों के बिना बनाफर-वीर शक्ति-हीन हो जायेंगे। पृथ्वीराज भी उसकी बातों में आ गये—

—सवाई रहिमल

जायँ तो वे युद्धभूमि में कुछ नहीं कर सकते। फिर आप निर्भय आक्रमण कीजिये और महोबा को लूट लीजिये।

इसप्रकार कहते हुये माहिल ने पुनः कहा—आप इसी आशय का एक पत्र देकर दूत को महोबा भेजिये। मैं अभी महोबा जाता हूँ। परमाल को डरा धमका कर ठीक कर लूँगा—युद्ध में अपूर्व कौशल दिखाने वाले घोड़ो के आ जाने पर आप महोबा पर आक्रम कीजियेगा।

माहिल की बातों से पृथ्वीराज अत्यन्त प्रसन्न हो बोले—वीर परिहार! ठीक है—यदि युक्ति काम कर गई तो विना परिश्रम वे आधीन हो जायँगे—अन्यथा बाहु-बल से वशीभूत किये जायँगे। आप जाइये। मैं योग्य दूत के द्वारा यह समाचार भेजता हूँ। माहिल पृथ्वीराज को प्रणाम कर चल पड़ा।

पाठकों! माहिल* ने भयंकर सर्वनाश किया—उसकी कूट-नीति ही क्षत्रियों के नाश का आदि कारण हुई। इसी सिद्धान्त पर सब आपस मे कट कर मर गये।

---

* एक दिन माहिल दिल्ली पहुँचा। पृथ्वीराज ने उसका यथोचित आदर सत्कार किया। माहिल ने कहा—महोबे वाले इसीप्रकार बढ़ते जायँगे तो कभी आप पर भी आक्रमण कर बैठेंगे—इसलिये उन्हें दबाना चाहिये। पृथ्वीराज ने कहा—बिना कारण तो किसी को दबाया नहीं जा सकता। माहिल ने कहा—चौहान! कारण तो सरल ही है, आप चिन्ता क्यों करते हैं? मेरे रहते हुये आपको सोचने की

विदेशी विद्वानों ने लिखा है—कि भारत के लिये यद्यपि वह भयंकर काल था। परन्तु वीरभूमि वीरों से खाली नहीं थी। बड़े २ योद्धा और रणधीर विद्यमान थे। यदि सभी मिल कर चाहते तो समुद्रों से घिरी हुई पृथ्वी को जीत लेते। इन वीरों ने अपनी शक्तियों को आपस में ही लड़-भिड़कर नष्ट कर दी। कुमति ने ही सर्वनाश किया। यदि सुमति होती तो एक शहाबुद्दीन क्या? सहस्रों महम्मद गोरी भी पृथ्वीराज का सामना नहीं कर सकते थे। सत्य है—विनाश काल में बुद्धि विपरीत होती जाती है।

—※—

आवश्यकता नहीं, सुनिये—राजा परमाल के यहाँ बड़े शक्तिशाली पाँच घोड़े हैं, पाँचो पर बनाफर वीर चढ़ते हैं—आप उन्हें मंगवा लीजिये—घोड़ों के आने पर वे कुछ न कर सकेंगे। पृथ्वीराज ने माहिल की बात मान ली। आगे चलकर यही वैर का बीज हो गया। इसी बात पर लाखों वीरों की आहुति हो गई।

—महाकवि चन्द

परमाल की वक्रदृष्टि—माहिल की कूटनीति ने पृथ्वीराज को महोबा की ओर आकृष्ट कर दिया। उन्होंने मन्त्रियों को बुलाकर कहा—राजा परमाल के पास दूत भेज कर बनाफरों के पाँचो घोड़े और पंचशावद हाथी मंगवा लो। मन्त्रियों ने शीघ्र ही पत्र देकर दूत को भेजा।

प्रतापी पृथ्वीराज का दूत पत्र लेकर परमाल के पास पहुंचा। वहाँ माहिल पहले से ही डटा था। पत्र पढ़तेही परमाल चिन्तित और व्यग्र हो उठे। उन्होंने माहिल से सम्मति पूछी। माहिल ने कहा—

महाराज! चौहान राज सिरताज है। उन्हें किसी बात की आवश्यकता पड़ी है, इसीलिये उन्होंने घोड़ों को मँगवाया है। आप बिना संकोच भेज दीजिये। इस व्यवहार से पृथ्वीराज ऋणी बन जायेंगे। घोड़ों के न देने से दिल्लीश्वर क्रुद्ध हो उठेंगे। व्यर्थ थोड़ीसी बात के लिये शत्रुता मोल लेना बुद्धिमानो का काम नहीं है। घोड़ों के न देने पर भयंकर अनिष्ट की आशंका है। संभव है पृथ्वीराज क्रुद्ध हो महोबा पर चढ़ आवें। बैठे-बैठाये विपत्ति ओढ़ना ठीक नहीं। मैं जैसा आपका हितैषी हूँ वैसा ही पृथ्वीराज का। यद्यपि मेरे लिये दोनों समान हैं तथापि आप पर मेरा विशेष अनुराग है। आपकी प्रसन्नता ही मेरी प्रसन्नता है।

इसप्रकार परमाल को ठीक कर मांहिल अन्तःपुर से पहुंचा

और मल्हना को समझाने लगा। सभी माहिल को जानते थे, परन्तु इस बार उसका जादू चल गया। मल्हना और परमाल उसकी बात मे आ गये। दुरात्मा, अपने माधुर्य मिश्रित बातों का जादू चलाकर चलता बना।

माहिल के चले जाने पर राजा ने आल्हा-ऊदल को बुलाकर कहा कि पांचो घोड़े दिल्ली भिजवा दो।

राजा की बात सुन आल्हा-ऊदल ने कहा—महाराज! घोड़ो के देने के विषय में न कहिये। वास्तव मे घोड़े ही हमारी उन्नति के कारण हैं। मानरक्षा ही जीवन का धर्म है। हम प्राण दे सकते हैं, परन्तु अपमान नहीं सह सकते।

परमाल ने कहा—बेटा! इसमे अपमान की क्या बात है? दिल्लीश्वर हमारे सम्बन्धी हैं, उनसे किसी प्रकार के अनिष्ट की अशंका नहीं हो सकती। आवश्यकता पड़ने पर ही उन्होंने घोड़ों को मंगवाया है। काम हो जाने पर वे घोड़े लौटा देंगे।

आल्हा-ऊदल ने कहा—महाराज! आप का हृदय साफ है। आप छल-कपट नहीं जानते। घोड़ो ने ही हमारी मानरक्षा की है। पंचशावद के बल से ही हमने पृथ्वी के राजाओं को आधीन किया है। घोड़े ही हमारे हाथ पैर हैं, हम प्राण रहते उनका त्याग नहीं कर सकते।

परमाल ने कहा—बेटा! हठ न करो। पृथ्वीराज के पास बल और शक्ति है, उनके विरुद्ध होकर महोबावासी सुखी नही रह सकते। देश जाति और प्रजा की शान्ति के लिये घोड़े दिल्ली

भिजवा दो। अन्यथा चौहान की वक्र दृष्टि हो जायगी।

वीर बनाफरों ने कहा—चौहान राजा का मुझे भय नहीं है-हमलोगों ने बरबस पृथ्वीराज को परास्त कर बेला का ब्रह्मा के साथ विवाह कराया है। इसी बीच ऊदल बोल उठे—पृथ्वीराज के क्रुद्ध होने का मुझे किंचित भय नहीं है। मैं उस महाबली का बल-विक्रम जानता हूँ।

इस प्रकार बनाफरों* को बहकते देख रानी मल्हना ने समझाना आरम्भ किया—बेटा! साधारण बात के लिये घर बैठे विपत्ति न बुलाओ।

रानी* ने बहुत समझाया परन्तु कुछ परिणाम न निकला। राजा परमाल बनाफरों के इस व्यवहार से क्षुब्ध हो उठे। उन्होंने अपना घोर अपमान समझा। उन्होंने क्रोध में कहा—

---

* आल्हा ऊदल को बुलाकर परमाल ने कहा कि पाँचो घोड़े दिल्ली भेजवा दो।

आल्हा-ऊदल ने कहा—घोड़े तो मैं नहीं दूँगा। इसमें हमारा बड़ा अपमान है। हम प्राण दे सकते हैं, परन्तु अपमान नहीं सह सकते।

आल्हा ऊदल के उत्तर सुन परमाल क्रुद्ध हो उठे।

—महाकवि जगनिक

* रानी मल्हना बड़ी बुद्धिमती स्त्री थी। परन्तु वह माहिल के कुचक्र में फँस गई थी। उसे यह ज्ञान नहीं था कि घोड़ों को मँगवा कर चौहान हमारा नाश कराना चाहता है। आल्हा ऊदल ने बहुत

बनाफरों ! मेरी अवज्ञा ! मैं घर बैठे बैर मोल लेना नहीं चाहता। जहाँ तक शीघ्र हो सके हमारे राज्य से निकल जाओ ! तुमलोगों ने प्राणदण्ड का अपराध किया है—परन्तु तुम्हारी पूर्व सेवाओं से जो तुमलोगो ने महोवा राज्य के लिये की है— प्राणदण्ड की आज्ञा रद्द कर निर्वासन का दण्ड दिया जाता है।

पाठकों ! एकवार सोचो—दुरात्माओं की शिक्षा का फल कैसा विषम होता है।—राजा परमाल जो कभी आल्हा-ऊदल को पुत्र के समान मानते थे—अपना सर्वस्व समझते थे, दुरात्मा माहिल के फेर में पड़कर—उन्हें अपना शत्रु मान बैठे।

समझाया कि घोड़े न दिये जायँ। घोड़े देने पर बनाफरों की ही नहीं बल्कि महोबा की मानहानि होगी। पृथ्वीराज से शत्रुता चली आ रही है—दिल्ली जाने पर घोड़े नहीं लौट सकते।

आल्हा ने कहा—इस समय बुद्धि से काम लेना चाहिये— जिसने बचा के मरने पर सिरसागढ दवा लिया। सिरसा प्राप्त करने के लिये जिससे महासमर करना पड़ा। ब्रह्मा के विवाह में जिसने सहस्त्रों शूर सामन्तों का सिर कटवा दिया। उसका कैसे विश्वास करें ? हमलोग अपना घोड़ा नहीं दे सकते। बनाफरों के रहते हुये उनपर दूसरे नहीं चढ़ सकते। पंचशावद हमारे पिता का है— और हमने उसे विजय में पाया है। पपीहा, करिलिया और बेंदुला हमारे हैं—हम उसके स्वामी हैं—चौहान अथवा कोई हो—किसी को न देंगे।

—भानु

जिन वीर पुरुषों ने महोबा के सिर को ऊँचा उठाया—जिन शूर वीरों ने परमाल की कीर्ति का सर्वत्र विस्तार किया—जिन्होंने वीर चन्देलों के डूबते हुये गौरव को बचाया—अफसोस! उनके साथ ऐसा व्यवहार हुआ।

महोबा नगरी के पतन का समय आ गया। निश्चय ही चन्देलों के आकाश में विपत्तियों के बादल मँडराने लगे। यदि ऐसा न होता तो परमाल की बुद्धि नहीं बदलती। वह कभी माहिल के फेर में नहीं पड़ता। कहावत* प्रसिद्ध है—मनुष्य काल को बनाता है अथवा मनुष्य ही काल के अनुसार हो जाता है।

आल्हा-ऊदल स्वात्माभिमानी पुरुष थे—उनलोगों के लिये बात ही बहुत थी। वे परमाल को पिता के समान समझते थे। उनलोगो ने बाहुबल से विशाल राज्य स्थापित किया था—अपनी शक्ति से दिशाओं में महोबा का झंडा फहराया था। पुराने शत्रुओ का नाश कर सुख शान्ति फैलाया था। यद्यपि उनलोगो का सब कुछ अधिकार था परन्तु वे सच्चे वीर थे, यदि वे चाहते तो बात की बात में परमाल को कैदकर कालिंजर पर अधिकार कर लेते परन्तु धर्मात्मा बनाफरो ने ऐसा नहीं किया।

---

* Man makes the age and age makes the man.

—Mlaxmvllar.

आल्हा का निर्वासन--भादों की काली २ घटायें आकाश में घिर रही थीं। बनाफरों के निर्वासनकी बात घर २ में बिजली के समान फैल गई। राजा के इस आज्ञा को सुन बड़े-बड़े शूर सामन्त क्षुब्ध हो उठे। सारी नगरी मे उदासी छा गई। सभी बुरा-भला कह-कहकर परमाल को कोसने लगे।

आल्हा-ऊदल सीधे दशहरपुरवा पहुँचे और परमाल की आज्ञा कह सुनाया। माता देवल देवी ने कहा—बेटा! राजा परमाल की आज्ञा का पालन करो। उन्होंने तुमलोगोंको पुत्र के समान माना है। शीघ्र सभी तैयार हो गये। ढेवा ने कहा—भाई आल्हा! हम तुम्हारे बिना नहीं रह सकते। मुझे भी साथ लेते चलो। आल्हा ने बहुत कुछ समझाया परन्तु महाबली ढेवा अपने हठ पर तुला रहा। रूपन बारी भी साथ छोड़ने के लिये तैयार नहीं हुआ।

सभी बात की बात में तैयार हो दशहरपुरवा से चल पड़े—आल्हा-ऊदल रानी मल्हना को प्रणाम करने के लिये द्वार पर पहुँचे। रानीने आल्हासे कहा—बेटा! इस समय मत जाओ मेरी बात मानकर महोबा में रहो। आल्हा ने कहा—माँ राजा की आज्ञा को हम कैसे टाल सकते हैं—आल्हा ऊदल रानी को प्रणाम कर चल पड़े। देखते ही देखते महोबा के दश सहस्र शूर सामन्त उनके साथ चलने के लिये तैयार हो गये। मार्ग में चलते हुये ऊदल ने आल्हा से पूछा—

भाई कहाँ चलोगे ? चारो ओर अपने शत्रु ही शत्रु हैं। दश सहस्र शूरवीरों के साथ कहाँ निर्वाह होगा ? पृथ्वीराज से शत्रुता ही है। बावनों गढ़ के राजे विरुद्ध ही हैं। इस भादो के महीने में निकालकर परमाल ने अच्छा नहीं किया। सोचिये, बरसात में पशु-पक्षी भी बसेरा नहीं छोड़ते।

आल्हा ने कहा—ऊदल ! वीर को चिन्तित न होना चाहिये। घबड़ाओ मत। सुख और दुःख जीवन के साथी हैं—रात और दिन के समान लगे रहते हैं—धैर्य धारण करो—विपत्तियों के नाश के लिये यही अमोघ अस्त्र है। इसकी कृपा से विपत्तियों के बादल दूर हो जायँगे। हमारा अभिप्राय कन्नौज जाने का है। महाराज जयचन्द से हमलोगो की शत्रुता नही है। इसप्रकार बातें करते हुए सभी सिरसा के धूरे पर जा पहुँचे।

आल्हा के निर्वासन की बात सुन महाबली मलखान बड़ा दुखित हुआ और दौड़ा हुआ मनाने के लिये धूरे पर पहुँचा। उसने हाथ जोड़कर कहा—भाई ! इस भादोके महीने में आप अन्यत्र न जाइये—चलिये सिरसागढ़ के सिंहासन पर बैठिये—हमलोग आपकी सेवाकर अपना जीवन सार्थक करें।

मलखान की प्रिय वाणी सुनकर आल्हा ने उन्हे हृदय से लगाकर कहा—भाई ! सिरसा महोबा राज्य के अन्तर्गत है। हम राजाज्ञा के अनुसार यहाँ नहीं रह सकते। तुम आनन्द-पूर्वक राज्य करो। हमारा विचार कनौज जाने का है। तुम यहाँ रहकर महोबा की रक्षा करते रहो। मलखान ने बहुत

मनाया परन्तु स्वात्माभिमानी आल्हा-ऊदल नहीं ठहरे।

आल्हा-ऊदल का दल आगे बढ़ा। असह्य धूप और पानी सहते हुये सभी नदिया बेतवा पहुँचे। सारा काफला नावों पर पार हो उत्तर दिशा की ओर चला—मार्ग की विपत्तियो और दुखों को सहते हुये यमुना के कि·रे पहुँचा। दूसरे ही दिन कालपी घाट पार होकर परहुल आये। वहाँ सबों ने तीन दिन विश्राम किया। इस प्रकार सिगरा मऊ पहुँचकर वीरों की छावनियाँ पड़ गईं।

—o—

बनाफर कन्नौज में——समय एक-सा नहीं रहता, काल! तू धन्य है। तेरी महिमा अकथनीय और अवर्णनीय है, तू वास्तव में अनन्त है। हाय! महाप्रतापियों को तूने बन-बन फिराया, धनकुबेरों को दर-दर घुमाया तथा अलौकिक तेजमानों को दीन और दुर्बल बनाया। संसार रंग मंच पर खेल रहा है।

काल के प्रवाल थपेड़े ने बनाफरों को निर्वासित* कर दिया। हाय! जिनके धौंसे की आवाज से महावीरों की आत्मायें

* राजा परमाल ने बनाफरों को महोबा राज्य से निकल जाने की शपथ दी, वे सकुटुम्ब चल पड़े। मार्ग में बड़ा विकट ऊसर पड़ा। न

दहल उठती थीं, जिनका नाम सुनते ही भूपालों का समुदाय शरण में आ गिरता था—आज स्वयं असहायावस्था मे सिगरा मऊ में पड़े हैं।

रात बीतते ही ऊदल ने आल्हा से कहा— भाई! यहाँ से कन्नौज निकट है। अब हमलोगो को क्या करना चाहिये? आल्हा ने कहा—चलो महाराज जयचंद से मिलें और आने का कारण कहें—अवश्य ही वे स्थान देंगे। इसप्रकार निश्चय कर आल्हा-ऊदल चल पड़े।

प्रतापी आल्हा-ऊदल अपने शूर सामन्तों के साथ कन्नौज के राजदर्बार मे पहुंचे। महाराज जयचन्द ने वीर बनाफरो की

कहीं छाया, न कहीं पानी। इन्दल और ऊदल को प्यास लगी। मार्ग में न कहीं कुआँ था और न कहीं तालाब। सभी अधीर हो व्यग्र होने लगे, परन्तु कोई उपाय न था।

इस प्रकार सभी महादुःख सहते हुये कन्नौज में आ पहुँचे। आस-पास के रजवाड़ों से उनकी लड़ाइयाँ हो चुकी थीं। वे उनके शत्रु बन चुके थे। केवल कन्नौज ही ऐसा स्थान रह गया था, जहाँ उनकी लड़ाइयाँ नहीं हुई थी।

कन्नौज पहुँच कर बनाफरों ने आने की सूचना दी। जयचंद ने आदर से उनको बुलवाया। पहले तो उसने बड़ा आदर सत्कार किया परन्तु यह जान कर कि अब ये यहीं रहना चाहते हैं तो बोला—जब राजा परमाल ने आप लोगों को निकाल दिया है तब मैं कैसे रख सकता हूँ?

परीक्षा लेने के लिये अपने दो मत्त हाथियों को दरवाजे पर भिड़ा दिया। ऊदल ने बात की बात में उन दोनों मदमत्त हाथियों को पृथ्वी पर गिरा दिया। सभी देखने वाले आश्चर्य में पड़ गये।

विजयी ऊदल बीच दर्बार में आये, कन्नौज के वीर शूर-सामन्तों ने अपूर्व स्वागत किया। महाराज जयचन्द का दर्बार बनाफरों की जयध्वनि से गूंज उठा। सभी भूरि २ प्रशंसा कर करतलध्वनि करने लगे। महाराज ने स्वयं सिंहासन से उठकर दोनों भाइयों को हृदय से लगाया।

बनाफरों से मिलकर जयचन्द अत्यन्त प्रसन्न हुये। ऊदल की वीरता देख वे मुग्ध हो गये। उन्होंने तत्काल ही आल्हा-ऊदल को रिजगिरि का परगना देकर कहा—महावीरों में आप-लोगों को पाकर अत्यन्त प्रसन्न हुआ हूँ। यह राठौर राज्य अपना ही समझिये।

दोनों भाई डेरे पर चले आये। ऊदल में स्वाभाविक तेजस्विता थी, उनकी भुजायें फड़क उठीं, उन्होंने कड़कते हुए कहा—हमलोग अतिथि स्वरूप जयचंद के दरबार में गये—परन्तु उन्होंने शरण में आये हुये की रक्षा नहीं की। वास्तव में कन्नौज राज्य ने अधर्म किया है, हम जयन्द को इसका फल अवश्य चखावेंगे। ऊदल का समाचार सुन जयचन्द ने उन्हें तुरंत बुलवाकर कहा—यदि आप मेरे दो हाथियों को हरादें, तो आप को अपने यहां रख लूंगा।

—राय श्री हरि

प्रतापी आल्हा-ऊदल महाराज जयचन्द के व्यवहार से अत्यन्त प्रसन्न हुये। वे रिजिगिरि में जाकर शूर सामन्तों के साथ रहने लगे। विपत्तियाँ सहज ही में टल गईं। वीरो के लिये कहीं दुःख नहीं है। वे जहाँ जाते हैं—घर बना लेते हैं।

बनाफरो के कन्नौज में बसने से महाराज जयचन्द की बड़ी ख्याति हुई। बुद्धिमान आल्हा ने कन्नौज राज्य की उन्नति के लिये शासन सुधार किया। व्यवस्थापिका परिषदें बनवाईं तथा योग्य मंत्रियों की समिति स्थापित की।

शासन* सुधार हो जाने पर बनाफरों ने सैन्य संचालन पर ध्यान दिया। राज्य भर की सेना एकत्र की गई। बड़े बड़े वीर सेनापति और नायक नियत किये गये। गजारोही, अश्वारोही तथा पैदल सेना का पृथक २ विभाग किया गया। इसप्रकार वीर सैनिकों को शर-संचालन और तुपकों की शिक्षा दी जाने लगीं।

---

* प्रतापी आल्हा—ऊदल के रहने से कन्नौज की वड़ी उन्नति हुई। वड़े २ वीरों का सगठन हुआ। 'बनाफरों के शूर सामन्तों ने कन्नौज के सैनिकों को शूरवीर औ रण—कुशल बना दिया।

सभी उन्हें श्रद्धा की दृष्टि से देखने लगे, प्रजा उन्हें अपना नायक समझने में गौरव मानने लगी। अवाल वृद्ध के आनन्द का ठिकाना न रहा।

—राय दुर्गागूढा

सैन्य संगठित हो जाने पर सर्वत्र राज्य के धुरों पर कोट बनाया गया। स्थान २ पर भुशुंडी लगा दिये गये। कन्नौज, रिजिगिरि और सिगरामऊ के दुर्ग की दीवारें और भी सुदृढ़ बना दी गईं।

सर्वत्र वीर सैनिकों का प्रबन्ध हो गया। राज्य भर में शान्ति स्थापित हो गई। चोर लुटेरे और डाकुओं का भय जाता रहा। दूर २ के व्यापारी आने लगे। कुछ ही दिनों में कन्नौज व्यापार का केन्द्र हो गया। आल्हा-ऊदल के परिश्रम ने कन्नौज को श्रीसम्पन्न और शक्तिशाली बना दिया। बच्चे २ निर्भीक और कर्मवीर बनने लगे।

वीरों ने कन्नौज को नया रूप दिया। वीरता की तीव्र लहर ने शूरवीरों में आत्मिक बल भर दिया। देखते ही देखते कन्नौज की ख्याति फैल गयी।

राणा लाखन का विवाह—विघ्न बाधाओं का अवसान हो गया। दुःख की रजनी बीत गई। विपत्तियों के बादल आकाश से जाते रहे। सुखरूपी अमृत की वर्षा करने वाला शशीकर उदय हो गया। बनाफरों को कन्नौज में बसते कुछ दिन बीत गये।

उस समय भारत का पश्चिमी प्रान्त बड़ा उपजाऊ और हरा भरा था। राजस्थान के पहाड़ों की उपत्यिकायें सुन्दर प्राकृतिक छवाओंसे पूर्ण तथा अत्यन्त मनोहर थीं—उसी हृदयाकर्षक प्रान्त में बूँदी नामक एक राज्य था। वह जितना सुन्दर था उतना ही शक्तिशाली, वैभववान और सुदृढ़ था।

बूँदी राज्य महाराज गंगाधर के आधीन था। उन्हें मोती और जवाहर नाम के दो पुत्र तथा कुसुमा नाम की एक सुंदरी कन्या थी। पुत्री के योग्य होने पर महाराज गंगाधर ने जवाहर को बुलाकर कहा—बेटा, कुसुमा विवाह योग्य हो गई है। नेगियों के साथ जाकर कहीं टीका चढ़ा आओ। वर और घर दोनों देखना परन्तु महोबा न जाना।

पिता की आज्ञा मान जवाहिर चारो नेगियों के साथ टीका चढ़ाने के लिये चला। दिल्ली, पथरीगढ़, बौरीगढ़ आदि अनेक राज्यों में गया परन्तु किसी ने टीका लेना स्वीकार नहीं किया।

सब ओर से निराश होकर जवाहिर कन्नौज पहुँचा। बूँदी का नाम सुनते ही जयचन्द भी भयभीत हो उठे और बोले—बूँदी कट्टर वीरों का घर है और वहाँ दिन दहाड़े जादू का प्रचार है। हम व्यर्थ शूर वीरों का सिर कटाना नहीं चाहते। तुम टीका लौटा ले जाओ।

ऊदल दर्बार में बैठे थे। महाराज जयचन्द की बात सुन वे बोले—महाराज! टीका लौटा देना लज्जास्पद है, यह क्षत्रियों

का धर्म नहीं । टीका लौटने पर लोग आप को क्या कहेंगे ? मैं तैयार हूँ—यह टीका राणा लाखन को चढ़ेगा, बूँदी जाकर मैं विवाह कराऊँगा। ऊदल की बातों से दर्बारी प्रसन्न हुए। लाखन को टीका चढ़ा दिया गया।

धीरे २ विवाह का समय आ पहुँचा। चारो ओर निमंत्रण भेज दिये गये। देश २ के राजा आ पहुँचे। कन्नौजिये तैयार हो गये। प्रतापी आल्हा-ऊदल भी शूर सामन्तो के साथ चल पड़े। बारह दिन की मंजिल तै कर बारात बूँदी के धुरे पर पहुँच गई। रूपन ने बूँदी जाकर बारात आने की सूचना दी।

आल्हा को बारात का अगुआ सुनकर गंगाधर जल उठा। क्रोध से उसकी आँखें लाल हो गईं। उसने मंत्रियों से कहा—ओछी जातिवाले बनाफर हमारे यहाँ क्यो आये ? सबों को मार भगाओ। अभी किले का फाटक बन्द करा दो।

मंत्रियो ने कहा—महाराज ! महोबिये बड़े वीर हैं—उन्हें सन्मुख जीत लेना साधारण काम नहीं है। हाँ वे छल कपट से जीते जा सकते हैं। आप नम्रतापूर्वक जवाहिर को भेज अकेले वर को बुलवा लीजिये। पश्चात् मंडप में प्रधान २ कन्नौजियों और महोबियो को बुलाकर बन्दी कर लीजिये।

मंत्रियों की बात से प्रसन्न हो गंगाधर ने जवाहिर से कहा। बुद्धिमान जवाहर बारात में पहुँच कर आल्हा से बोला—अभी शुभ मुहूर्त है, अकेले वर को भेज दीजिये। हमारे यहाँ की यही रीति है।

आल्हा ने कहा—वर अकेले नहीं जायगा, चारो नेगी और सहबाला अवश्य जायगा। अन्त मे यही हुआ—ऊदल सहबाला बने और चार शूरवीर, नेगो का वेष धारण कर पालकी के साथ चले। कुछ ही देर मे सभी बूँदी के किले मे पहुँच गये।

उधर गंगाधर ने वीरों को छिपा रक्खा था। वर और नेगियों के किले में प्रवेश करते ही बूँदी के सैनिक टूट पड़े। छल कर के सबो के शस्त्र पहले ही रखवा लिये गये थे—अतः वे कुछ न कर सके। लाखन और प्रतापी ऊदल नेगियों सहित बन्दी कर लिये गये।

भयंकर विश्वासघात की बात सुन बरातियों की आँखें लाल हो उठीं। वे राजकुमार लाखन और सेनानायक ऊदल को छुड़ाने के लिये व्यग्र हो उठे। ओह! देखते ही देखते उनकी तलवारें चमक उठीं, उनके अट्टहासकारी सिंहनाद से आकाश और पृथ्वी रवपूर्ण होने लगी।

मारू बाजे बज उठे और कन्नौज की सारी सेना बूँदी पर टूट पड़ी। उधर बूँदी वाले भी तैयार थे। भयंकर मार काट मच गई, दोपहर होते २ संग्राम ने बड़ा भयानक रूप धारण किया। बूँदी वाले बड़े वीर थे, उन्होंने कन्नौजियों का डटकर सामना किया। संध्या तक घमासान लड़ाई होती रही। लाखों वीर वसुन्धरा की गोद में सो गये। सर्वत्र पृथ्वी रक्तरंजित हो गई।

दिन का अवसान हो गया। अंधकार बढ़ते ही दोनो ओर की सेनायें हट गईं। आज की ही लड़ाई में कन्नौजियों की आधी से अधिक सेना मारी गई। बड़े २ शूर सामन्त कांप उठे, बहुत सी पैदल सेना तो भाग खड़ी हुई। बूँदीवालों का पराक्रम देख जयचन्द का हृदय दहल उठा। उन्होंने कन्नौज लौट चलने की अनुमति दी। परन्तु आल्हा ने इसमें राज्य का अपमान समझा। उसने सबों को समझा बुझाकर रोक रक्खा।

दूसरे ही दिन आल्हा ने मलखान को लिख भेजा। मलखान और ब्रह्मा के साथ वीर महोबियों की सेना आ गई। प्रतापी मलखान ने बड़ी वीरता दिखलाई। उसके प्रबल आक्रमण से बूँदी की सुदृढ़ दीवारें चूर २ हो गईं। चारों ओर से उसने कोट को घेर लिया और सुरंग खोदकर बारूदों से उड़ा दिया। महोबा की उन्मत्त-वाहिनी निर्भय राजधानी में पैठ गई। घोर तुमुल कोलाहल हुआ। वीर मलखान की मार से बूँदी के होश उड़ गये। सेना भाग खड़ी हुई। जवाहर और मोती पकड़े गये तथा गंगाधर की मुश्कें बांध ली गईं।

राजा और उसके पुत्रों को बन्दी कर मलखान ने ऊदल और लाखन को छुड़ाया। यथासमय लाखन का विवाह कुसुमा से हो गया। राजा गंगाधर ने एक वर्ष बाद गौना देना निश्चय किया। सभी आनन्दपूर्वक कन्नौज की ओर चले। कालपी पहुँचकर मलखान और ब्रह्मा ने महोबा की राह ली और आल्हा-ऊदल बारात के साथ कन्नौज की ओर बढ़े।

गांजर की समरभूमि—कन्नौज का राज दरबार वीरों से खचाखच भरा था। जयचन्द स्वर्ण सिंहासन पर बैठे थे। मंत्रियों ने कहा—महाराज! गांजर का कर वर्षों से पड़ा है—कई बार सेना भी लौट आई परन्तु कर नहीं मिला।

मंत्रियों की बात सुन जयचन्द ने कहा—कोई ऐसा वीर है जो गांजर से कर वसूल कर सके? जो विजय कर लौटेगा उसे भारी खिलकत और उचित पारितोषिक मिलेगा।

बहुत समय बीत गया—परन्तु कोई शूर तैयार नहीं हुआ। यह देख प्रतापी ऊदल उठ खड़े हुये और बोले—मैं इस कार्य के लिये तैयार हूँ।

ऊदल के तैयार होते ही मारू बाजा बज उठा। राजकुमार लाखन सेना सहित चल पड़े। आल्हा के साले जोगा-भोगा आये हुये थे। वे भी ऊदल के साथ २ चले। इसप्रकार उन्मत्त चतुरङ्गिणी सेना भयंकर अट्टहास करती हुई विरियागढ़ पहुँची।

विरिया गढ़ गाँजर का एक भाग था। हरिसिंह और वीर सिंह दोनों भाई वहाँ के शासक थे। विरिया गढ़ कन्नौज के अधिकार मे था। हरिसिंह और बीर सिंह ने १२ वर्ष से कर नहीं दिया था—वे स्वतंत्र हो गये थे। ऊदल ने अपने आने की सूचना दी। हरिसिंह और वीरसिंह का हौसला बढ़ा हुआ था। कई बार कन्नौज की सेना को परास्त कर चुके थे। ऊदल का सन्देश सुन उत्तेजित हो उठे। कन्नौजियों से लड़ने के लिये विरिया गढ़ की सेना तैयार हो गई।

दोनों सेनायें धुरे पर आपस में भिड़ गईं—वीर सिंह और हरि सिंह दोनो भाई ललकारते हुए शत्रुदल पर टूट पड़े। ऊदल भी शूर सामन्तों के साथ हुंकारते हुये आगे वढ़े। कुछ देरतक कड़ी लड़ाई होती रही—अन्त में पराक्रमी ऊदल ने हरिसिंह और वीर सिंह को वन्दी कर लिया। विरिया गढ़ की सेना भाग खड़ी हुई। गढ़ लूट लिया गया और राजकोप कन्नौज भेजा गया।

विरिया गढ़ अधीनकर ऊदल पट्टी की ओर वढ़े। महाराज सान्वनि ने भी १२ वर्षसे कर नहीं दिया था। बड़ी लड़ाई हुई, अन्त मे प्रतापी ऊदल ने उन्हे भी वात की वात मे परास्त कर लिया। यहाँ का सारा राजकोष लूट लिया गया। इस प्रकार विजय करते हुये सभी कामरूप पहुँचे। महाराज कमलापति भी लड़ने के लिये तैयार हो गया। ऊदल ने उनकी खूब मरम्मत की। कमलापति अपने शूर सामन्तो के साथ पकड़ लिये गये। सारा राजकोष ऊदल के अधिकार मे आ गया। आगे वढ़ते ही वंगाल के राजा गोरख से ऊदल की मुठभेड़ हुई। ऊदल ने गढ़के भीतर धावा करके माल खजाना लूट लिया। तीन महीना तेरह दिनतक कठिन तलवार चलती रही।

इसी यात्रा में ऊदल ने कटका, जिन्सी, गोरखपुर और पटना आदि के राजाओ को युद्ध मे हराया। गांजर प्रदेश आधीन हो जाने पर ऊदल कन्नौज की ओर लौटे। लाखन ऊदल को वीरता से अत्यन्त प्रसन्न हो वोला—भाई! मैं आपसे मित्रता करना

चाहता हूँ—ऊदल ने स्वीकार कर लिया। दोनों पगड़ी पलटकर मित्र बन गये।

तीन महीने तेरह दिन के मोर्चे मे १२ राजे* बन्दी हुये। विजयी ऊदल कन्नौज पहुँचे। राजा प्रजा सबों ने अपूर्व स्वागत किया। विजय के उपलक्ष मे घर२ मंगलाचार होने लगे। राज-दर्बारियों के हर्ष का ठिकाना न रहा। ऊदल द्वारा अपार धन-राशि प्राप्त होते देख जयचन्द अत्यन्त प्रसन्न हुये। उन्होंने ऊदल की भूरि २ प्रशंसा की और हृदय से लगाया।

---

* विरियागढ़—हरिसिंह, वीरसिंह

पट्टी—महाराज सान्तनि

कामरूप—महाराज कमलापति

बंगाल—राजा गोरख

कटक—मुरली, मनोहर

जिन्सी—राजा जगमणि

रूसनीगढ़—चिन्तामणि ठाकुर

गोरखपुर—सूरज

पटना—राजा पूर्णचन्द्र

काशी—हंसमणि

गाँजर विजय में इन्हीं बारह राजाओं के साथ लड़ाइयाँ हुई थीं।

—जगनिक

दूसरे ही दिन सभी राजे दर्बार में हाजिर किये गये। सबों ने प्रसन्न मन अधीनता स्वीकार की। ऊदल के कहने से जयचन्द ने सबों को छोड़ दिया। बन्दी राजे ऊदल के इस व्यवहार से अत्यन्त सन्तुष्ट हुये और हृदय से मंगल कामना करने लगे। प्रजा मुक्तकण्ठ से प्रशंसा करने लगी। कन्नौज मे बनाफरो की तूती बोलने लगी।

पाठको! माहिल को आपलोग भूले न होंगे। दुरात्मा अपने भांजों के कन्नौज में रहने का हाल सुन मारे जलन के व्यग्र हो उठा और शीघ्र कन्नौज पहुंचा। लाखन और जयचन्द माहिल को अच्छी तरह जानते थे। उन्होंने खूब फटकारा। वह अपना-सा मुँह लिये लौट पड़ा। मार्ग में एक युक्ति सूझ पड़ी। वह तत्काल बूँदी पहुँचा और गंगाधर को बनाफरो के विरुद्ध खूब उभाड़ा। यहाँ तक कि गंगाधर बोल उठे—अब बनाफर गौने मे आयेंगे तो मैं कभी गौना न दूँगा।

धीरे-धीरे गौने का समय आ पहुँचा। राजा जयचन्द निमन्त्रित राजाओं के साथ सदल बल बूँदी पहुँचे—आल्हा ही इस बार भी अगुआ थे। राजा गंगाधर ने गौना देना अस्वीकार कर दिया—बनाफर वीर भी अड़ गये। बात की बात मे लड़ाई ठन गई। राजा गंगाधर ने पुत्रो सहित बड़ी वीरता दिखलाई परन्तु प्रतापी ऊदल और मलखान के आगे एक न चली। दोनों महावीरो ने, पुत्रों और पिता सहित बूँदी के शूर सामन्तों को बाँध

लिया। राजा गंगाधर ने विवश हो कर गौना दे दिया। सभी प्रसन्नतापूर्वक कुसुमा को विदा कराकर कन्नौज आ गये। मलखान और ब्रह्मा मार्ग से ही महोबा की ओर चले गये।

सिरसा की रणभूमि—कन्नौज में अपनी दाल न गलते देख माहिलका ध्यान महोबा की ओर गया। उसने सोचा अभी महोबाकी भूमि वीरोंसे खाली है—किसी प्रकार बढ़ावा देकर पृथ्वीराजको चढ़ा लाना चाहिये। महोबा नगर इस समय अवश्य ही लूट लिया जा सकता है। ऐसा निश्चय कर दिल्ली पहुँचा और दिल्लीश्वर से मिलकर अपना अभिप्राय उसने कह सुनाया।

उस दुरात्मा ने कहा—महाराज! बड़ा अच्छा अवसर है—महोबा वीरों से खाली है, राजा परमाल ने पराक्रमी योद्धा आल्हा और ऊदल को निकाल दिया है—इस समय वे कन्नौज में हैं—अकेले मलखान है—वह क्या कर सकता है? महोबा के साथ ही आप सिरसा को भी लूट लें। ऐसा स्वर्ण-संयोग बार २ नहीं आ सकता।

अकेले। मलखान हैं—यह सुनकर पृथ्वीराज रुक गये। थोड़ी देर के बाद बोले—परिहार! अकेले मलखान ही मोर्चा रोकने के लिये काफी है—वह आल्हा और ऊदल से कम बलवान नहीं है। इतने पर भी उसका वीर भाई सुलखान भी होगा। सुलखान की बहादुरी क्या तुम भूल गये? उसी महावीर ने तुम्हें पकड़कर गढ़ के फाटक में टांग दिया था—क्या पुरानी बातें विस्मृत हो गईं?

पृथ्वीराज की बात सुन माहिल कुछ क्षण के लिये चिन्तित हो उठा—मारे लज्जा के उसका सिर नीचा हो गया। परन्तु तत्काल ही अपने मनोभावो को छिपाकर बोला—महाराज! सुलखान ने कोई वीरता का काम नहीं किया। भांजे के ऊपर हाथ उठाना धर्मविरुद्ध कार्य्य है—यही सोचकर मैं चुप रहा। क्या मैं किसी से कम वीर हूँ। पृथ्वीराज हँस पड़े।

माहिल ने बड़ा आडम्बर खड़ा किया। उसने दिल्ली के शूर वीरो के ऊपर खूब पानी चढ़ाया। कुछ ही देर मे चामुण्ड राय, संयम राय, ताहिर और चन्दनादि महाबली गरज उठे और पृथ्वीराज से बोले—महाराज! शीघ्र महोबा पर आक्रमण करने की आज्ञा दीजिये। ताहिर ने कड़कते हुये कहा—मुझे महोबा से बेला के विवाह का बदला लेना है—मैं महोबा को मिट्टी मे मिला दूँगा। मेरे अमोघ शस्त्रो से चन्देलों की विजयोन्मत्त वाहिनी रणांगण में थिरकती हुई धराशायी होगी।

ताहिर के ओजस्वी शब्दों ने चौहानों मे जान डाल दी।

सभी एक स्वर में बोल उठे—महोबा पर आक्रमण किया जाय, बनाफरों से सिरसागढ़ छीन लिया जाय, चन्देलों से बेला के विवाह का बदला लिया जाय। इसप्रकार बहुमत देख पृथ्वी-राज को विवश हो महोबा के विरुद्ध प्रस्ताव स्वीकार करना पड़ा।

दिल्लीश्वर की आज्ञा हो गई। मारू बाजा बज उठा। सेना में चारो ओर निशान बजने लगे। बड़े २ शूर सामन्त शस्त्रों से से सुसज्जित हो हुँकारते हुए किले से निकल पड़े। सेनापति महाबली चामुण्डराय की आज्ञा से चतुरंगिणी सेना चल पड़ी। ताहिर अश्व पर आरूढ़ हो आगे चला। पारथ और चन्दन भी अपने २ घोड़ों पर जा चढ़े। महाराज पृथ्वीराज ने स्वयं भी साथ दिया।

कूँच का डंका बज गया। अपार चतुरंगिणी की चाल से महाकोलाहल हो उठा। दिशायें धूल से भर गईं—दुन्दुभी, धौंसे और डंके के शब्द से आकाश गूंज उठा। घोड़े, हाथियों के चिग्घाड़ और रथो की गरगराहट से लोग चौंक पड़े। विशाल वाहिनी पृथ्वी को थर्राती हुई आगे बढ़ती गई।

सारी सेना सिरसा* के धुरे पर पहुँच गई। महाबली चन्द

---

* पृथ्वीराज का यह आक्रमण माहिल के द्वारा हुआ। वह मलखान को धुरे पर क़िला बनवाते देख जल उठा और दिल्ली जाकर कह सुनाया। उसने पृथ्वीराज से यह भी कहा कि मलखान अपनी सीसा बढ़ाता चला आ रहा है। उसने धुरे पर क़िला बना लिया है। अब वह

की सम्मति से शिविर तैयार होने लगा। हजारों गजारोही और लाखों अश्वारोही उतर पड़े। कोसों में पड़ाव पड़ गया। रथों से घोड़े खोल दिये गये। हाथियों का हौदा उतर गया, दिशाओं में भुशुंडियाँ लगा दी गईं। दिल्ली की वाहिनी विश्राम करने लगी। रात भर परामर्श होता रहा।

प्रातः काल होते ही महावली चामुंडराय के सेनापतित्व मे दिल्ली की सेना चल पड़ी। थोड़ी ही देर मे वीरों ने सिरसा को घेर लिया। पृथ्वीराज के आक्रमण की वात सुन मलखान ने भी सैनिको को तैयार होने की आज्ञा दी। वात की वात में सारी सेना सज गई। सभी एक साथ ही किले से निकल

चारो ओर कोसों तक अपने अधिकार में कर लेगा। आप शीघ्र चढ़ाई कर सिरसा और महोवा को जीत लीजिये जिससे सर्वदा के लिये यह झगड़ा मिट जाय।

पृथ्वीराज ने पड़ोसी शत्रु को वढ़ते देना उचित नहीं समझा। उन्होंने शीघ्र सेना सजाकर सेनापति चौंड़ा को सिरसागढ़ पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी। पृथ्वीराज स्वयं अपने पुत्र के साथ रणभूमि में आये। उन्होंने मलखान को कहला भेजा कि किला गिरवा दो अथवा आकर युद्ध करो। उसने उत्तर दिया—किला हमने अपने राज्य की सीमा में बनवाया है उससे आपको कुछ हानि नहीं है। आप श्रेष्ठ हैं, आप से युद्ध करना मैं उचित नहीं समझता। आप अपना विचार त्याग दें—

—लेखक

कर चौहानों पर टूट पड़े। चारो ओर मार काट मच गई। बड़े २ वीर कट-कट कर गिरने लगे । पृथ्वी आहतों से पटने लगी।

मलखान और चौड़ा का सामना हुआ। वीर मलखान युद्ध कला मे ऐसा निपुण था कि थोड़ी देर तक तो चौड़ा हक्का-बक्का सा खड़ा देखता रह गया। लड़ते-लड़ते महाबली मलखान ने चौड़ा को पकड़ लिया। उसकी मुश्कें बांध दी गईं । पश्चात् स्त्री वेश बनाकर उसको एक पालकी में बैठा दिल्लीश्वर के पास भेज दिया। साथ ही यह कहने के लिये एक सर्दार भी भेज दिया कि मलखान हार गया, सिरसागढ़ की राजकन्या जा रही है, इसे स्वीकार कर युद्ध बन्द कीजिये। सवार ने वैसा ही कहा। पृथ्वीराज सुनकर प्रसन्न हो उठे। परन्तु पालकी का पर्दा उठाकर देखा तो सिरसागढ़ की राज-कन्या के बदले हाथ पांव बँधे हुये स्त्री के वेश मे चौड़ा को बैठा पाया। दोनो अत्यन्त लज्जित और क्रुद्ध हुये।

दिल्लीश्वर के क्रोध का ठिकाना न रहा। उन्होंने शीघ्र सेना को तैयार होने की आज्ञा दी। देखते ही देखते सिरसा की रण-भूमि वीर चौहानो की हुँकार से गूँज उठी।

इधर मलखान के दल मे भी डंका बज गया। बात की बात मे सहस्रो शूर सामन्त तैयार हो गये। मलखान कबुतरी घोड़ी पर चढ़ कर द्रुतवेग से आगे बढ़ा, दोनो सेनायें भिड़ गईं। आज पारथ और मलखान का सामना हुआ।

दोनो वीर थे, वज्रांग थे, रण बाँकुरे थे। बढ़ बढ़कर प्रहार करने लगे। दोनो के घात-प्रतिघात से भयानक शब्द होने लगे। शस्त्रों के आघात से चिनगारियाँ निकलने लगीं। दोनो पक्षहीन पहाड़ो के समान बोध हो रहे थे। इधर दोनो महावीर लड़ रहे थे और उधर सैनिक आपस में भिड़ रहे थे। धीरे २ दिवाकर मध्य नभ में आ पहुँचा। वीरों का युद्ध और भी भयानक हो उठा। दोनो रक्त से लथपथ हो गये। सन्ध्या होते ही दोनो सेनायें हट गईं।

यह महासमर सात दिनों तक चलता रहा। एक दिन मलखान ने निश्चय किया कि आज बिना पारथ को मारे रणभूमि से नहीं लौटूँगा। सन्ध्या होते ही जब चौहानो की सेना अपने शिविर मे लौटने लगी तब मलखान ने ललकारते हुये कहा—क्षत्रियों का यह धर्म नहीं। आओ! रात्रि मे भी युद्ध करो। पारथ सेना सहित लौट पड़ा। सभी वीर बाँकुरे अन्धकार में युद्ध करने लगे। लड़ते २ महाबली मलखान ने भाला उठा लिया और बड़े वेग से पारथ पर चला दिया। मलखान का चलाया हुआ भाला पारथ के कलेजे को छेदता हुआ पार हो गया। पृथ्वीराज का महाबली पुत्र रणस्थल मे गिर पड़ा। चौहानों की सेना भाग खड़ी हुई। दिल्ली के शिविर में शोक छा गया।

पृथ्वीराज पुत्र शोक से अत्यन्त क्रुद्ध हो उठे। उन्होंने वीरों को बुलाकर कहा—कौन ऐसा वीर है जो मलखान को

गन्दी कर मेरे सन्मुख उपस्थित कर सकता है ? घंटों प्रतीक्षा में बीत गये—परन्तु कोई तैयार नहीं हुआ। अन्त मे उन्होंने धीरसिंह को बुलाकर कहा—जाओ, मलखान को पकड़ लाओ।

धीरसिंह आल्हा का मित्र था। वह अकेला मलखान के पास पहुँचा। उसने दिल्लीश्वर का अभिप्राय कह सुनाया। मलखान ने कहा—भाई ! मैं क्षत्रिय-धर्म को कलंकित नहीं कर सकता। मेरा कोई दोष नहीं है। पृथ्वीराज ने स्वयं आक्रमण किया है। मैं युद्ध मे ही तलवार के बल पर मिलूँगा। मैं दिल्ली की तीन लाख सेना से नहीं डरता। यदि अगणित सेना भी आ चढ़े तो मैं जबतक हाथ मे तलवार रहेगी आधीनता स्वीकार नहीं करूँगा।

मलखान की बात सुन धीरसिंह क्रोधित हो उठे। उन्होंने तत्काल उठकर सांग उठा ली और बड़े जोर से पृथ्वी पर दे मारी। तब धीरसिंह ने मलखान को ललकार कर कहा—यदि वीर हो तो मेरे सांगे को उखाड़ लो।

धीरसिंह की बात सुन महाबली मलखान तत्काल उठ खड़ा हुआ और सांगे के पास पहुँचा। उसने बात की बात मे सांगे को उखाड़ लिया। धीरसिंह लज्जित हो चौहान शिविर में लौट गया। पृथ्वीराज ने अकेले लौटने का कारण पूछा। धीरसिंह ने सारी बातें कह सुनाईं।

मलखान की वीरता सुन पृथ्वीराज घबड़ा उठे। उन्हे जीत की आशा न रही। उन्होने समझा था कि आल्हा ऊदल के न

रहने पर महोबा पर अधिकार कर लेना सहज होगा। परन्तु मलखान के सामने चौहानों की तलवारों मे एक धूमिल रेखा सी दृष्टिगोचर होने लगी। पृथ्वीराज अपार शोक सागर मे डूबने उतराने लगे। शोक और क्रोध ने उन्हें विह्वल बना दिया। इसी समय धाँधू ताहिर और चन्दन आ पहुँचे। उन्होने धीरज देते हुये कहा—महाराज! आप चिन्ता न करें। प्रातःकाल होते ही हमारी सेना युद्धभूमि में पहुँचेगी। कल अवश्य ही मलखान को दण्ड दिया जायगा।

सबेरा होते ही दिल्ली की सेना सज गई। धांधू, चौड़ा ताहिर चन्दन, संयमराय महाबली चंद आदि महावीर चल पड़े। उधर से मलखान भी आ पहुँचा। पृथ्वीराज ने आगे बढ़कर स्वयं मलखान से किला बनाने का कारण पूछा। उसने कहा—किला सिरसा की भूमि मे बना है। मैं उसे नहीं गिरा सकता। पृथ्वीराज ने कहा—किला न गिराने से सिरसा और महोबा मिट्टी मे मिला दिया जायगा।

मलखान को अच्छा अवसर मिल गया। उसने हँसते हुये कहा—दिल्लीश्वर! उन दिनों को याद करिये, जब ब्रह्मा की बारात दिल्ली गई थी और उसके पहले जब हमने पारथ के हाथ से सिरसा छीन लिया था। मलखान की बात सुन पृथ्वीराज जल उठे। उन्होंने सैनिकों को सिरसा लूट लेने की आज्ञा दी। सभी गर्जते हुये एक साथ ही दौड़ पड़े। समुद्र के भयानक ज्वार के समान सेना गढ़ की ओर उमड़ चली।

वीर महोबियों ने मेरू के समान अड़ कर उन्मत्त उदधि-तरंग रूपी चौहान वाहिनी को रोक लिया। अब वे डट २ कर युद्ध करने लगे। उनकी मार से दिल्लीश्वर की सेना कांप उठी। मलखान निर्भय युद्ध करता हुआ आगे बढ़ा। इसी बीच में चन्दन और सुलखान से युद्ध होने लगा। कुछ ही देर में सुल-खान की मार से चन्दन पृथ्वी पर गिर पड़ा। भाई को गिरते देख ताहर आगे बढ़ा और सुलखान से लड़ने लगा। महाक्रोध के वशीभूत हो ताहर ने एक ऐसा हाथ चलाया कि सुलखान जूझ गया।

भाई के मरने का समाचार सुन मलखान की क्रोधाग्नि भड़क उठी। वह प्रत्यक्ष काल रूप हो उठा। उसने शीघ्र ही प्रलय मचा दी। बात की बात में हजारों शूर सामन्तों को सदा के लिये पृथ्वी पर सुला दिया। सहस्रों नायकों का शरीर घावों से भर दिया। राजा अंगद, राजा सूरत, महाबली चन्द्रसेन आदि पराक्रमी वीर मारे गये। अकेले मलखान की मार से दिल्ली की सेना भाग खड़ी हुई। प्रतापी मलखान आठ कोस तक खदेड़ता गया। पृथ्वीराज किसी प्रकार दिल्ली पहुँचे। विजयोन्मत्त महोबियों ने जयनिनाद से दिशाओं को गुञ्जरित करते हुये गढ़ में प्रवेश किया।

—o—

महासमर की तैयारी—बनाफरों की विजय होने पर भी सुलखान की मृत्यु ने उन्हें शोक विह्वल कर दिया। वे हर्ष के स्थान में शोक मनाने लगे। चारों ओर उदासी छा गई। राजा-प्रजा सभी विजय भूल बैठे।

इधर अपनी पराजय पर पृथ्वीराज को बड़ी ग्लानि हुई। वीर चौहानों का अभिमान चूर २ हो गया। महाबली मलखान की वीरता से दिल्लीश्वर की आशा पर पानी फिर गया।

दिल्ली के दर्बार मे सन्नाटा छा रहा था। सहस्रों शूरवीर सिर झुकाये उदास बैठे थे। पृथ्वीराज मलखान को परास्त करने के विचार में लीन थे—इतने मे माहिल आ पहुँचा। माहिल ने झुककर पृथ्वीपति को प्रणाम किया। पृथ्वीराज ने उचित सत्कार करने के पश्चात् आने का कारण पूछा। माहिल ने कहा—महाराज मैं अभी सिरसागढ़ से आ रहा हूँ। मुझे बड़ा भारी भेद मिला है। यदि आप उसी के अनुसार काम करें तो महोबा बात की बात में आधीन हो जायगा।

पृथ्वीराज ने अनिच्छा प्रकट करते हुये कहा—कहो, क्या भेद लाये हो। माहिल ने उत्तर दिया—महाराज! मलखान बड़ा शूरवीर है। उससे सन्मुख समर मे विजय पाना बालकों का खेल नहीं है। मैंने तो जाना था कि चौहान शूरवीर हैं—लड़ाके हैं, विजयी हैं। परन्तु अब जान लिया कि संसार में दो ही महाबली हैं—एक ऊदल और दूसरा मलखान।

माहिल की बातें पृथ्वीराज को अच्छी नहीं लगीं। उन्होंने क्रोध करते हुये कहा—परिहार! तुम भेद बताने के लिये आये हो अथवा हमें अपमानित तथा लज्जित करने। तुम्हारी बातें हृदय को दुःख दे रही हैं। मैं अधिक सुनना नहीं चाहता।

पृथ्वीपति को क्रोध करते देख परिहार ने कहा—आप-लोगों को अपमानित करने का मेरा विचार नहीं। मैं तो स्वयं लज्जासे गड़ा जा रहा हूँ। क्या बनाफरों से बढ़कर हमारा कोई और शत्रु है? महाराज कभी सारा भारत हमारे पूर्वजों के अधिकार में था। बनाफरों की उन्नति से जितना मुझे दुःख है उतना आप अथवा और किसी को नहीं हो सकता। सुनिये—मैं स्पष्ट कहता हूँ, आप बिना माहिल की सम्मति के कभी विजय नहीं प्राप्त कर सकते। मैं आप की अपकीर्ति मिटाना चाहता हूँ। व्यर्थ रुष्ट न हों।

धूर्त साले की कूटनीति भरी बातें सुन पृथ्वीराज ने आग्रह-पूर्वक पूछा—भाई! कहो, कहो, उस भेद को कह सुनाओ, जिसके द्वारा बनाफरों पर विजय प्राप्त किया जाय। मैं रात-दिन इसी चिन्ता मे पड़ा हूँ कि किसीप्रकार पराजय की अप-कीर्ति मिटे।

दिल्लीश्वर की बात सुन माहिल* खिलखिलाकर हँस पड़ा।

---

*माहिल फिर पृथ्वीराज के पास आ पहुँचा और कहने लगा बिना कुछ चतुराई किये आप मलखान को जीत नहीं सकोगे। बड़ी बड़ी

उसने कहा—सुनिये। सबसे पहले हजारों बेलदारों को सिरसा के धुरे पर भेजिये। वहाँ जाकर लोग खन्दक खोदें और उसमें तेज धारवाली बर्छियाँ गाड़ दें। इसप्रकार सैकड़ो बड़े २ खंदक खोदे जाँय। इस बात का ध्यान रहे कि—वे खंदक घास फूस और मिट्टी से इस प्रकार पाटे जायँ कि किसी को कुछ भ्रम न हो। पूर्ण प्रबन्ध हो जाने पर आप पुनः सिरसा पर आक्रमण कीजिये। जब महाबली मलखान युद्धभूमि में आये तब उसे ललकार कर उन्हीं खन्दक के पास ले आइये। उसमें गिरते ही बर्छियों से वह घोड़ी सहित विद्ध हो जायगा। फिर उसे पकड़ कर मार डालना कोई बड़ी बात नहीं है।

माहिल के भेद ने दिल्लीश को फड़का दिया। वे धन्यवाद देते हुये बोले—शाबास! परिहार, तुम बहादुर हो। उन्होंने शीघ्र चौड़ा को बुलाकर युद्ध की तैयारी का हुक्म दिया। दिल्ली में युद्ध का डंका बज उठा। पृथ्वीपति की चतुरंगिणी पुनः तैयार होने लगी।

—o—

खाइयाँ खुदाकर उनमें भाले बरछी आदि नोकदार हथियार गड़वा दीजिये। उपर से उसे घास फूस से ढकवा दीजिये। लड़ते लड़ते मलखान को वहीं लाइये। मलखान यदि उस खार में गिर पड़ेगा तो भाले में बिंध जायगा और मर जायगा। इस तरकीब से आप अवश्य कामयाब होंगे।

—*History of Alha*

मलखान की मृत्यु—सिरसा के धुरे पर चौहानों का डंका बजने लगा। गुप्तचरों के द्वारा पृथ्वीराज के पुनः चढ़ाई करने का समाचार सुन वीर मलखान शूर सामन्तों को बुलाकर बोला—वीरों! चौहानों ने फिर आक्रमण किया है। पहले के समान ही इस बार भी उन्हें दण्ड देने के लिये तैयार हो जाओ। मातृभूमि की रक्षा करने में मत चूको। बाँके बहादुरों! उठो, अपनी २ तलवारें खींच लो और रणचण्डी की जय करते हुये एक साथ ही टूट पड़ो।

वीर सरदार की आज्ञा पाते ही सूर सामन्त गरज उठे—हमलोगों के जीते हुये चौहान कुछ नहीं कर सकते। हमारी मातृभूमि वीरजननी है—हम वीर हैं, शत्रुओं को मार भगाने मे अपनी पूर्ण शक्ति लगा देंगे। आप निर्भय और निश्चिन्त रहे—महोबिये वीर शत्रु को पीठ नहीं दिखला सकते। इतना कहते २ सबों की तलवारें म्यान से निकल पड़ीं।

इसी क्षण युद्ध का डंका बजने लगा। सिरसा की अजेय सेना, तुपकों और भुशुण्डियो की गड़गड़ाहट से आकाश को थर्राती हुई धुरे पर पहुंच गई। चौहान वाहिनी पहले से ही डटी हुई थी। चन्देलों को आते देख वे भुशुण्डियो से अग्नि बरसाने लगे। दिशायें विषैले धुओं से भर गईं। सर्वत्र अंधकार-सा छा गया।

एक पहर तक दोनों ओर की भुशुण्डियाँ अग्नि उगलती रहीं। वीरो ने तुपकों को उठा लिया। दनादन गोलियाँ चलने

लगीं। दोनों ओर के वीर बात की बात में जूझने लगे। कुछ ही देर मे सांगों और बर्छियों की लड़ाई होने लगी, अश्वारोहियों और गजारोहियों ने परस्पर भयंकर संग्राम किया। हजारो हौदे खाली हो गये—बिना सवार के घोड़े इधर-ऊधर भागने लगे।

दोनों सेनायें भिड़ गईं। मलखान के बहादुर सामन्तो ने तलवारें पकड़ी—महोबिये वीर एकलिंग की जय कहते हुये चौहानो के दल मे पिल पड़े। महाबली मलखान स्वयं शत्रुओ का संहार करता हुआ आगे बढ़ा। वीर चन्देलों की मार से चौहानो का मोर्चा हटने लगा। कुछ ही देर मे खलबली मच गई। दिल्ली की सेना पीछे हटने लग गयी। अपनी सेना को बनाफरो से विचलित होते देख ताहिर, चौंडा और निरढुराय आगे बढ़े।

पराक्रमी शत्रुओ को आगे बढ़ते देख मलखान ने बड़े जोर से आक्रमण किया। उसने अकेले ही कैमास, ताहिर, चामुण्ड राय, निरढुराय आदि महायोद्धाओं को निःशक्त कर दिया। मलखान से युद्ध करते हुये दिल्ली के बड़े २ सेनापति धराशायी हो गये। स्वयं पृथ्वीपति का हाथी चिग्घाड़ता हुआ भाग चला।

दोपहर तक बहुत भयंकर लड़ाई होती रही। चौहानों के सहस्रों शूर कट गये। दिल्ली की विशाल वाहिनी मध्यान्ह दिवाकर के समान मलखान के सन्तप्त तेज को नहीं सह सकी। देखते ही देखते भाग खड़ी हुई—सिरसा के शूरों ने उनका पीछा

किया। इसी समय पृथ्वीराज ने अपना हाथी आगे बढ़ाया और चौड़ा को खाई के उस पार से मलखान को ललकारने का इशारा किया। चौड़ा* सब कुछ जानता था। खाई के उसपार से ललकारने लगा।

नरसिंह मलखान—शत्रु की ललकार कब सुन सकता था।—तत्काल चौड़ा की ओर लपक पड़ा। उसके ऐड़ से घोड़ी बड़े जोर से उचकी—मलखान को काल के समान आते देख

---

* पृथ्वीराज ने माहिल से भेद जानकर सिरसा पर पुनः आक्रमण किया। यह चौहान का तीसरा आक्रमण था। पृथ्वीराज ने युद्ध के लिये ललकारा। मलखान भी युद्ध के लिये तैयार हुआ। दोनों दल मैदान में आ डटे। चौड़ा लड़ते २ मलखान को उन खाइयों के पास ले गया। मलखान को क्या खबर थी कि ऐसी धोखेबाजी की गई है। अचानक कबुतरी घोड़ी मलखान को लेकर खन्दक में चली गई। बर्छियों के पेट में धँसते ही घोड़ी गिर पड़ी। उसके गिरते ही मलखान भी गिर पड़ा और वीरगति को प्राप्त हुआ।

यद्यपि विश्वासघात और अधर्म के द्वारा महाबली मलखान का अंत हो गया—परन्तु उसकी अमर कीर्ति आज तक स्थिर है।

लाज गई बछराज के संग, कृपाण गई मलिखान अकेले।
फाढि के तेग फिरी दल में, पृथ्वीराज कि फौजन मारि के ठेले॥
लेहु के नारे पनारे चलाये, मनो रँगरेज कुसुम्भ सनेले।
ठाढ़ी कहैं मलिखान की रानि, कि आवत कंत बसंत से खेले॥

चौड़ा एकबार दहल गया। महाबली मलखान की घोड़ी जिस स्थान पर कूदी—वहीं पर खाई थी। वह भाले घोड़ी के पेट में चुभ गये। घोड़ी के गिरते ही मलखान भी गिर गये।

प्रतापी मलखान के गिरते ही सिरसागढ़ में कोहराम मच गया। मलखान की माता और पतिव्रता पत्नी गजमती मूर्छित होकर गिर पड़ीं।

प्रजा हाहाकार करती हुई रणस्थल मे जा पहुंची। गजमती के क्रोध का ठिकाना न रहा। पृथ्वीराज को देखते ही उसका शरीर जल उठा। वह एकाएक रणचण्डी के समान भयानक हो उठी और गरजते हुये बोली—क्षत्रिय नराधम ! विश्वासघाती ! नारकी ! यहाँ से चला जा—अन्यथा मैं खंग धारणकर स्वयं युद्ध करूँगी, तुम्हारी सारी मान मर्यादा मिट्टी में मिला दूँगी। रानी के क्रोधपूर्ण शब्दो से दिशाये गूँज उठी—दिल्लीश लज्जित होकर दिल्ली की ओर कूँच कर गया।

गजमती ने अपने पति के शव से लिपट कर बहुत विलाप किया। पति-वियोग असह्य होने के कारण वह सती हो गयी। मलखान की माता ने भी पुत्र शोकके कारण शरीर त्याग दिया।

मलखान की मृत्यु का समाचार सुनते ही महोबा के बाहर भीतर हाहाकार मच गया। राजा परमाल और रानी मल्हना बेहोश होकर गिर पड़ीं। आल्हा-ऊदल के न रहने पर परमाल को मलखान का ही भरोसा था।

भुजालियों की लड़ाई—पृथ्वीराज दिल्ली पहुँच गये। परन्तु उनका ध्यान महोबा से नहीं हटा। महोबा राज्य को निर्बल बना देना राजनीति की दृष्टि में उन्हे बहुत जरूरी जान पड़ता था। श्रावण लगते ही उन्होंने महोबा पर चढ़ाई करने की आज्ञा दी। सेनापति चौंड़ा बड़ी भारी सेना लेकर चल पड़ा। पृथ्वीराज ने दूत के द्वारा कहला भेजा कि महोबा का उत्तरी प्रान्त, सिरसा का किला, कई लाख रुपये पाँचो घोड़े और वार्षिक कर भेजो।

राजा परमाल बहुत डरे, वह कोई उत्तर न दे सके। दिल्लीश की विशाल वाहिनी आ पहुँची। सारा शहर घेर लिया गया। कीर्ति सागर और मदन ताल पर चौहानो के शिविर पड़ गये।

महोबा के लिये बड़े संकट का समय आ गया। मलखान का अन्त हो चुका था और आल्हा-ऊदल भी नहीं थे। परमाल ने युद्ध करने के बजाय महोबे का फाटक बन्द करवा दिया। शहर पनाह से बाहर आना-जाना एक दम रुक गया। महोबे की प्रजा शहर पनाह के अन्दर कैद हो गई। सर्वत्र शोक की घटा छा गई। घर २ यही चर्चा होने लगी कि हाय! ऊदल के बिना महोबे का फाटक कौन खुलवायेगा? सभी ऊदल का नाम ले लेकर विलाप करने लगे।

जिन दिनों महोबा पर विपत्ति के बादल उमड़े थे, उन्हीं दिनों ऊदल के मन मे यह बात उठी कि एकबार आखेट के

बहाने महोबा का रंग ढंग देख आवें। यह सोचकर ऊदल ने अपने मित्र राणा लाखन से कहा कि आओ महोबाके निकटवर्ती जंगलों मे शिकार खेलने चलें। उधर आप महोबे की भी सैर कर लेंगे।

लाखन महोबा देखने के लिये उत्सुक हो उठा। दोनों जयचंद से शिकार खेलने की आज्ञा ले चल पड़े। ढेबा और वाल्हन सैयद भी चुने हुये शूरो को लेकर साथ चले। सिरसागढ़ के निकट पहुँच कर सबो ने योगियों का वेश बदल डाला। शूर सामन्तो को वाहर तालाव पर ठहरा कर चारो वीर सिरसागढ़ की सैर करने चले।

गढ़ के फाटक पर पहुँचते ही उन्हें चारो ओर उदासी-सी दिखलायी पड़ने लगी। सबो के चेहरे पर शोक के चिन्ह दीख पड़े। इस अपशकुन का कारण इन वीरोके समझ मे नहीं आया। ऊदल अत्यन्त आश्चर्यान्वित हुआ। फाटक पर आगे बढ़ते ही उसे एक मदारी मिला। उसने इन्हे योगी समझ कर कहा— यहां भिक्षा नहीं मिलेगी लौट जाइये। सारे शहर में उदासी छा रही है—घर घर लोग रो रहे हैं। यहाँ का वीर राजा मलखान युद्ध मे धोखे से मारा गया। रानी गजमती सती हो गईं।

मलखान का समाचार सुनकर ऊदल और ढेबा पर वज्र सा गिरा। दोनो शोक-विह्वल हो उठे। देखते ही देखते ऊदल और ढेबा की आँखो से आँसू निकल आये। योगियों को इस प्रकार

शोकाकुल होते देख मदारी ने पूछा—बाबा लोगों! आपलोग रोते क्यों हैं? क्या राजा से आपकी मुलाकात थी?

ऊदल ने कहा—मलखान हमारा गुरु भाई था। मैंने और मलखान ने एक साथ और एक ही गुरु से पढ़ा था; इसीलिये मुझे दुःख हो रहा है। प्रेम के कारण आँखों से आँसू निकल आये हैं। भाई! उस स्थान को दिखा दो जहाँ पर रानी सती हुई हैं। मदारी ने वहाँ पहुंचा दिया। ऊदल और ढेबा ने वहीं पर बैठकर आँसुओं की धारा से उस देवी को श्रद्धाञ्जलि दी।

कुछ देर के बाद शोकावेग कम होने पर सभी बाजार की ओर बढ़े। एकाएक वहाँ पता चला कि पृथ्वीपति ने महोबा घेर लिया है। महोबा का फाटक बन्द हो गया है। यह समाचार सुनते ही चारो वीर तालाब पर लौट आये और शूरों को तैयार कर महोबा की ओर बढ़े।

इधर महोबा की स्थिति बड़ी भयंकर हो गई—प्रजा के आर्तनाद से दिशायें गूँज उठीं। तीज का त्योहार आ गया था। अतः राजकुमारी चन्द्रावली अपनी सखियों के साथ त्योहार मनाने के लिये गढ़ से निकली। पृथ्वीराज ने लूट लेने की आज्ञा दी। माहिल के पुत्र अभई और रणजीत शूरवीरों को लेकर डोला की रक्षा के लिये चले थे।

मदन ताल पर पहुंचने के पहले ही लड़ाई छिड़ गई। अभई और रणजीत ने बड़ी वीरता दिखलाई। पृथ्वीराज के हजारो वीर कट गये। चौहानों को विचलित देख चौड़ा सूरज,

टंक, निरढुराय और ताहिर ने बड़े वेग से आक्रमण किया। अभई और रणजीत ने बात की बात में सूरज और टंक को मार गिराया। अपने सेनानायकों को मरते देख ताहिर की क्रोधाग्नि भड़क उठी। बड़ी लड़ाई हुई, एक पहर युद्ध होते २ रणजीत और अभई मारे गये।

वीर भाइयों की मृत्यु का समाचार सुन ब्रह्मानन्द आगे बढ़ा। उसने भी बड़ा पराक्रम दिखलाया—दिल्लीवाले राजकुमारी की डोली लूटने ही वाले थे कि योगियों का दल आ पहुँचा। ऊदल और ताल्हन की ललकार से दिल्लीश की सेना में भगदड़ मच गई। राजकुमारी चन्द्रावली का डोला मदनताल पर पहुँच गया।

चन्द्रावली पालकी से उतरकर नहाने लगी। योगी लोग हथियार लेकर किनारे पर खड़े हो गये। पृथ्वीराज ने चन्द्रावली की दोनी ले आने के लिये चौंड़ा और धाँधू को भेजा। दोनो मदन ताल पर आ पहुंचे। चन्द्रावली स्नान कर ऊपर आई और एक दोनी बना कर पानी में फेंकती हुई बोली—इस दोनी मे पानी लाकर कौन दे ?

दोनी उठाने के लिये चौड़ा और धांधू लपके। इसी समय योगी के वेष में ऊदल ने कहा—खबरदार आगे पैर न बढ़ाना। इतने मे मार काट होने लगी। ऊदल ने राणा लाखन से कहा—आप दोनी ला दीजिये। लाखन ने दोनी ला दी और साथ ही राजकुमारी को एक लाख रुपये और पाँच गाँव भेंट किये।

इधर लड़ाई बढ़ चली। ताल्हन और ढेबा ने चौड़ा और धाँधू को मार भगाया। इतने में चन्द्रावली ने दूसरी दोनी फेंकी। ऊदल ने भट ला दिया। ऊदल के पास एक सोने का कंकण था। उसने तत्काल उतारकर राजकुमारी को दे दिया। चन्द्रावती ने कंकण को पहचान लिया। वह दौड़कर ऊदल से लिपट गई—सभों ने ऊदल को योगी के वेष मे देख पहचान लिया। चारो ओर यह बात बिजली के समान फैल गई कि योगियों का दल ऊदल का था। ऊदल ने ही यह पर्वी कराई है।

ऊदल का नाम सुनते ही राजा परमाल स्वयं मदन ताल पर पहुंचे और अपने गले का दुपट्टा उसके पैरोपर रखकर बोले—बेटा! क्षमा करो, मेरे अपराधों को भूल जाओ, महोबा चलो। तुम्हारे न रहने से यह महादुःख देखना पड़ा। हाय! मलखान अब नहीं रहा—रणजीत भी मारा गया—इस वृद्धावस्था के तुम्ही लोग सहारा हो। तुमलोगों के जाने से महोबा निर्जीव हो गया है।

ऊदल ने प्रेमपूर्वक राजा को प्रणाम किया और कहा—महाराज हमलोग आपके शपथ के कारण विवश हैं—हमलोग महोबा नहीं छोड़ना चाहते थे, परन्तु आपके शपथ को कैसे टाल सकते थे। इसी से चले गये। अब बिना भैया की आज्ञा से कैसे आ सकते हैं? मैं तो इधर शिकार खेलने आया था—

पृथ्वीराज के आक्रमण का हाल सुन यहाँ तक चला आया। यहाँ आने की हमारी बिलकुल इच्छा नहीं थी।

ऊदल की बात सुन परमाल ने राणा लाखन को ठहराना चाहा परन्तु उसने भी कहा कि पिता की आज्ञा के बिना मैं कहीं आतिथ्य ग्रहण नहीं कर सकता। राजा परमाल ढेवा और ताल्हन से मिले। बारी बारी से उन्हे भी महोबा चलने के लिये कहा। उन लोगो ने जवाब दिया कि बिना ऊदल के गये हम-लोग नहीं जायेंगे।

इधर चौड़ा और धाँधू ने दल में जाकर ऊदल के आने का समाचार कह सुनाया। इतने में माहिल आ पहुंचा और पृथ्वी-राज से बोला—ऊदल आ गया है, अभी आप लौट जाइये। अवसर देखकर चढ़ाई कीजियेगा। मैं बराबर खबर देता रहूँगा। माहिल की बात सुन पृथ्वीराज ने कूच कर दिया।

महोबा का संकट दूर हो गया। चारो ओर आनन्द छा गया। मदन तालपर बड़ाउत्सव मनाया गया। घर-घर सबलोग ऊदल की कीर्ति गाने लगे। सर्वत्र शान्ति स्थापित होजाने पर योगियो का दल कन्नौज चला गया।

आल्हा से प्रार्थना—प्रतापी ऊदलके चले जाने का समाचार सुन माहिल अत्यन्त प्रसन्न हुआ। वह शीघ्र दिल्ली पहुँचा। उसने पृथ्वीराज को सन्देश दिया कि ऊदल अब न आयेगा। पृथ्वीराज अवसर ढूँढ़ते ही थे—सदल बल आ पहुँचे और महोबे को घेर लिया।

माहिल पृथ्वीराज का सन्देश लेकर महोबा गया। राजा अन्तःपुर में था। परिहार सीधे मल्हना के पास पहुँचा और कहने लगा—पृथ्वीराज ने कई अपराध बता कर यह कहला भेजा है कि उत्तरी प्रान्त, सिरसा गढ़ और घोड़े राजकर सहित भेज दें। देखता हूँ कि पृथ्वीराज जो २ चीजें माँगते हैं, उन्हें बिना प्राप्त किये वे नहीं लौटेंगे। मुझे तो जान पड़ता है कि न पाने से वे महोबा को लूट लेगें। इस बार बड़ी भारी सेना साथ में आई है।

भाई की बात सुन मल्हना रो पड़ी। कुछ देर बाद अत्यन्त शोक प्रकट करती हुई बोली—हाय! अनाथ हो गई, पृथ्वीराज को भी इसी समय आक्रमण करना था। जब आल्हा-ऊदल थे तब तो नहीं आये—जब मलखान जीवित थे तब उन्होंने चढ़ाई नही की—इस समय सब प्रकार से सूना और असहाय पाकर वे आ चढ़े हैं। क्या यही क्षत्रियों का धर्म है? निर्बल और असहाय शत्रु पर आक्रमण करना वीरों का काम नहीं है। अच्छी बात है भाई! पृथ्वीराज से जाकर कहो कि मुहलत दें। कुछ

दिन के बाद उनकी माँग पूरी की जायगी। माहिल मल्हना की बात सुन लौट गया।

राजा परमाल बहुत डरे। उन्होंने राज्य की रक्षा के लिये शूर सामन्तों की एक विचार-समिती बुलाई—उसमें यही प्रस्ताव पास हुआ कि पृथ्वीराज* से दो माह की मुहलत ली जाय और आल्हा-ऊदल को मनाकर लाया जाय। दूसरे ही दिन मुहलत माँगी गई। उन्होंने राजपूती नियमानुसार सहर्ष प्रदान किया।

मुहलत मिल जाने पर राजा और रानीने जगनिक को बुलवाया। उसके आ जाने पर मल्हना ने कहा—तुम कन्नौज जाओ और आल्हा-ऊदल को मनाकर लिवा लाओ। उनसे दीनता की सारी कथा कहना। वे अवश्य ख्याल करेंगे। यदि वे किसी प्रकार न मानें तो ऊदल से कहना कि मल्हना ने अपने स्तन का दूध पिलाकर तुमको पाला था, कम से कम उसकी लज्जा तो रखो?

जगनिक ने कहा—आल्हा-ऊदल का बड़ा भारी अपमान हुआ है। वे किसी प्रकार नहीं आवेंगे। राजा ने उन्हें स्वयं शपथ देकर निर्वासन का दण्ड दिया है।

---

* आल्हा की पुस्तकों में लिखा है कि मुहलत १ वर्ष की मांगी गई—परन्तु यह ठीक नहीं है। चन्दवरदाईने लिखा है कि मुहलत सिर्फ दो महीने की मांगी गई थी। जगनिक मुहलत मांगने आया था।

—महाकवि चन्द

मल्हना रो पड़ी। वह अत्यन्त करुण विलाप करती हुई बोली—तुम जाकर आल्हा ऊदल और मेरी बहन देवल देवी से जाकर यह सन्देशा कहो। जगनिक आने के लिये तैयार हो गया। इधर माहिल के द्वारा पृथ्वीराज को सभी बातें मालूम हो गई। वह चौड़ा और धाँधू को बुलाकर बोले—जगनिक, आल्हा-ऊदल को बुलाने के लिये कन्नौज जा रहा है—पकड़कर उसे बन्दी कर लो।

चौड़ा और धाँधू चल पड़े। बेतवा नदी के निकट उन्होंने जगनिक को जा घेरा। चौंड़ा ने गरज कर कहा—खबरदार आगे न बढ़ना। चन्देलों का भांजा जगनिक भी बड़ा वीर था—ठहर गया। दोनों वीर सामने पहुंच गये। चौंड़ा ने तत्काल प्रहार किया। जगनिक का घोड़ा हट गया जिससे चौड़ा का वार खाली गया। जगनिक ने ढाल के धक्के से चौड़ा को घोड़े से गिरा दिया।

चौड़ा के गिरते ही धाँधू आगे बढ़ा परन्तु जगनिक के प्रहार को नहीं रोक सका। तुरन्त घोड़ेकी पीठसे उलट गया। जगनिक सीधे कन्नौज की ओर बढ़ा। आगे बढ़कर रात्रि मे कुणहर में ठहरा। वहाँ के ठाकुर रायभान ने उसका घोड़ा चुरवा लिया। बहुत डराने धमकाने से घोड़ा तो दे दिया परन्तु कीमती जीन रख ली। जगनिक धमकी देकर आगे बढ़ा। मार्ग की कठिनाइयों को पार करता हुआ कई दिनों के बाद कन्नौज पहुंचा। रिजि-गिरि में पहुंचने पर आल्हा ने उसका स्वागत सत्कार तो खूब

किया परन्तु महोबे चलने से इनकार कर दिया। उसने स्पष्ट कहा—महोबा रहे या जाय, मेरे लिये समान है। अब तो हम कन्नोज के निवासी हैं—मेरा घर यहीं है, हम उस दिन को नहीं भूल सकते जब राजा ने अपमानित कर निकाल दिया था। आल्हा का उत्तर सुन जगनिक अत्यन्त चिन्तित हो उठा।

देवल देवी सभी बातें सुन रही थी। अपने पुत्रों को इस प्रकार कहकर मौन होते देख, वह क्रुद्ध हो उठी और आकाश की ओर देखते हुये बोली—भगवन्! मैं बन्ध्या क्यों न हो गई? हाय! मैंने ऐसे भीरु पुत्रों को क्यों जन्म दिया जो क्षत्री धर्म का पालन नहीं कर सकते तथा अपने पवित्र वंश की लाज नहीं रख सकते। अब वह पुत्रों की ओर अभिमुख हो बोली—

कायरों! तुमलोगों को मेरे गर्भ से उत्पन्न नहीं होना था, क्षत्रिय होकर संकटापन्न स्थिति में राजा की सहायता करने से विमुख होते—मुँह मोड़ते हो? वह प्रजा जिसके साथ तुम लोगों का बाल्यकाल आमोद प्रमोद में बीता है, जिसके रक्त से तुम्हारी प्रतिज्ञायें पूरी हुई हैं, जिसके प्यारे पुत्र तुम्हारे लिये हंसते २ प्राणोत्सर्ग कर चुके हैं—सकट में पड़कर तुम्हारी राह देख रहे हैं और तुम कायर की तरह मुँह छिपाये बैठे हो।

महोबा तुम्हारी जन्मभूमि है। परमाल ने पुत्र के समान तुम्हारा पालन किया है। महोबे की धूल में लोट—पोटकर तुम

बड़े हुए हो—उसी के अन्न और जल से तुम्हारा शरीर पोषित हुआ है—उसी मातृभूमि के प्रति यह विश्वासघात ?

जननी जन्मभूमि पर अत्याचारी चौहानों का अत्याचार हो रहा है। दिल्लीश के सेनानायक नूरा यवन आदि दशहरपुरवा में, हमारे उस पवित्र स्थान पर जहां अग्निहोत्र का धुआं उठता रहता था, गौयें पछारी जा रही हैं। ओह! जन्मदा के उस पवित्र वक्षस्थल पर जहाँ वीरों का तांडव हुआ करता था—विधर्मियों और अत्याचारियों का नग्न नृत्य हो रहा है। भीरुओं! यह सुनकर भी तुम्हारा खून खौल नहीं उठता ? क्या क्लीवता आ गई है। इतना कहते २ देवल देवी फूट २ कर रोने लगी।

माता की वीरोचित बातें सुन ऊदल से न रहा गया। वह तत्काल उठ खड़ा हुआ और कड़कते हुये बोला—मैं वही करूंगा जिससे मां प्रसन्न हो। दिल्लीशकी सेना महोबा को नहीं लूट सकती। हम महोबा के हैं और महोबा हमारा है। उसकी रक्षा के लिये हम अपना रक्त बहा देंगे। हमारे रहते हुए कोई भी शक्ति उसे पद दलित नहीं कर सकती।

ऊदल के तैयार होते ही आल्हा को भी विवश होकर तैयार होना पड़ा। आल्हा, जयचंद के पास पहुंचे और अपना अभिप्राय कह सुनाया। जयचन्द ने पहले तो मना किया—रोका, परन्तु विशेष आग्रह देख जाने की अनुमति ही नहीं दी बल्कि

पृथ्वीराज के मुकाबले में अपने दोनों पुत्रों के नायकत्व में एक बड़ी सेना उनके साथ कर दी।

बेतवा नदी पर युद्ध—सन् ११८२ ई० में राठौड़ों की बड़ी सेना आकाश और पृथ्वी को एक करती हुई चल पड़ी। गांजर के सभी राजे लाखन के साथ हो लिये। रास्ते में जगनिक ने कुड़हर पर चढ़ाई कर के रायभान को हरा दिया और अपने घोड़े का बख्तर छीन लिया। रायभान परमाल की सहायता के लिये चल पड़ा। निकट पहुँचने पर आल्हा ने अपने आने की सूचना जगनिक के द्वारा भेजी।

मुहलत बीतते ही पृथ्वीराज की फौज महोबा आ गई। माहिल की सलाह से उसने बेतवा नदी के बयालिसो घाटों को रोकवा दिया, जिससे आल्हा ऊदल की सेना पार न हो सके। पृथ्वीराज को इसप्रकार घेरे देख आल्हा ने वीरो को बुलाकर कहा—कौन ऐसा वीर है जो पृथ्वीराज को परास्त कर घाट खुलवा ले। कोई उत्तर नहीं दे सका। थोड़ी देर के बाद ऊदल तैयार हुआ। भाई, तुमने गाँजर विजय में पर्याप्त परिश्रम किया था। अब लाखन को इसके लिये आज्ञा देता हूं। आल्हा की बात सुन लाखन तुरन्त तैयार हो गया।

बेतवा नदी के मैदान में दोनों सेनायें भिड़ गईं। लाखन और उसके शूर सामन्तों ने बड़ा युद्ध किया। एक प्रहर भर खूब शिरोही चलती रही। सर्वत्र रक्त की धारा बह चली। बेतवा नदी लाल हो गई। ओह! नदी के किनारे बड़ी विषम तलवार चली। लाखन ने खेद २ कर चौहानों को मारा। चौड़ा ताहिर और निरढुराय भाग खड़े हुये। बीसों घाट खुल गये। पृथ्वीराज अपनी सेना लेकर दिल्ली लौट आये। आल्हा की सेना ने दिल्लीकी सेनाका सारा सामान लूट लिया।

आल्हा-ऊदल और लाखन का सारा काफ़िला बेतवा नदी पार होने लगा। आल्हा के रचयिताओं ने लिखा है कि चौड़ा ने इनपर आक्रमण किया। उसके आक्रमण से भगदड़ मच गई। केवल लाखन डटा रहा परन्तु थोड़ी ही देरमें शक्तिहीन कर दिया गया। देवल देवी ने आल्हा ऊदल को रोकने की बड़ी कोशिश की पर वे न रुके। यह देख कर वीर क्षत्राणी ने अपनी डोली रोकने का हुक्म दिया। वह डोली से बाहर होकर ऊदल से बोली—अपनी तलवार मुझे दे दो।

माता की बात सुन ऊदल अत्यन्त लज्जित हुआ। ऊदल के ठहरते ही आल्हा लौट पड़ा। दोनो भाइयो ने बड़ी वीरता से लड़कर चामुण्डराय को पीछे हटा दिया।

सभी निर्द्वन्द्व-निर्भय आगे बढ़े। आल्हा-ऊदल के आने का समाचार सुन महोबावासी अत्यन्त प्रसन्न हुये। प्रजा के जान में जान आ गई। लोग अपना धन्य भाग्य समझने लगे।

अबाल वृद्ध सभी उनसे मिलने के लिये चल पड़े। राजा पर-
माल ने स्वागत की बड़ी तैयारी की। मल्हना स्वयं देवल की
अगवानी के लिये कुछ दूर से उन्हें जाकर महल में लिवा आई।
बाहर भीतर सर्वत्र आनन्द छा गया। ऊदल के आ जाने से
परमाल को बड़ा भरोसा हुआ।

इसप्रकार स्वागत के उपरान्त प्रतापी ऊदल ने अपने मित्र
राणा लाखन का परिचय कराया। रानी मल्हना और परमाल
अत्यन्त प्रसन्न हुये। महोबा के दुःख जाते रहे। महाशोक और
विपत्तियों की काली घटायें हट गईं।

—*—

बेला का गौना—(११८२ई०) महोबाका इतिहास माहिल
की कूटनीति से भरा हुआ है। उस समय कोई ऐसा स्थान न
था जहां उसकी पहुँच न थी। वह बाहर भीतर सभी स्थानों में
आ जा सकता था। उसकी सर्वत्र पैठ थी। क्योंकि वह सबों
का सम्बन्धी था।

पाठको ! माहिल की मनोवृत्ति से आप लोग परिचित हो चुके होंगे। महोवा का किसी प्रकार नाश कराना ही उसका एकमात्र लक्ष था। उसने एक नहीं सैकड़ों उपाय किये। बीसों षडयंत्र रचे। परन्तु व्यर्थ हुआ। उसकी अभिलाषा पूरी नहीं हुई। महोवियों का पतन नहीं हुआ, वनाफरों की अवनति नहीं हुई।

सैकड़ों षडयंत्रो के विफल होनेपर भी वह हताश नहीं हुआ। वह बराबर अपनी उद्देश्य पूर्ति के लिये प्रयत्न करता ही रहा। बेतवा के घमासान युद्ध मे दिल्लीश्वर को भागते देख आप सीधे उरई लौट आया। महीनो राजभवन मे छिपा रहा। इसबार उसे एक विचित्र युक्ति सूझ पड़ी। उसे निश्चय हो गया कि विना कुछ दिन महोवा में रहे अपने पुराने शत्रुओं का नाश नहीं कर सकूंगा। इस प्रकार निश्चित कर वह दूसरे ही दिन महोवा जा पहुँचा।

महोविये विजय के उमंगमे मतवाले हो रहे थे। माहिल को देख वे अत्यन्त प्रसन्न हो उठे। माहिल भी उन्हीं लोगो में मिल गया और विजय हर्ष मनाने लगा। धीरे २ कई दिन वीत गये। वह ब्रह्मानन्द को मिलाने की चेष्टा करने लगा। ब्रह्मानन्द अंजान न था। परन्तु काल की प्रेरणा से इसके वशीभूत हो गया। सत्य है काल के थपेड़े से वड़े-बड़े बुद्धिमानो की बुद्धि फिर जाती है। विना बुद्धि के विपरीत हुये विनाश नहीं होता।

महाराज परमाल का दर्बार लगा था। बड़े बड़े शूरवीर बैठे थे। मंत्रीगण और शूर सामन्त आपस में परामर्श कर रहे थे। प्रतापी आल्हा ऊदल और लाखन राजा से युद्ध की बातें कर रहे थे। इसी समय माहिल ने राजा परमाल से कहा—महाराज! लड़के आ गये हैं—महाबली लाखन भी अपनी सेना सहित उनके साथ हैं—इसी समय ब्रह्मानन्द का गौना करा लिया जाय।

माहिल की बात परमाल के मन में आ गई। उन्होने तत्काल दर्बार मे बीड़ा रखवा दिया और कहा कि जो वीर गौने के लिये तैयार हो वह बीड़ा उठा ले।

ब्रह्मा के गौना का नाम सुनते ही दर्बार में सन्नाटा छा गया। सभी एक दूसरे का मुंह देखने लगे। उपस्थित शूरवीरो को इसप्रकार शान्त देख माहिल मुस्करा उठा। माहिल का मुस्कराना ऊदल को अच्छा नहीं लगा। वह एकाएक उठ पड़ा और दर्बार के बीच में रक्खे हुये बीड़े को उठाकर जोशपूर्ण शब्दोमे बोला—वीरों! शूरवीर रणधीरों! पराक्रमी सामन्तों! मै ब्रह्मा के गौनाके लिये तयार होता हूँ। मैं अपने बाहुबल से पुत्रो सहित पृथ्वीराज को बन्दी कर गौना करा लाऊंगा। मेरी प्रतिज्ञा असत्य नही हो सकती।

ऊदल की तेजस्वितापूर्ण बातें अभी समाप्त भी नही हो पायी थीं कि माहिल ने ब्रह्मा को पट्टी पढ़ा दी कि तुम ऊदल से बीड़ा छिनवा लो। तुम स्वयं गौनाके लिये तैयार हो जाओ।

जब मैं तुम्हारा सहायक हूँ तो कौन बाल बाँका कर सकता है ? तुम किसी के आधीन होकर गौना न लाओ। बनाफर आजन्म तुम्हें धिक्कारते रहेंगे। महावीर ! क्या तुम इस अपमान को सह सकोगे ? ब्रह्मा ! तुम क्षत्रिय हो। तुम्हें अपने पैरोंपर खड़ा होना चाहिये। कबतक तुम बनाफरों के बल से खड़े रहोगे। तुम्हारी कायरता देख लोग हंसेगें। भारत के शूरवीर यही समझेंगे कि ब्रह्मा बलहीन था, बनाफरों ने उसका प्रतिपालन किया। शूरवीरों के लिये यह मर जाने की बात है—वीर पूर्वजों को याद करो और स्वयं गौने के लिये तैयार हो जाओ।

माहिल की बातें सुन ब्रह्मा की भुजायें फड़क उठीं। उसने माहिल को प्रसन्न करते हुये कहा—मामा ! ठीक है। मैं इस अपमान को नहीं सह सकता। मैं क्षत्रिय हूँ, मेरी भुजाओं से बल है, मैं स्वयं गौना के लिये तैयार होऊंगा। मुझे कायर और बलहीन न समझिये। फिर आप के साथ मे किस बात की चिन्ता है। मै अकेले ही पृथ्वीराज से मोर्चा लेने के लिये काफी हूँ। इतना कहते २ ब्रह्मा उत्साहित हो खड़ा हो गया और ऊदल की ओर बढ़ा। उपस्थित शूरवीर यह देख महा आश्चर्य में पड़ गये।

ब्रह्मा ने ऊदल के पास पहुँचकर कहा—गौने के लिये मैं तैयार होता हूँ, बीड़ा रख दो। ब्रह्मासे ऊदल को ऐसी आशा न थी, उसे स्वप्न मे भी ध्यान न था कि ब्रह्मा से मेरी ऐसी मानहानि होगी। ब्रह्मा के उठने पर भी ऊदल डटा रहा, इधर

माहिल ने परमाल को अनुकूल कर ब्रह्मा को बीड़ा दिला देने की शिफारिस की। उसने कहा—महाराज! ब्रह्मा के बीड़ा लेने से चन्द्रवंश का नाम होगा। आप की कीर्ति चारो ओर फैल जायगी। ब्रह्मा को लोग महावीर कहकर पुकारेंगे। दिल्लीश्वर का कहना है कि ब्रह्मा अकेला आवे हम गौना कर देंगे। बनाफरो से दिल्ली वाले बुरी तरह चिढ़ते हैं। ऊदल के बीड़ा लेने पर निश्चय ही लड़ाई होगी।

परमाल शांतिप्रिय आदमी थे। जबसे उन्होंने शस्त्र न धारण करने की प्रतिज्ञा कर ली थी, तब से वह लड़ाई झगड़ो से बहुत डरते रहते थे। उन्होंने शीघ्र माहिल के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया। परमाल की आज्ञा से ऊदल का बीड़ा ले लिया गया। ब्रह्मानन्दने बड़े हर्षसे बीड़े को उठा लिया और बोला—वीर चन्देलो! आओ कूच करें और दिल्लीश्वर का सामना कर अपनी प्रतिज्ञा पूर्ण करें।

इसप्रकार बीड़ा छीन लेने से बनाफरो ने अपना अपमान समझा। वे शीघ्र दर्बारसे उठ खड़े हुये ;और दशहरपुरवा मे जा पहुँचे। आल्हा ने कहा—ऊदल! देखो इसी अपमान के लिये परमालने हमसबोको बुलाया था। अफसोस! सैकड़ो शूरसामन्तों के सन्मुख हमलोगो को लज्जित होना पड़ा। क्या इससे भी बढ़कर दण्ड मिल सकता है? इस भाँति कहते हुये पराक्रमी आल्हा सोच मे पड़ गये।

ऊदल ने क्रुद्ध हो कहा—भाई! परमाल की बुद्धि ठिकाने नही हैं। मुझे ब्रम्हा से ऐसी आशा न थी, उसके इस कुटिल स्वभाव को देख मुझे दुःख और साथही क्रोध भी हो रहा है। ब्रम्हा दिल्ली जाय और गौना करा लावे, मुझे इसमें तनिक भी हर्ष या विषाद नहीं। चन्देलोंका नाशहो अथवा विजय मुझसे कोई सम्बन्ध नहीं। मैं दिल्ली कभी न जाऊँगा। आल्हा ने ऊदल की बातों का समर्थन किया। बनाफर वीर शान्त हो रहे।

ऊदल के हाथ से बीड़ा छीन लेने की बात सुन मल्हना अत्यन्त चिन्तित हुई—वह समझती थी कि बिना आल्हा—ऊदल की सहायता के गौना नही आ सकेगा। आल्हा—ऊदल क्रुद्ध होकर दर्बार से चले गये हैं—उनका घोर अपमान हुआ है—वे किसी प्रकार दिल्ली आने के लिये तैयार नहीं होगे। उसे बनाफरो के स्वाभिमान का ध्यान था, वह उनकी अटल टेक को जानती थी। यह सोच सोचकर दुखी होने लगी।

बुद्धिमती मल्हना बनाफरो को अनुकूल करने का उपाय सोचने लगी। उसने विचारा—यदि लाखन किसी प्रकार दिल्ली जाने के लिये तैयार हो जाय—तो ऊदल के जाते ही आल्हा किसी प्रकार रुक न सकेंगे। ऐसा निश्चित कर मल्हना ने लाखन को बुलवाया। लाखन आ पहुँचा और बोला—माता! क्या आज्ञा है—कहिये, मै आप की क्या सेवा करूं?

मल्हना ने कहा—बेटा! ब्रम्हा के साथ दिल्ली जाओ

और गौना कराकर ले आओ। लाखन ने कहा—यह कौन बड़ी बात है ? मै जाऊंगा। मल्हना अत्यन्त प्रसन्न हुई।

लाखन ने शिविर में आकर तैयारी का धौंसा बजा दिया। राठौड़ो की विशाल वाहिनी सजने लगी। दशहरपुरवा से डंके की चोट सुन ऊदल बड़ा विस्मित हुआ। वह तत्काल लाखन के शिविर की ओर चल पड़ा। दोनो मित्र गले-गले मिले। ऊदल ने तैयारी का कारण पूछा। लाखन ने मल्हना के सन्मुख वचनबद्ध होने की बात कह सुनाई।

मित्र की बात सुन ऊदल ने कहा—भाई ! शठो के साथ शठता किये ही कल्याण होता है। जिन चन्देलों को हमारे पुरुषो ने मनुष्य बना दिया—जिनकी रक्षा के लिये अपना सर्वस्व स्वाहा कर दिया—ओह ! इतना ही नहीं जिन्होने अपने प्राणोको उत्सर्गकर दिया, उन्होंने हमारे साथ कितना अत्याचार किया। जिन बनाफरों ने महोबियो को स्वतंत्र किया, उनके विमल कीर्ति को वसुन्धरा पर सर्वत्र फैलाया, वैभववान और बलवान बनाया—प्रत्यक्ष लज्जा रक्खो, उनके प्रति इन नराधमों ने क्या किया ? भरे भादो मे अपने राज्य से निकाल दिया। फिर भी बनाफर उनकी रक्षा के लिये तैयार हुये और लोहे का चना चबाकर उन्हे विपत्तियों से मुक्त किया।

प्यारे मित्र ! केवल इतना ही सोचो कि ब्रह्मा की शादी किसने कराई ? क्या ब्रह्मा ने स्वयं पृथ्वीपति को बन्दी कर भाँवरे पूरी की थीं ? गौना के लिये बीड़ा रक्खा गया था, जब

डेढ़ घड़ी बीत गई और कोई नहीं उठा तबमैंने बीड़ा उठा लिया। उस समय ब्रह्मा को उठकर छीनने का क्या अधिकार था ? क्या यह स्वाभिमानियों के लिये अपमान नहीं है। वीर अपनी मर्यादा के लिये प्राणोत्सर्ग कर देते हैं। मैं इस महोबा राज्य का मुँह नहीं देखना चाहता। आप मेरे मित्र हैं—मित्र के सुख-दुःख के साथी हैं—मित्र का मानापमान, मित्र के लिये मान और अपमान है। मेरी निंदा आपकी निन्दा है और मेरी कीर्ति आप की कीर्ति है।

महोबियों ने मेरे साथ शत्रु का व्यवहार किया है। क्या हमारा शत्रु हमारे मित्र का शत्रु न होगा ? आप चुपचाप बैठिये—ब्रह्मा को जाने दीजिये। अभिन्न हृदयी मित्र ऊदल की बात सुन, लाखन ने लश्कर को तैयार होने से रोक दिया।

इधर ब्रह्मा की तैयारी हो गई। शूर सामन्त घोड़ों और हाथियों पर जा डटे। चन्देलों की सेना सज गई। कूच का डंका बज गया। सभी एक साथ ही चल पड़े, माहिल अगुआ बनकर आगे बढ़ा। सात दिनोंकी मंजिल तयकर बारात दिल्ली के धुरे पर पहुँच गई। माहिल की सम्मति से उत्तम स्थान देख कर डेरा डाल दिया गया।

शिविर का पूर्ण प्रबन्ध हो जाने पर माहिल पृथ्वीराज से मिला और ब्रह्मा के आने का समाचार कह सुनाया।

पृथ्वीराज ने कहा—माहिल! गौना लेना सहज काम नहीं है। ब्रह्मा पहले अपना सत्रीपन दिखलावे, हमारे प्रसिद्ध सेना-

पतियों को युद्ध मे परास्त करें, तब पीछे गौना देंगे। यदि वीरता न हो तो अभी लौट जाय। मैं गौना तो पीछे दूँगा पहले अघा-कर युद्ध करूँगा।

माहिल ने नम्रतापूर्वक कहा—जैसा आप उचित समझें करें। 'इतना कहकर वह बारात में वापस लौट आया। माहिल को उदास देख ब्रह्मा ने कारण पूछा—

माहिल बोला—बेटा! पृथ्वीराज वीरता की परीक्षा लेना चाहते हैं। उन्होंने कहा है कि विना युद्ध-कौशल दिखलाये मैं गौना नहीं दूँगा। अतः युद्ध के लिये तैयार हो जाओ। यहां से गौना कराये विना लौटना अच्छा न होगा। आल्हा और ऊदल तो जरूर हँसेंगे। जाओ, अपनी वीरता दिखलाकर चौहान को प्रसन्न कर दो। गौना लेकर लौटते देख बनाफर भी लज्जित हो जायेंगे।

माहिल के इसप्रकार कहने पर ब्रह्मा लड़ाई के लिये तैयार हो गया। बाँके महोबिये धुरे से आगे बढ़ चले। उधर दिल्ली की सेना भी चौड़ा के सेनापतित्व मे तैयार हो गई। सभी युद्ध क्षेत्र मे आ डटे। कुछ ही देर मे भुशुंडियो के गर्जन से आकाश गूँज उठा।

तत्काल तुपकों की गड़गड़ाहट होने लगी। सैकड़ो गोले सनसनाते हुये चलने लगे। चारो दिशायें बारूदो के धुएँ से आच्छादित हो गईं। देखते ही देखते सेनायें परस्पर भिड़ गयीं और बढ़ २ कर प्रहार करने लगीं। चौड़ा ताहिर और कैमास

आगे बढ़े, इसी समय वीर सैनिकों ने सांगों की खूब मार की। संयमराय और कन्ह ने बड़ी वीरता दिखलाई। निरढुराय और चंद के प्रहार को ब्रह्मा की सेना नही सह सकी।

अपने वीरों को विचलित देख ब्रह्मा धनुष-बाण लेकर आगे बढ़ा, उसने भयानक टंकार की। उसके पैने बाणों से सहस्रों शूर घायल होकर पृथ्वी पर गिरने लगे। पृथ्वीराज के सभी सेनापति उससे एक एक कर भिड़े। परन्तु कोई ठहर नहीं सका। उस महाबली ने एक प्रहर मे ही अपार शत्रु दल को विचलित कर दिया।

अपनी सेना को अकेले ब्रह्मा से पराजित होते देख चन्द कवि पृथ्वीराज के पास पहुँचा और युद्ध का वृत्तान्त बताते हुये बोला—दिल्लीश! महाबली ब्रह्मा कभी जीता नही जा सकता। अपार चतुरंगिणी विह्वल हो भाग रही है। यदि तत्काल उसे सहायता नहीं दी गई तो वह समर भूमि मे नही ठहर सकेगी।

पृथ्वीराज स्वयं स्वरचित सेना लेकर आगे बढ़े। राजा को आते देख सैनिकों का उत्साह बढ़ गया। सभी भीमवेग से। आगे बड़े। चामुण्डराय, ताहिर, निरढुराय, और कैमास नवीन स्फूर्ति से युद्ध करने लगे।

इस समय बाणों की कठिन लड़ाई हुई। आकाश मंडल तीरो से भर गया। कोदंडों के मरमराहट से रणस्थली पूरित हो गई। विषैले बाणों की मार से हाथी चकत्ता खाकर गिरने लगे। बड़े २ शूरमा घबड़ा उठे। एक प्रहरतक भयंकर युद्ध होता रहा।

अह्ना और उसके सामन्तोंने शत्रुओंके बाणों को काट गिराया। दिशायें साफ हो गईं।

अह्ना की वीरता देख पृथ्वीराज अत्यन्त चकित हुये— उन्होंने अपने हाथी को आगे बढ़ाने की आज्ञा दी। पृथ्वीपति को अपनी ओर आते देख अह्ना गजारोहियों का नाश करते हुये स्वयं उनकी ओर बढ़ा। बात की बात मे उसने बाहस हौदे खाली कर दिये। अब वह पृथ्वीराज के सन्मुख पहुँच गया।

धनुर्धर नवयुवक को अपने सामने देख दिल्लीश ने धनुष उठा लिया और अर्द्धचन्द्राकार शर प्रत्यंचा पर रक्खा। दिल्लीश अपने उस भयंकर बाण को छोड़ना ही चाहते थे कि अह्ना का छोड़ा हुआ एक तेज बाण सनसनाता हुआ आकर पृथ्वीपति की छाती में लग गया। दिल्लीश मूर्च्छित हो गये।

पृथ्वीराज के मूर्च्छित होते ही रण मे बड़ा हाहाकार मच गया। महावत पृथ्वीराज को ले चला। सारी सेना हाहाकार करती हुई भाग खड़ी हुई। ताहिर चौंडा और निरढुराय आदि कोई भी नहीं ठहर सके। कन्ह कैमास और संयमराय का अभिमान चूर चूर हो गया।

ब्रह्मा की मृत्यु—ब्रह्मा के पराक्रम को देख चौहानों के छक्के छूट गये। पृथ्वीराज स्वयं हताशहो सोचने लगे कि इस महाप्रतापी पर कैसे विजय प्राप्त किया जाय? सारी सेना बेकाम हो गई। बड़े २ सेनापति हतोत्साह हो गये। महाबीर पुत्र ताहिर की एक न चली। एक नहीं सहस्रों चौहान सामन्त जूझ गये।

धीरे २ दिल्लीश चिन्तित हो उठे। उन्होंने ब्रह्मा को बालक समझ रखा था। उन्होंने जाना था कि मेरे शूर सामन्त बात की बात मे ब्रह्मा पर विजय पा लेंगे। परन्तु आशा फलवती नही हुई। ब्रह्मा महाविषधर से भी बढ़कर भयानक सिद्ध हुआ।

सेनापति चौड़ा अधिक लज्जित था। वह कई बार ब्रह्मा से पराजित हो चुका था। कन्ह, कैमास और निरढुराय का सिर नीचा हो रहा था, सभी लज्जा के मारे मौन हो रहे थे। इतने मे पृथ्वीराज ने पूछा—किसप्रकार महाबली ब्रह्मा को अधिकार मे किया जाय। दिल्ली मे कोई वीर है जो उसे जीवित पकड़ लावे। वीरों ने कोई उत्तर न दिया।

चौहान-शूर सामन्तो को इसप्रकार भयभीत देख माहिल ने कहा- महाराज! ब्रह्मा बड़ा धनुर्धर है। जबतक उसके हाथ मे धनुष बाण रहेगा, उसे कोई नहीं जीत सकता। आप की दिल्ली मे कोई ऐसा वीर नहीं है जो उसका सामना कर सके। बिना छल कपट किये वह काबू मे न आयेगा। एक युक्ति है—। यदि वैसा करे तो अवश्य लाभ हो।

पृथ्वीराज के पूछने पर माहिल ने कहा—आप ताहिर को कहिये कि स्त्री का वेश बनाकर शस्त्र सहित डोली में बैठ जाय। उसी डोली को यह कहलाकर ब्रह्मा के पास भेजिये कि युद्ध बन्द कर दे। वेला का डोला भेजा जा रहा है। इसप्रकार जब डोला महोवा शिविर में पहुँच जायगा, तब ब्रह्मा डोला के पास अवश्य जायगा। उसी समय ताहिर को चाहिये कि खड्ग लेकर लपक पड़े और और निशस्त्र ब्रह्मा का अन्त कर दे।, माहिल की बातें दिल्लीश को बड़ी अच्छी लगीं, परन्तु महावली ताहिर अत्यन्त क्रोध करते हुये बोला—

मैं मामा माहिल की बातों का समर्थन नहीं करता। मैं पुरुष हूँ, क्षत्रिय हूँ, क्षात्र धर्म को जानता हूँ। स्त्री वेष धारणकर छल कपट द्वारा शत्रु को पराजित करना वीरों का काम नहीं है। मैं सन्मुख समर में युद्ध करते २ मर जाऊँगा—परन्तु स्त्री-वेष धारण नहीं करूँगा।

ताहिर को इसप्रकार बिगड़ते देख माहिल बोला—बेटा! बुद्धि बल से काम लो, नीति का आश्रय धारण करो—देखो, महापराक्रमी देवेन्द्र भी शत्रु नाश के लिये कौशलों से काम लेते हैं। वृत्रासुर के लिये कितने उपाय रचने पड़े—महा पराक्रमी, अन्धक त्रिशिरादि महावीरों के लिये देवताओं को क्या नहीं करना पड़ा। शत्रु का जिसप्रकार नाश हो—वही उपाय करना चाहिये। तुम युवक हो, जवानी का गर्म खून तुम्हारे रग-रग में बह रहा है, तुम्हे सन्मुख समर ही भाता है। क्या अभी युद्ध से

नहीं अघाये ? यदि तुम्हें युद्ध ही प्रिय था तो फिर ब्रह्मा के बाणों से व्यथित होकर रणभूमि से क्यों भाग आये ? तुम्हें वहीं मारना और मरना चाहिये था।

ताहिर ने बिगड़ते हुये कहा—कहना बड़ा सरल है परन्तु कार्य्य करने में कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। जय और पराजय ही युद्ध का परिणाम है। मैं पुनः ब्रह्मा से युद्ध करना चाहता हूँ। यही नीति कहती है। क्षत्रियोचित धर्म भी यही पुकार रहा है और यही शूरवीरों का कर्तव्य भी है। मैं इस अधर्म को अपने सिर पर नहीं ओढ़ सकता। मैं क्या कोई भी स्वाभिमानी क्षत्रिय इस नीच प्रस्ताव को नहीं स्वीकार कर सकता।

ताहिर की बातों से माहिल झुंझुला उठा। वह खिन्न होकर पृथ्वीपति की ओर देखने लगा। दर्बार में सन्नाटा छा गया। बड़े-बड़े शूरवीर एक दूसरे का मुँह ताकने लगे। इसप्रकार दर्बार को उदास और शोकग्रस्त देख चौड़ा ने उठकर कहा— मैं स्त्री-वेष धारण कर महोबा शिविर में जाऊँगा और शत्रु का नाश कर चौहान की चिन्ता मिटाऊँगा। चौड़ा की बात सुन माहिल प्रसन्न हो धन्यवाद देता हुआ बोला—

सच्चे सेवक का यही लक्षण है। सेनापति चौड़ा ने अपनी कर्तव्य-परायणता का परिचय दिया है। जिसप्रकार हो सके स्वामी की भलाई करनी चाहिये। जो स्वामी के दुःख में काम न आये, जो अपने मालिक के लिये प्राणोत्सर्ग न करे अथवा जो

मन, वचन और कर्म से सेवा के लिये कटिबद्ध न रहे वह सच्चा सेवक नहीं है। हम महाबली चामुंडराय को धन्यवाद दिये बिना नहीं रह सकते। पिथौरा का दर्बार चौड़ा के धन्यवाद से गूँज उठा।

उसी क्षण चौड़ा ने कहा—मैं पालकी में बैठकर जाऊँगा। परन्तु मेरे साथ शरीर रक्षक बनकर कौन २ जायेंगे। वाहिर के बिना मैं नहीं जा सकता। यदि मेरा वार खाली जाय तो मेरे शरीर रक्षक एकाएक टूट पड़ें और ब्रह्मा का अन्त कर दें। वाहिर ने माहिल के बहुत कहने से इस प्रस्ताव को मान लिया।

शीघ्र तैयारी हो गई। चौड़ा स्त्री-वेष धारण कर पालकी पर चढ़, वाहिर बीस शूरों को लेकर साथ चला। आगे बढ़ते ही उसने एक सवार को ब्रह्मा के पास भेजा कि जाकर खबर दो। डोला आने की बात सुन वह फूल उठा। उसे अपार हर्ष हुआ। वह चौहानों की चाल नहीं समझ सका। तत्काल अकेला अगवानी के लिये चल पड़ा। मार्ग में ही डोला से भेंट हुई। ब्रह्मा तुरन्त घोड़े से उतर पड़ा। चौड़ा को अवसर मिल गया, वह पालकी से कूद पड़ा और खड़े हुये ब्रह्मा के बाम भाग में कटार भोंक दी। विष बुझी हुई पैनी कटारी शरीर में घुस गई। इसी समय वाहिर ने धनुष से एक तेज बाण चला दिया। वाहिर के धनुष से छूटा हुआ बाण ब्रह्मा के मस्तक में घुस गया। ब्रह्मा मूर्च्छित होकर धड़ाम से धरती पर

गिर पड़ा। इतने पर भी ताहिर ने एक भाला मारा जो दाहिने अंग में जा घुसा।

इधर धाँधू को यह समाचार मालूम हुआ। वह शीघ्र उस स्थान पर पहुँचा जहाँ चौंड़ा की डोली रक्खी थी और ब्रह्मा मूर्च्छित पड़ा था। यह अत्याचार देख धाँधू जल उठा। उसने फटकारते हुये कहा—चौंड़ा क्या यही वीरों का काम है? ताहिर! क्या इसी को क्षत्रीपन कहते हैं? मारे लज्जा के ताहिर और चौंड़ा का शीश झुक गया। दोनो तत्काल चल पड़े।

घंटों बीतने पर ब्रह्मा को न लौटते देख उसके शूर सामन्त खोजते हुये पहुँचे। अपने राजकुमार को रक्त से लथपथ तथा मूर्च्छित देख चन्देलों का हृदय दहल उठा। वे शोक से व्याकुल हो गये. युद्ध की चिन्ता उन्हें रह रहकर अधीर करने लगी।

—०—

वीर बाला—महाबली ब्रह्मा की मृत्यु का समाचार सुन बेला के दुःख का ठिकाना न रहा। वह ताहिर और चौंड़ा को बार २ धिक्कारती हुई विलाप करने लगी। अत्यन्त शोक-विह्वल

हो कुछ देरतक तो वह कुछ भी कर्तव्य निश्चित नहीं कर सकी। बेला के विलाप ने आल्हा देवी तथा अन्तःपुर की स्त्रियों को द्रवीभूत कर दिया।

पृथ्वीराज की पुत्री वीर वाला थी। कुछ देर तक शोक करने के उपरान्त उसे ज्ञानोदय हुआ। वह अपने पति के दर्शन के लिये अधीर हो उठी परन्तु यह कैसे हो सकता था? उसने तुरन्त आल्हा-ऊदल के पास एक पत्र भेजा। पत्र में कई शपथें दी गई थीं।

इधर ब्रह्मा के आहत होनेका समाचार महोवा में फैल गया। घर २ में शोक छा गया। बेला का पत्र आल्हा के पास पहुँचा। आल्हा-ऊदल तैयार हो गये, लाखन भी साथ चला। दिल्ली के धुरे पर पहुँचकर सभी ब्रह्मा के पास गये। ब्रह्मा घावों के मारे कराह रहा था। भाई को दुर्दशा देख, ऊदल की आँखों में आँसू छलछला आये। लाखन और आल्हा को भी कम दुःख न हुआ। परन्तु अब दुःख करने से क्या परिणाम निकलता। अतः परस्पर अग्रिम कार्यक्रम क्या होना चाहिये? इसपर विचार करने लगे।

सभी गौना लाने के लिये तैयार हो गये। डंका बजते ही लाखन और ऊदल का दल तैयार हो गया। दिल्ली के धुरे से सभी चल पड़े। पृथ्वीराज की सेना ने क्रुद्ध महोबियों को रोकना चाहा—परन्तु सफल नहीं हुये। ऊदल की सेना नगर के फाटक पर पहुँच गई।

प्रवल शत्रु को अति सन्निकट देख पृथ्वीराज ने हाथियों से काम लिया। बड़े २ मदमत्त हाथी एक साथ ही महोवियों पर झुक पड़े। ऊदल के सैनिकों ने बड़ी वीरता दिखाई। महोवा के बड़े २ दिग्गज आगे बढ़े और हाथियो का नाश करने लगे। कुछ ही देर में योद्धा, शूर, सामन्त, और सैनिकों की मार से दिल्लीश के जंगी हाथी चिंघारते हुये भाग चले।

हाथियों के हटते ही दिल्ली की सेना ने तीन ओर से आक्रमण किया। महोविये सतर्क थे। आगे की सेना को काटते हुये किले में घुस पड़े। बड़ी लड़ाई हुई। इस युद्ध मे दिल्ली के बड़े २ शूरवीर काम आये—हजारों घायल हो गये। मैदान ऊदल के हाथ मे आया। रणाँकुरा ऊदल ने बेला का गौना करा लिया। महोविये वीर डोला लेकर शिविर में लौटे।

ब्रह्मा अचेत पड़ा था—चौड़ा की कटारी कलेजे तक धँसी हुई थी। ताहिर के प्रहार से गहरी मूर्च्छा आ गई थी। ऊदल ने उसके निकट पहुँचकर पुकारा—उसी क्षण ब्रह्मा की आँख खुल गई। बेला उसके चरणों मे आ गिरी—ब्रह्मा को बड़ा विस्मय हुआ। वह भुवन मोहिनी अनिन्द्य सुन्दरी बेला की ओर देखने लगा। आल्हा-ऊदल, लाखन और ताल्हन वहीं बैठ गये।

ब्रह्मा कुछ देर तक बेला को देखता रहा—पश्चात् बोला—देवी तुम कौन हो? इसी बीच मे ऊदल ने गौने की बात कह

सुनाई। ब्रह्मा चुप हो रहा। त्रैलोक्य सुन्दरी बेला प्राणपति के निकट पहुँची और हाथ बाँधकर रोती हुई बोली—

प्राणनाथ! मैं आपकी दासी हूँ—मुझे सेवा करने की आज्ञा दीजिये। हाय! अत्याचारियों ने विश्वासघात किया—मुझे कहिये मैं क्या सेवा करूँ? उस सुन्दरी की बात सुन ब्रह्मा ने कहा—

ताहिर ने हमारे साथ विश्वासघात किया है। मैं चौंड़ा का उसी समय अन्त कर देता परन्तु ताहिर के बाण ने मुझे विवश कर दिया। ताहिर के मरने पर ही मुझे शान्ति मिलेगी। यदि तुम्हें सेवा करना स्वीकार है तो ताहिर का सिर ले आओ।

प्राणपति का आदेश सुन वीरबाला कुछ क्षण के लिये म्लान हुई, परन्तु तत्काल ही सैनिकों ने उसे रणचंडी के समान तेजपूर्ण हो जाते देखा। उस मृगलोचनी की आँखे प्रत्यक्ष अग्नि कील के समान दहक उठीं—वह एकाएक महोबिये धवलों से बोली—बहादुरों! मातृभूमि के सपूतों! आओ, मेरे साथ चलो—आज पतिहंताओं से बदला लूँगी देखो मेरी तलवार! दुरात्माओं के रक्त की प्यासी है—आज दिल्ली की रणस्थली विश्वासघाती चौहानों के रक्त से रंजित हो उठेगी—इतना कहते २ उसने तलवार म्यान से खींच ली।

राजकुमारी की बात सुन शूरों का खून खौल उठा। वे एकाएक गरजते हुये बोले—देवी! आप शांत रहें, हमलोग शत्रुओं का नाश किये बिना न छोड़ेगें। अपने राजकुमार का बदला

लेंगे—हमारी तलवारें, जिसने सहस्रों वीरों का रक्तपान किया है, आज इन शत्रु-चौहानों का रक्त पीकर अघायेगी। शूरो के इसप्रकार कहने पर भी बेला* अटल रही। वह तत्काल ब्रह्मा का भाला लेकर पास ही बंधे घोड़े पर जा चढ़ी और आगे बढ़ी।

महोबियों का दल तैयार हो गया। शूर सामन्त सिंहगर्जन करते हुये एक साथ चल पड़े। दिल्ली की सेना पराजित हो शोक सागर में डूब रही थी। इसी समय महोबियो ने किले पर आक्रमण किया। बेला अपने सामन्तों को ललकारती हुई आगे बढ़ रही थी।

दिल्ली की सेना ताहिर के सेनापतित्व में आ पहुँची। दोनों पक्ष के शूरमे प्राणों का मोह छोड़कर परस्पर भिड़ गये। वीर बाला रणचंडी के समान शत्रुओं का नाश करने लगी। महोबा वालों का उत्साह बढ़ गया।

अपनी रानी का रणकौशल देख वे अत्यन्त प्रसन्नतापूर्वक मारने और मरने के लिये शत्रुदल में पिल पड़े।

---

* पृथ्वीपति की पुत्री बेला का विवाह परमाल के बेटे ब्रह्मा के साथ हुआ था। गौने की लड़ाई में पति के घायल होने पर बेला ने स्वयं खड्ग धारण किया था। उसने अकेले पृथ्वीराज के बड़े २ शूर सामन्तों को मार गिराया था।

—जगनिक चरितावली

ताहिर और चौड़ा आगे बढ़े। वेला ने बड़े वेग से आक्रमण किया। दोनों में घंटों लड़ाई होती रही। इसी समय ताहिर ने क्रोधपूर्वक एक ऐसा खड्ग चलाया कि बेला की आस्तीन कट गई—चूड़ियाँ दिखलाई पड़ने लगीं।

चौड़ा पहचान गया, उसने कहा—ताहिर यह क्या ? यह तो बेला है। इसपर हाथ न चलाओ। इधर ताहिर के दुचित्ता होते ही बेलाने तलवार चलादी—महाबली ताहिर का शीश कटे हुये वृक्ष के समान पृथ्वीपर गिर पड़ा। बेला ने ताहिर के शीश को भाले की नोक मे खोस लिया। दिल्ली की सेना हाहाकार करती हुई भाग चली। विजयिनी बेला प्रतापी शूरों के साथ हर्ष-ध्वनि करती हुई शिविर मे पहुँची।

इस समय भी ब्रह्मा अचेतावस्था मे था। बेला के पुकारने पर उसने आँखें खोल दीं। बेला ताहिर के सिर को उसके सन्मुख ले जाकर बोली—प्राणनाथ ! उठिये, देखिये आपका विश्वासघाती शत्रु मारा गया। आप मेरी सेवा को स्वीकार कीजिये और कुछ कहिये—मैं करूँ।

ब्रह्मा ताहिर के शीश को कुछ देर तक देखता रहा—देखते ही देखते उसकी आँखों मे जल भर आये। उसने धीरे से कहा-प्रिये ! अब मैं विदा होता हूँ—हमारा तुम्हारा सम्बन्ध इतनाही था, तुम शोक न करो। प्रतिशोध मिल जाने से आत्मा शान्ति पावेगी ! तुम महोबा जाओ और राजकार्य देखो—प्रतापी ऊदल

तुम्हारी आज्ञा मानने के लिये तैयार रहेगा। इतना कहते २ ब्रह्मा की आँखें निश्चल हो गईं। सबों के देखते ही देखते उसकी आत्मा वीरलोक को चल बसी।

—०—

<u>बेला सती और ऊदल की मृत्यु</u>—ताहिर और ब्रह्मा के मरने से चौहानों और चन्देलों का वंश नाश हो गया। दिल्ली और महोबा में शोक के बादल छा गये। सर्वत्र उदासी फैल गई। प्रजा आँसू बहाने लगी।

महोबा की सेनायें अभी दिल्ली के धुरे पर ही डटी थीं। ऊदल ने बेला से महोबा चलने के लिये कहा। देवर की बात सुन वीरबाला ने कहा—अब महोबा में मेरा कौन है? मैं इसी धुरे पर पति के शव के साथ सती होऊँगी।

जब बहुत समझाने पर भी बेला अपनी प्रतिज्ञापर दृढ़ रही तो शव संस्कार की सभी सामग्रियाँ एकत्र की गईं। बेला बीच धुरे पर पहुँची। चन्दन की चिता लगाई जाने लगी। पृथ्वीराज भी सदल बल आ पहुँचे। महोबिये भी इधर डटे थे। बेला प्राणपति के शव को गोद में लेकर चिता पर जा बैठी और ऊदल से बोली कि चिता में आग लगा दो। इसी समय पृथ्वी-

राज ने कहा—नहीं ऊदल चिता में आग नहीं लगा सकता। यदि कोई चन्द्रवंश मेंसे होतो वह सामने आये और अन्त्येष्टि संस्कार करे। चन्द्रवंश में कोई बचा ही न था, कौन आता ?

ऊदल चिता की ओर बढ़ा। यह देख पृथ्वीराज ने अपने शूरों को आज्ञा दी कि ऊदल का सिर धड़ से पृथक कर दो। राजाज्ञा पाते ही सैकड़ो शूर टूट पड़े। दिल्लीश के सैनिकों को टूटते देख आल्हा ने भी अपने सामन्तों को आज्ञा दी कि दिल्ली वालों को को मार भगाओ।

युद्ध का श्रीगणेश हो गया। धीरे २ दोनों सेनायें भीम वेग से भिड़ गईं। भयंकर तलवारें चलने लगीं। चिता के आस-पास सहस्रो वीर लोट-पोट हो गये। पृथ्वी रक्त से लाल होने लगी।

इस समय चौड़ा* और ढेबा का बड़ा लोमहर्षण संग्राम हुआ। दोनों श्वसुर दामाद बड़ी देरतक युद्ध करते रहे। दोनों वीर और बहादुर थे, घंटों लड़ते रहे—अन्त मे ढेबा जूझ गया। ढेबा के गिरते ही जगनिक बढ़ा परन्तु चामुण्डराय ने उसे भी मार गिराया।

---

* चौड़ा की पुत्री का विवाह ढेबा के साथ हुआ था। कन्या का नाम चन्द्रकला था—इसी विवाह में जलदो की लड़ाई हुई थी।

—*Alha.*

इधर भूरा* ने बड़े वेगसे आक्रमण किया। लाखन ने सैयद ताल्हन से कहा—चाचा! भूरा हमारी सेना का नाश कर रहा है। इतना सुनते ही ताल्हन बड़े वेग से बढ़ा—भूरा भी आ भिड़ा। ताल्हन ने एक ही हाथ में भूरा का सिर काट लिया।

इतने में पृथ्वीराज का सेनापति वीर भुगन्तारायं† आ पहुँचा। ताल्हन से लड़ाई होने लगी। कुछ ही देर मे ताल्हन के प्रहार से क्रुद्ध हो उठा। उसने तत्काल धनुष पर एक अमोघ बाण रखकर चला दिया। विषधर बाण ताल्हन की छाती मे जा लगा। सैयद के गिरते ही लाखन ने गंगा को भेजा—महाबली गंगा ने बात की बात मे वीर भुगन्ता को मार गिराया।

वीर भुगन्ता के मरते ही पृथ्वीराज ने महाबली धाँधू को भेजा। पराक्रमी धाँधू आँधी के समान प्रलय करता हुआ महोबा के दल मे निडर घुस गया। गंगा ने उसे रोकने का प्रयत्न किया परन्तु सफल नहीं हुआ। वीर धाँधू ने एक ही हाथ मे गंगा का अन्त कर दिया। इस प्रकार महोबा को नाश करता हुआ धाँधू आगे बढ़ा।

---

* भूरा—पृथ्वीराज का सेनापति—

† वीरभुगंता—पैदल सेना का अधिनायक था—यह बड़ा वीर था-बड़े २ हाथियों और बिगड़े हुये शेरों के साथ लड़ता था।

धाँधू को अपनी सेना मे प्रलय मचाते देख लाखन आगे बढ़ा। दोनो बड़ी देर तक लड़ते रहे। दोनो ने खूब वाण-युद्ध किया, परन्तु कोई किसी को नहीं हटा सका। अन्त मे लाखन ने क्रुद्ध हो एक ऐसा गुर्ज चलाया कि धाँधू का मस्तक फट गया—वह आँधी से टूटे हुये शिखर खण्ड के समान भहरा कर हौदे से गिर पड़ा।

लड़ते २ दोपहर हो गया। भगवान भानु रणस्थली को संतप्त करते हुये मध्य नभ मे पहुंच गये। पृथ्वी जल उठी, उसी समय इधर रणाग्नि अट्टहास कर रही थी—और इधर आप ही आप चिताग्नि भभग उठी। देखते ही देखते चन्दन की लक-ड़ियाँ धाँय-धाँय करती हुई जलने लगीं—वेला प्रसन्न-मन स्वामी के सिर को गोद मे लेकर बैठी थी। धीरे धीरे अग्नि ने उस अनिन्द्य सुन्दरी के शरीर को पंचतत्वों मे मिला दिया।

तेजस्वी लाखन से अपनी सेना की दुर्दशा देख पृथ्वीराज स्वयं आगे बढ़े। दोनोके धनुष भयानक शब्द करने लगे। लाखन और पृथ्वीराज का हस्त-कौशल देख लोग दग हो रहे। दोनों रणबाँकुरे देरतक युद्ध करते रहे। वाणो से दिशायें पट गईं। लाखन ने अपने तीक्ष्ण वाणो से दिल्लीश को क्रुद्ध कर दिया। उन्होंने तत्काल एक अर्द्धचन्द्र वाण निकाला और अपने धनुष पर रखकर चला दिया। पृथ्वीराज का अमोघ वाण बड़े वेग से वायु को चीरता हुआ लाखन के शीश को अलग कर पृथ्वी में

धँस गया। वीर लाखन के गिरते ही कन्नौज दल में हाहाकार मच गया।

मित्र लाखन के मरते ही ऊदल की क्रोधाग्नि भड़क उठी—वह प्रलय के समान भयंकर हो उठा। उसकी हुंकार से बड़े र वीर दहल उठे। प्रतापी ऊदल शत्रुओ का संहार करता हुआ निर्भय चौहानों के दल मे घुस गया। अकेले कालरूप ऊदल ने प्रलय मचा दी। दिल्ली की विशाल वाहिनी हाहाकार करती हुई भाग खड़ी हुई। कोई वीर मोर्चे पर न डटा।

आज ऊदल का रूप बड़ा भयानक हो रहा था, पृथ्वीराजने भागे हुये शूरों को एकत्र कर पुनः युद्ध के लिये उत्तेजित किया। इसी समय स्वरक्षित सेना भी आ गई। परन्तु ऊदल का पराक्रम कम न था, वह अविराम शत्रुओ का नाश करता हुआ साक्षात यमराज बोध हो रहा था।

दिल्लीश ने चन्द कैमास और चामुण्डराय को बुलाकर कहा—वीरो अपने शूरो के साथ शीघ्र उस स्थान पर जाओ, जहाँ दच्छराज का पुत्र दहाड़ रहा है। जिसप्रकार वने उसे मार डालो अन्यथा आज उसके शस्त्र की ज्वाला से दिल्ली कि विशाल वाहिनी भस्म हो जायगी! दिल्लीश की आज्ञा पाते ही चन्द कैमास और चामुण्डराय चल पड़े। इन सबो ने बड़ी वीरता दिखलाई, परन्तु प्रतापी ऊदलने अकेले-अकेले की लड़ाई मे चन्द कैमास संयमराय, चामुण्डराय और निरढुराय आदि

दिल्ली के प्रसिद्ध वीरों को हरा दिया। यह देख चन्द कैमास और चामुण्डराय ने मिलकर उसे मार गिराया।

तीनों मिल के मारियो, रण जस राजकुमार।
मारे भट पृथुराज के, सिर बिनु एक हजार॥

महाबली ऊदल का अन्त हो गया। महोबा की सेना में शोक छा गया। दिल्ली वाहिनी जय-निनाद से दिशाओं को एक करती हुई शिविर में लौटी।

—*—

आल्हा का वैराग्य—महाबली प्रतापी ऊदल के गिरते ही शोक छा गया। महोबा के शूर सामन्त अपने प्राणप्यारे सेनानायक को शत्रुओं द्वारा छलपूर्वक धराशायी करते देख अधीर हो उठे। पराक्रमी ऊदल की आज्ञा पर प्राणोत्सर्ग करने वाले महावीर विह्वल हो रो पड़े। सारी सेना में हलचल मच गई। इन्दल विलाप करता हुआ आल्हा के पास चल पड़ा।

भाई के मरने का वृतान्त सुन आल्हा को अपार शोक हुआ। उनका वज्र-हृदय करुणा से ओतप्रोत हो गया। वे

अत्यन्त अधीर हो उठे। कुछ क्षण के लिये वे अनन्त शोक सागर में मग्न हो गये। इसप्रकार हा ऊदल! हा ऊदल! कहते हुये विलाप करने लगे।

पिता को इसप्रकार शोक विह्वल देख इन्दल ने कहा—पिता जी! चौहानों ने बड़ा अधर्म युद्ध किया है। चन्द कैमास चामुण्डराय ने मिलकर धोखे से चाचा को मारा है। चाचा ने अकेले-अकेले की लड़ाई मे सैकड़ों महारथियों, अश्वारोहियो और गजारोहियों को मार भगाया था। उनकी मार से चौहानो ने पीठ दिखलायी थी। पृथ्वीराज के प्रसिद्ध २ वीर उनके हाथ से मारे गये थे—दिल्लीश्वर का मोर्चा टूट गया था,—उत्तर धुरे की सेना हाहाकार करती हुई भाग खड़ी हुई थी। कैमास, संयमराय चामुण्डराय, निरदुराय और चन्द आदि महाबली एक नहीं सात २ बार पीठ दिखा चुके थे। दिल्ली की सेना मे कोई ऐसा वीर नहीं था जो धर्मयुद्ध द्वारा चाचा का सामना करता। चौहानों ने बड़ा अधर्म किया है—चाचा अत्याचारपूर्वक मारे गये हैं। चौड़ा आगे से लड़ता था, चन्द पीछे से प्रहार करता था और कैमास बगल से मार रहा था। अन्त मे चामुंडा ने चाचा को मार डाला।

इन्दल की बात सुन आल्हा का शोक जाता रहा। देखते ही देखते उनकी आँखें लाल हो उठीं। शान्तिप्रिय आल्हा प्रलयकाल के समान गरज उठा। उसकी बलिष्ठ भुजायें फड़क उठीं, उसने कड़कते हुये शोकमग्न महोबियो से कहा—वीरो! ऊदल के

लिये शोक न करो, उस महावीर ने वीरगति प्राप्त की है। युद्ध में लड़ते २ उसने प्राणोत्सर्ग किया है—अब वह वीरलोक में होगा। व्यर्थ शोक कर उसकी पवित्रात्मा को कष्ट न दो। आओ! अत्याचारी—नराधमो से प्यारे ऊदल का वदला लें। वीरों! उठो! अपनी २ तलवारें बांध लो और शीघ्र चौहानों का नाश कर दो।

आल्हा के इसप्रकार कहते ही वीरों मे प्रतिशोध की अग्नि भड़क उठी। सभी ऊदलका वदला लेने के लिये तैयार हो गये। सहस्रों बांके वीर प्राणोत्सर्ग के लिये कटिवद्ध हो रणस्थली मे कूद पड़े। आल्हा ने शीघ्र पंचशावद तैयार करने की आज्ञा दी।

जुझाऊ बाजा बज उठा। प्राणोत्सर्ग करने वाले प्रणवीरो का सिंहगर्जन प्रलयकालीन धुरबान के निर्घोष से आसमान गूंज उठा। महोबिये शूर पृथ्वी आकाश को कम्पित करते हुए चल पड़े। विजयोन्मत्त चौहान सामने ही डटे थे। मार मार करते हुये दौड़ पड़े। भयंकर धुरवानों के समान दोनों दल के वीर भिड़ गये।

महोबिये स्वाभाविक शूरवीर थे—जिसपर भी प्राणों की बाजी लगा कर लड़ रहे थे। उनका एकमात्र उद्देश्य प्रतिशोध लेना था। वे चुन २ कर चौहानों को मारने लगे। देखते ही देखते दिल्ली के सैकड़ों शूर सामन्त धराशायी हो गये।

महोबियो को कालरूप प्रलय करते देख चौड़ा आगे वढ़ा। संयमराय, कन्ह, कैमास और निरढुराय भी अपनी २ सेना

लेकर चल पड़े। यद्यपि इन वीरों ने बहुत रोका परन्तु उन्मत्त महोबियों के प्रवाह को नहीं रोक सके। उन बाँके वीरों की अन्धा धुन्ध तलवार चलती ही रही।

शत्रुओ को भयानक संग्राम करते देख दिल्लीश्वर स्वयं सेना लेकर चल पड़े। लाखों सैनिकों ने एक साथ ही महोबियों पर आक्रमण कर दिया। पृथ्वीराज की सभी सेनाओ ने चारो ओर से आक्रमण कर दिया। विशाल वाहिनी ने बनाफरों की सेना को घेर लिया। बाँके महोबिये वीर घूम २ कर चौहानों का नाश करने लगे।

परन्तु चौहान संख्या में कई गुणा अधिक थे। इस युद्ध में—स्वयं पृथ्वीराज ने बड़ा रणकौशल दिखलाया—उनके बाणों से दिशायें पट गईं तथा सहस्रों वीर कट कटकर गिरने लगे।

काले बादलों के समान शत्रु सेना से अपने को घिरे हुये देख आल्हा ने धनुष को उठा लिया और हाथी को सॉकड़ पकड़ा देने की आज्ञा दी। पंचशावद सांकड़ फेरता हुआ चौहानों के दल में घुस पड़ा। सांकड़ की मार से सहस्रों शूर बात की बात मे धराशायी होने लगे। प्रतापी आल्हा-अपने पैने बाणों से चौहानों का नाश करने लगा।

एक प्रहर तक बड़ी भयानक लड़ाई हुई। बनाफर के विषधर बाणों से सहस्रों शूरो के शरीर विद्ध हो गये। इस प्रकार लड़ते हुये उन्हें पुनः ऊदल की सुधि आ गई। वे एकाएक

सन्तप्त सूर्य के समान उद्दीप्त हो उठे और बड़े वेग से भ्रातृ-हंता चौड़ा की ओर बढ़े—

चौड़ा सामने ही डटा था। प्रतापी आल्हा ने उसे पकड़ कर हौदे से खींच लिया और निरन्तर प्रहारों से अधमरा कर डाला। आल्हा की मार से चौड़ा घबड़ा उठा। लाखों विपक्षी वीरों के रहते हुये आल्हा ने उसे अन्त में मार ही डाला।

चौड़ा के मरते ही कन्ह, कैमास और निरढुराय झुक पड़े। आल्हा ने बात की बात में पैने बाणों से सबों को मूर्च्छित कर दिया। प्रसिद्ध वीरों के मूर्च्छित होते ही स्वयं दिल्लीश्वर आ पहुँचे और आल्हा से युद्ध करने लगे। आल्हा ने पृथ्वीराज के शरीर को घावों से भर दिया। चौहानपति हौदे से लुढ़क कर पृथ्वी पर गिर पड़े।

प्रतापी आल्हा का आज पराक्रम देखा गया। उसने अकेले अकेले की लड़ाई में हजारों अश्वारोहियों और गजारोहियों का नाश कर दिया। फिर भी टिड्डीदल के समान सेना बढ़ती ही गई। शत्रुओं को इसप्रकार दृढ़ देख आल्हा ने शीघ्र भग-वती की पूजा के लिये स्वरक्षित खड्ग को म्यानसे बाहर निकाला। उस अमोघ खड्ग के तेज से सभी बलहीन और हतोत्साह हो उठे।

प्रतापी आल्हा एक बार गरज उठा। उसके सिंहगर्जन ने शूरवीरों को थर्रा दिया। उसकी हुंकार से रणस्थली गूँज उठी,

उसने देखते ही देखते उस अमोघ खड्ग से प्रहार करना आरम्भ कर दिया। क्षण मात्र मे ही पृथ्वी नर-मुंडों से पट गई।

सहसा एक आश्चर्य्यजनक घटना हो गयी। महातेजस्वी गोरख एकाएक रणभूमि मे आ पहुँचे और आल्हा को खड्ग म्यान मे रखने के लिये कहा।

महात्मा गोरख के उपदेश और भयंकर सर्वनाश से आल्हा के मन मे वैराग्य उत्पन्न हो गया। उसी समय वह अपने महाबली पुत्र इन्दल को लेकर गोरख के साथ चल पड़े। कुछ दिनो के बाद मालूम हुआ कि आल्हा कजरी बन में तपस्या कर रहे हैं।

रणभूमि का दृश्य भयानक वीभत्स हो उठा। कोसों मे वीरो की लाशे ही दिखलाई पड़ रही थी। युद्ध मे मरे हुये सहस्रो कुंजर टीले के समान जान पड़ रहे थे। पृथ्वी रक्त से गीली हो रही थी। दिशायें आहतों के कराह से व्याप्त हो रही थी। चील और कौवे मंडरा रहे थे, शृगाल भर पेट मांस खा खाकर चिल्ला रहे थे। रणस्थल महाभारत के समान भयानक बोध हो रहा था।

पृथ्वीराज भी घायल होकर रणभूमि मे मूर्छित पड़े थे—महाबली संयमराय भी वही पास ही घायल पड़ा था। इतने मे एक गिद्ध पृथ्वीराज के पास आ बैठा—वह उनकी आँखें निकालना ही चाहता था कि संयमराम की मूर्च्छा भंग

हुई। उसने अपन शरीर का मांस काटकाट कर गिद्ध का खिलाना आरम्भ किया।

युद्ध का सर्वनाशकारी हाल सुनते ही महोबा और दिल्ली मे हाहाकार मच गया। सभी हाय हाय करते हुये रणभूमि की ओर दौड़ पड़े। स्त्रियों, वालकों और प्रजा के करुण विलाप से वह भयानक रणस्थली सिहर उठी। सभी अपने २ पुत्र—पति, भाई श्वसुर और आदमियों को ढूंढने लगे।

इधर शरीर का मांस काटते २ संयमराय के शरीर से रक्त की धारा बहने लगी। परन्तु वह स्वामिभक्त अपने प्राणो की परवाह न कर बरावर गिद्ध को मांस दे रहा था। इतने में चन्द बरदाई के साथ दिल्ली के सैनिक पृथ्वीराज को ढूंढते हुये उस स्थान पर आ पहुँचे।

चन्द बरदाई पृथ्वीराज और स्वामिभक्त संयमराय को उठवाकर ले गया। ऊदल आदि की स्त्रियाँ सती हो गईं। महोवा और दिल्ली वीरो से रिक्त होगई। आपस की लड़ाई ने क्षत्रियों का नाश कर दिया। यदि यह महायुद्ध न होता तो आज भारत का इतिहास दूसरे ही रूप मे दिखायी देता।

पाठकों। महोवा का इतिहास यहीं पर समाप्त हो जाता है। यद्यपि परमाल ने कुछ दिनो तक शासन किया—परन्तु कोई प्रसिद्ध घटना नहीं हुई। इतिहास से पता चलता है कि महोवा को छोड़कर वह कालिंजर मे रहने लगा।

कुछ दिनों के बाद महम्मद गोरी का अन्तिम आक्रमण हुआ—प्रसिद्ध २ वीर पहले ही मारे जा चुके थे। वनाफरो ने क्षत्रिय राजाओं को निर्बल बना दिया था—कोई पृथ्वीराज की सहायता नहीं कर सके—केवल रावल समरसिंह ने १२ हजार सामन्तों के साथ मेवाड़ से सहायता दी। चन्दबरदाई के द्वारा पता चलता है—कि पृथ्वीराज के शत्रु जयचन्दने निमंत्रण देकर गोरी को बुलाया था।

सन् ११९३ मे थानेश्वर के मैदान मे, यवनों और आर्यों का भयानक संग्राम हुआ—जिसमे रावल समर सिंह ने हिन्दुत्व की रक्षा के लिये १२ सहस्त्र शूरों के साथ प्राणोत्सर्ग किया था। इसी जयचंद ने विधर्मियों की सहायता के लिये सहस्रो वीरों की आहुति दी। शोक! विद्वेष की भयंकर अग्नि ने भारत के चमकते हुये यशश्चन्द्र को भस्म कर दिया। दिल्ली पर यवनो का अधिकार हो गया। गोरी कुतबुद्दीन को अपना प्रतिनिधि नियुक्त कर लौट गया। सन् १२०३ ई० में उसने कालिंजर का सुप्रसिद्ध किला राजा परमाल के मंत्री से जीत लिया।

समाप्त

१—महाराणा प्रताप

जिस समय यवन साम्राज्य की अग्नि-ज्वाला मे समस्त देश धू-धू कर के विना रोक टोक के दग्ध हो रहा था,—भारत के विश्व विख्यात् राजा महाराजागण जिस समय अपनी मुकुट-मणियो को मुगल सम्राट् के पद-पद्मों मे निक्षेप करने में ही अपना गौरव समझते थे, महा-निति-निपुण मुगल सम्राट् अकबर, एक के बाद एक हिन्दू राज्य को हड़प करने में लग रहा था। ऐसा मालूम होता था कि यदि साम्राज्य लोलुप मुसलमानो की यही चाल बराबर जारी रही, तो शीघ्रही संसार में हिन्दू जाति का नामोनिशां तक मिट जायगा। सम्राट् अकबर ने उच्च अधिकारो का लालच देकर, अपनी अतुल शक्ति का आतंक दिखा कर-कुलीन राजपूतों की कन्याओं तक से विवाह करना शुरू कर दिया था। हिन्दू धड़ाधड़ मुसलमान हो रहे थे। उसी समय क्षत्रियकुल-मुकुटमणि महाराणा प्रताप का उदय हुआ था। समस्त देश के राजा महाराजा, मुगल सम्राट् की अधीनता स्वीकार कर चुके थे। उसी समय महाराणा प्रताप ने एक ऐसी हुंकार-ध्वनि की, कि समस्त देश कॉप उठा! मुगल सम्राट् का तख्त ताऊस हिल गया! रश्मियाँ पहुॅच कर डूबती हुई हिन्दू जाति को आश्वासन दे मुट्ठी भर साथियों को लेकर महाराणा प्रताप जीवन की अन्तिम घड़ी तक, हिन्दू जातिकी विजय-पताका को बराबर फहराते रखा। यह उन्हीं महामहिम महाराणा प्रताप का ओजस्विनी भाषा मे लिखा सचित्र जीवन चरित्र और इतिहास है। मूल्य १)

२—झाँसी की रानी

प्रातःस्मरणीया पूजनीया महारानी लक्ष्मी बाई को ऐसा कौन भारतीय है जो न जानता होगा। सन् १८५७ के स्वातन्त्र-युद्ध में इस वीराङ्गना ने किस महान साहस तथा वीरता के साथ गौरांग महाप्रभुओं की विशाल सेना का सामना करती हुई अनेकों बार उनके दाँत खट्टे किये और अन्त में अपनी प्यारी मातृभूमि के लिये लड़ते हुये युद्ध-क्षेत्र में स्वयं जल मरी; परन्तु पराधीनता को स्वीकार नहीं किया। इसका वर्णन आप को इस पुस्तक में अत्यन्त हृदय-विदारक तथा रोमाञ्चकारी भाषा में मिलेगा।

साथ ही—अङ्गरेजों की कूट-नीति, विश्वासघात, स्वार्थान्धता तथा राक्षसी अत्याचार देखकर आपके रोंगटे खड़े हो जायँगे। अङ्गरेजों की कुटिल एवं निन्दनीय शासन ने भारतवासियों को कितना दरिद्र बना दिया है, आदि विषयों का समावेश पूर्णरूप से इस पुस्तक में आपको मिलेगा। त्याग तथा देश-सेवा का भाव कूट-कूट कर भरा हुआ है। कायर पुरुष भी एक बार इस पुस्तक को पढ़कर जोश से उबल पड़ेगा। सचित्र पुस्तक का मूल्य २)

३—वीर बाला दुर्गावती

ऐसा कोई भारतवासी नहीं है जो वीर दुर्गावती को न जानता हो। इस वीर रानी ने कैसी वीरता से अपने देश की स्वतन्त्रता के निमित्त म्लेच्छों से युद्ध किया है और वीर गति को प्राप्त हुई है। इसका वर्णन इस पुस्तक में बड़ी ही सरल भाषा में किया गया है। सचित्र पुस्तकका मूल्य १॥)

माला की प्रकाशित पुस्तकें

१—जीवन-चरित्र

१) छत्रपति शिवाजी
१) पृथ्वीराज चौहान
१) महाराणा प्रताप
१।) अमर सिंह राठौर
१।) प्रतापी आल्हा और ऊदल
२॥) वीर दुर्गादास राठौर
२) झाँसी की रानी
१।) देश के दुलारे
१) हैदर अली
१) विद्रोही सरदार
१।) श्रीकृष्ण-चरित्र
१) वीर मराठा

२—उपन्यास

१॥।) रहमदिल डाकू
१॥) प्रेम का आसू
१।) देशभक्त संन्यासी
१) प्रेम का पुजारी
१॥) नदी में लाश
१) बहादुर नकाबपोश
॥।) अपराधी कौन
१।) प्यासी तलवार

३—हास्यरस

१।) महाकवि साँड़
१) लेखक की बीबी
१) मिस्टर तिवारी का टेलीफोन
१) मेरे राम का फैसला

४—स्त्रियोपयोगी

२) स्त्री-शास्त्र
॥।) वीर दुर्गावती
॥।) राजपूत-नन्दिनी
॥।) वीर बाला

५—नवयुवकोपयोगी

१॥) स्वास्थ्य और व्यायाम
१) मिश्र की स्वाधीनता का इतिहास
१।) सरल संस्कृत प्रवेशिका
१॥) मेवाड़ का इतिहास

६—धार्मिक

५) उपनिषत्समुच्चय
१।) अवतारवाद मीमांसा
॥।) शान्ति की ओर
।=) ऋषी दयानन्द का सत्य स्वरूप

मिलने का पता—

चौधरी एण्ड सन्स,

बनारस सिटी।